

30.00

Shawwal 1431

# मरयाम

परवर्तिश स्पेशल

माँ ऐसी होती है  
बच्चों की परवर्तिश  
बच्चों के साथ रसूल का बर्ताव

लड़कियों के राइट्स  
बच्चों की फ़र्स्ट-एड  
ईद रसूल की शादी

**Happy Eid**

# **GULSHAN**

**MEHANDI & HERBALS**

**IRFAN ALI PRADHAN**

403 & 404, A Block,  
REGALIA HEIGHTS, Ahmadabad Palace Road,  
KOHE-FIZA, BHOPAL ( M.P.) 462001.  
INDIA.  
+919893030792, +917554220261

**Mohtarma "GULSHAN"**

44, Ganesh Niwas,  
Shamla Hills Road,  
Near; AAKASHWANI  
BHOPAL ( MP )  
0755-4224261





एक साल

# ईद

के दिन

हज़रत अली<sup>310</sup> ने अपने खुतबे में फ़रमाया:-

आज का दिन खुदा ने तुम्हारे लिए ईद का दिन करार दिया है। इसलिए खुदा को याद करो ताकि वह तुम्हें याद करे। उसको पुकारो ताकि वह तुम्हें जवाब दे, और फ़ितरा अदा करो क्योंकि ये नबियों की सुन्नत है और तुम्हारे खुदा की तरफ़ से तुम पर वाजिब है। खुदा वन्दे आलम से दुआ है कि तक्वे के ज़रिए हम सब की हिफ़ाज़त करे और हमारी आरिख़रत को दुनिया से अच्छा बना दे।

एक दूसरे मौक़े पर ईद के दिन फ़रमाया:-

ऐ लोगो! ये वह दिन है जिसमें खुदा नेकी करने वालों को जज़ा देता है और बुरे लोग मायूस हो जाते हैं। क़यामत का दिन इस दिन से बहुत मिलता-जुलता है। इसलिए अपने घरों से निकल कर नमाज़े ईद में शिरकत के लिए जाने के ज़रिए अपनी क़ब्रों से निकलने और खुदा की तरफ़ जाने को याद करो, नमाज़ में खड़े होने के ज़रिए खुदा के हुज़ूर में खड़े होने को याद करो और फिर नमाज़ पढ़ के अपने घरों की तरफ़ जाते वक़्त जन्नत में अपने घरों की तरफ़ जाने को याद करो।

ऐ खुदा के बन्दो! रोज़ा रखने वाले मर्दों और औरतों को सब से छोटी चीज़ जो दी जाएगी वह ये है कि एक फ़रिश्ता माहे रमज़ान के आरिख़री दिन उन्हें आवाज़ देगा और कहेगा, "स्वबरदार! ऐ खुदा के बन्दो! तुम्हारे पिछले सारे गुनाहों को बरख़्श दिया गया है। इसलिए अब अपनी बाक़ी ज़िन्दगी की फ़िक़ करो कि उसे कैसे गुज़ारोगे।"

शेख़ सुदूक, मल्ला यहजुरुहुल फ़कीह, जिल्द-1, पेज-515-517



# मरयाम

September-October 2010

MARYAM

**Chief Editor**

S. Mohd. Hasan Naqvi

**Editorial Board**

Mohd. Fayyaz Baqir  
Akhtar Abbas Jaun  
Qamar Mehdi  
Ali Zafar Zaidi

**Managing Editor**

Abbas Asghar Shabrez

**Executive Editor**


Fasahat Husain

**Assist. Exec. Editor**

Mohd. Aqeel Zaidi

**Contributors**

Haider Abbas Rizvi  
Baqir Kazmi  
Azmi Rizvi  
Fatima

**Graphic Designer**
 Siraj Abidi
**Typist**

Sufyan Ahmad

**इस महीने आप पढ़ेंगी...**

ईद	8
पत्थर दिल वाले	11
कुछ बातें पैरेंट्स से	20
रसूल की शादी	14
बच्चे खाना खाने से क्यों कतराते हैं?	38
ऐसे होती है हिदायत	9
पड़ोसी	37
दीनी परवरिश	5
बच्चों की सेहत के उखूल	12
इन चान वीयान कब रों...	23
लड़कियों के राइट्स	18
मियां-बीवी की पहली जिम्मेदारी	17
बच्चों की परवरिश	24
बच्चों की बात सुनने में पहेल कीजिए	35
एहकाम	40
बच्चों के साथ रसूल का बर्ताव	28
मैं ऐसी होती हूँ	34
इमाम जाफरे सादिक <sup>रह</sup>	30
बच्चों की फर्स्ट-एड	27
कुछ बहुत जरूरी बातें	42
बच्चा बहुत शरीर है।	44
गांधी जी	47

**A Socio-Cultural & Religious Monthly Magazine**

पिछले महीने **मरयाम** का पहला इशू आपके सामने आया जिसको हमारी उम्मीदों से बढ़कर आपने सराहा। **मरयाम** के इस दूसरे इशू में हम ने अपने समाज के एक बहुत अहम सबजेक्ट को टव किया है और वह है **"बच्चों की परवरिश"**। बच्चों की परवरिश कैसे की जाए, क्यों की जाए, किस माहौल में की जाए, इस पर इस वक़्त सारी दुनिया में अपने-अपने तरीकों, फ़िक और आइडियोलोजी के एतेबार से बहुत ज़्यादा काम किया जा रहा है जिसका सिम्पल सा रीज़न ये है कि बच्चे किसी भी मुल्क, कौम, सोसाइटी या कल्चर का पयुवर होते हैं। इस बात को मारज़न सोसाइटीज़ अक्सी तरह समझ गई है लेकिन हमारे यहां अभी इस तरफ़ कोई बहुत ज़्यादा ध्यान नहीं दिया गया है।

**मरयाम** का ये इशू इसी तरफ़ कुछ करने, कुछ समझने-समझाने और आगे बढ़ने की सिर्फ़ एक कोशिश है। इस कोशिश में हम कितने कामयाब हुए हैं ये तो आप ही हमें बताएंगी।

पहले यानी पिछले इशू के बाद जिस तरह **मरयाम** को आपका प्यार और मुहब्बत मिली और जिस खुले दिल से आपने **मरयाम** को गले लगाया, उसने हमारी हिम्मतों, हमारे हौसलों और जोश को बेतहाशा बढ़ा दिया है। हमें उम्मीद है कि आपकी ये मुहब्बत और ये प्यार **मरयाम** को रूँ ही मिलता रहेगा...

हम **मरयाम** की पूरी टीम की तरफ़ से आपको और आपकी पूरी फैमिली को ईद की मुबारकबाद पेश करते हैं और खुदा की बारगाह में दुआ करते हैं कि वह ईद की खुशियों को रूँ ही दायम-कायम रखे।

'मरयाम' में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामन्दी हो, यह ज़रूरी नहीं है।

'मरयाम' में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कारवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और 'मरयाम' में छपे लेख और तस्वीरें 'मरयाम' की प्रॉपर्टी हैं।

इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले 'मरयाम' से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। 'मरयाम' में छपे किसी भी कॉन्टेंट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कारवाई प्रकाशन तिथि से 3 महीने को अंदर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी तरह की पूछताछ और कारवाई पर हम ज़वाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।

संपादक 'मरयाम' के लिए आने वाले कॉन्टेंट्स में ज़रूरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer & publisher Nazam Abbas Rizvi printed at imagine Graphix, narula Mention, Lalbagh, Lucknow and published from 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017, 9453826444, email: maryammonthly@gmail.com



# बच्चे, दीनी तालीम और दीनी परवरिश



## बच्चे और दीनी तालीम

कुरआनी तालीमात की रौशनी में यह बात साबित होती है कि हर बच्चा पैदाइशी तौर पर खुदा परस्त होता है लेकिन अगर दूसरी चीज़ें अपना असर दिखाने लगे तो सूरत बदल जाती है जैसा कि रसूले इस्लाम ने फरमाया है, “हर बच्चा इस्लाम की फितरत पर पैदा होता है मगर उसके बाद उसके माँ-बाप उसे यहूदी, ईसाई या मजूसी बना देते हैं।”<sup>(1)</sup>

हर माँ-बाप की ज़िम्मेदारी है कि वह अपने बच्चे के लिए ऐसा माहौल पैदा करें कि जिसमें उसकी फितरत और नेचर में मौजूद अक़ीदे पनप सकें। इन्सान बचपन ही से एक ऐसी ताक़त को तलाश करता रहता है जो उसकी ज़रूरतों को पूरा कर सके लेकिन उसकी समझ अभी इतनी नहीं होती कि वह अपनी इस तलाश और तवज्जोह को बयान कर सके लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता ये तवज्जोह ज़ाहिर हो जाती है। जो बच्चा एक मज़हबी घराने में परवरिश पाता है वह कोई चार साल की उम्र में खुदा को जानने-पहचानने लगता

है और यही वह उम्र है जिसमें बच्चे के ज़ेहन में तरह-तरह के सवाल उभरने लगते हैं। कभी-कभी वह खुदा का नाम भी ज़बान पर लाता है। उसके सवालों और बातों से मालूम होता है कि उसकी फितरत एक्टिव हो चुकी है और वह इस सिलसिले में ज़्यादा जानकारी इख़ट्ठा करना चाहता है।

बच्चा सोचता है:-

सूरज को किसने बनाया है?

चांद-तारे किसने पैदा किए हैं?

क्या खुदा मुझ से प्यार करता है?

क्या खुदा मीठी चीज़ें पसन्द करता है?

पानी कौन बरसाता है?

मम्मी को किसने पैदा किया है?

क्या अल्लाह हमारी बातें सुनता है?

क्या टेलीफ़ोन के ज़रिए खुदा से बातें की जा सकती हैं?

खुदा कहाँ रहता है?

उसकी शक्ल किस तरह की है?

क्या खुदा आसमान पर है?

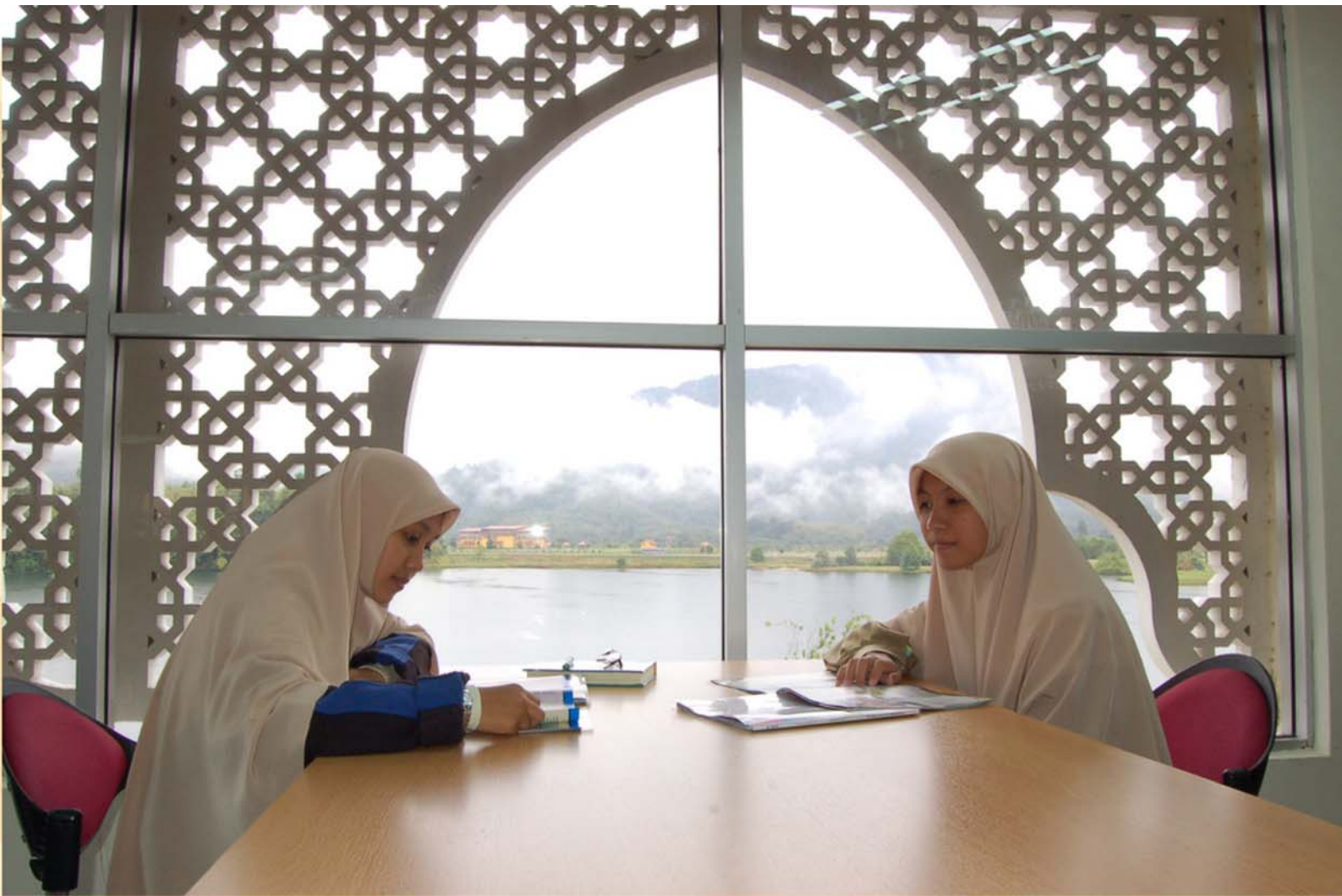
चार साल के बाद बच्चा इस तरह के हज़ारों

सवाल करता और सोचता है।

इन सवालों से साफ़ हो जाता है कि उसकी खुदा परस्ती वाली फितरत बेदार हो चुकी है और वह ये बातें पूछ कर अपनी मालूमात मुकम्मल करना चाहता है। पता नहीं, नन्हा-मुन्ना बच्चा खुदा के बारे में क्या तसक्कुर रखता है। शायद वह सोचता है कि खुदा उसके डैडी ही की तरह है लेकिन उन से बड़ा और ज़्यादा ताक़तवर है। बच्चे की समझ जितनी बढ़ती जाती है, खुदा के बारे में उसकी पहचान और जानकारी भी बढ़ती जाती है।

माँ-बाप पर इस बारे में बहुत भारी ज़िम्मेदारी आती है। वह अपने बच्चों के अक़ीदों को मज़बूत और मुकम्मल करने में बहुत ख़ास रोल अदा कर सकते हैं और ये इतना अहम रोल है कि इस बारे में अगर उन्होंने कोई ढील की तो क़यामत में उन से सवाल किया जाएगा। माँ-बाप को चाहिए कि बच्चे के सारे सवालों के जवाब दें अगर उन्होंने ऐसा नहीं किया तो बच्चे की क़िएटिविटी और रिसर्च का शौक़ मर जाएगा लेकिन बच्चे के सवालों का जवाब देना कोई आसान काम नहीं है। कोई भी जवाब हो वह सही, छोटा और बच्चे की समझ में आने वाला होना चाहिए। बच्चे की समझ जितनी बढ़ती जाए उतना ही जवाब भी तफ़्सीली और गहराई से दिया जाना चाहिए। ये काम हर माँ-बाप नहीं कर सकते। इसके लिए ज़रूरी है कि वह पहले से इसके लिए तैयारी करें। ज़्यादा गहरे और पेचीदा मतलब बयान न करें क्योंकि ये न सिर्फ़ बच्चे के





लिए फ़ाएदेमन्द नहीं होंगे बल्कि समझ में न आने वाले और परेशान करने वाले भी होंगे। छोटा बच्चा मुश्किल बातों को नहीं समझ पाता इसलिए उसके नेचर, समझ और सलाहियत के मुताबिक उसे दीनी तालीम दी जाना चाहिए।

इमाम सादिक<sup>30</sup> फ़रमाते हैं, “बच्चा 3 साल का हो जाए तो उसे “ला-इला-ह इल लल्लाह” सिखाओ, फिर उसे छोड़ दो। जब उसकी उम्र तीन साल सात माह और बीस दिन हो जाए तो उसे “मुहम्मदुर रसूलुल्लाह” याद करवाओ। फिर चार साल तक उसे छोड़ दो। जब चार साल का हो जाए तो उसे पैगम्बरे खुदा पर दुरुद भेजना सिखाओ।<sup>(2)</sup>

बच्चों को छोटे-छोटे और आसान से दीनी अशआर याद करवाना उनके लिए जहां फ़ाएदेमन्द है वहीं मज़ेदार चीज़ भी होती है। इसी तरह उन्हें आहिस्ता-आहिस्ता नुबुव्वत और इमामत के बारे में बताया जाए। पहले रसूलुल्लाह<sup>30</sup> के बारे में बताना चाहिए कि खुदा ने उन्हें नबी बनाकर भेजा है ताकि वह हमें सीधा रास्ता दिखा सकें और हिदायत कर सकें। फिर आपकी कुछ खुसूसियतें और कुछ वाकिए बताए जाएं। उसके बाद दूसरे नबियों के बारे में बताया जाए। इसके साथ ही नुबुव्वत की ज़रूरी-ज़रूरी शर्तों की जानकारी भी

उन्हें दी जाए और ऐसे ही इमामत के बारे में भी समझाया जाए। छोटे-छोटे वाक़िआत के ज़रिए कहानी की सूरत में प्यार से ये बातें की जाएंगी तो बहुत असर होगा।

हाँ, क़यामत के बारे में बच्चा जल्दी कुछ नहीं समझ पाता। वह सोचता है कि वह और उसके माँ-बाप हमेशा यूँ ही ज़िन्दा रहेंगे। मरने को वह एक लम्बे सफ़र की तरह देखता है। जब तक बच्चा मौत की तरफ़ मुतवज्जेह न हो, ज़रूरी नहीं है बल्कि शायद मुनासिब भी नहीं है कि उस से इस बारे में बातचीत की जाए। हाँ, कभी कभी न चाहते हुए भी ऐसे वाक़िए पेश आ जाते हैं कि माँ-बाप को मजबूरन उनके सामने मौत की हकीकत के बारे में कुछ इज़हार करना पड़ जाता है। मुमकिन है किसी रिश्तेदार, दोस्त या जान पहचान वाले शख्स की मौत बच्चे को सोचने पर मजबूर कर दे। जैसे खुदा न ख़्वास्ता बच्चे के दादा का इंतक़ाल हो जाए और वह पूछे कि मम्मी! दादा जान कहाँ चले गए?

ऐसे मौके पर बच्चे को हकीकत बता देना चाहिए, झूठ नहीं बोलना चाहिए। बच्चे से ये कहा जा सकता है कि तुम्हारे दादाजान का इंतक़ाल हो गया है और वह दूसरी दुनिया में चले गए हैं। हर मरने वाला उस दुनिया में चला जाता है। अगर

कोई नेक हुआ तो जन्नत के ख़ूबसूरत बाग़ों में खुश रहेगा और अगर कोई बुरा हुआ तो जहन्नम की आग में अपनी सज़ा भुगतेगा। बच्चे को मौत के ये मायने भी धीरे-धीरे समझाए जाएं कि ये एक दुनिया से दूसरी दुनिया की तरफ़ का सफ़र है। उसे जन्नत, दोज़ख़, हिसाब किताब और क़यामत के बारे में आसान ज़बान और छोटे-छोटे अल्फ़ाज़ में बताया जाना चाहिए।

अक़ाएद के सिलसिले में बच्चों की परवरिश का ये सिलसिला प्राइमेरी, हाई और फिर बाद तक के लेविल तक जारी रहना चाहिए।

### बच्चा और दीनी परवरिश

ये दुरुस्त है कि लड़का पन्द्रह साल की उम्र और लड़की नौ साल की उम्र में बालिग़ और मुकल्लफ़ होते हैं और शरई अहक़ाम उन पर लागू हो जाते हैं। लेकिन दीनी फ़रीज़ों के अन्जाम देने को बालिग़ होने तक टाला नहीं जा सकता। बच्चे को बचपन ही से इबादत और दीनी फ़रीज़ों को अन्जाम देने की आदत डालना चाहिए ताकि बालिग़ हो तो उसे शौक़ से बजा लाए। खुश किस्मती से एक मज़हबी घराने में परवरिश पाने वाला बच्चा तीन साल की उम्र ही से अपने माँ-बाप की नक़ल में कुछ मज़हबी काम बजा लाने लगता है। कभी उनके लिए जा-नमाज़



बिछाता है, कभी उनके साथ सजदे में जाता है, अल्लाहु अक्बर और ला-इला-ह इल लल्लाह कहता है, छोटे-छोटे मज़हबी अशआर मज़े से पढ़ता है। फ़र्ज़ शनास और समझदार माँ-बाप बच्चे की इन फितरी हरकतों को सही रख देकर उसकी बेहतरीन दीनी परवरिश करते हैं। उसके इन छोटे-छोटे कामों पर मुस्कुरा-मुस्कुरा कर और अपनी खुशी का इज़हार करके उसका हौसला बढ़ाते हैं। अगर ज़बरदस्ती ये चीज़ें बच्चे पर थोपी न जाएं तो क्या कहना, ये तो बहुत ही फ़ाएदेमन्द है। इस उम्र में माँ-बाप को बच्चे को सिखाने और नमाज़ पढ़ाने वगैरा जैसे कामों में बिल्कुल जल्दी नहीं करना चाहिए और न ही बच्चे पर कोई दबाव डालना चाहिए। पाँच साल की उम्र के करीब बच्चा सूरए फ़ातेहा जैसे सूरों को याद कर सकता है। आहिस्ता-आहिस्ता याद करवाना शुरू कीजिए और फिर सात साल की उम्र में उसे बाक़ाएदा हुक्म देकर नमाज़ पढ़वाईए। अबले वक़्त में खुद भी नमाज़ पढ़िए और बच्चों को भी इसकी नसीहत कीजिए और आदत डलवाईए। बच्चे को समझाईए कि नमाज़ हर हालत में पढ़ना है चाहे सफ़र में हो या अपने घर पर। बच्चा अगर अमल न करे तो सख़्ती भी कीजिए और इस सिलसिले में कोई ढील मत छोड़िए। अगर माँ-बाप खुद नमाज़ी हों तो आहिस्ता-आहिस्ता बच्चों को भी उसका आदी बना सकते हैं और फिर वह बालिग़ होते होते अपने आप शौक से नमाज़ पढ़ने लगेंगे। अगर माँ-बाप ने ये मान लिया कि बच्चा अभी छोटा है, बालिग़ नहीं हुआ है और इस पर नमाज़ अभी फ़र्ज़ नहीं हुई है, इसलिए उसे कुछ न कहें तो फिर बालिग़ होकर बच्चे के लिए नमाज़ पढ़ना मुश्किल होगा क्योंकि जिस काम का इन्सान बचपन में आदी न हो सके, बड़ा होकर भी उसे वह काम करना मुश्किल होगा। यही वजह है कि पैग़म्बरे इस्लाम<sup>१</sup> और हमारे इमामों ने छः या सात साल की उम्र में बच्चे को नमाज़ पढ़ने का आदी बनाने का हुक्म दिया है।

इमाम बाकिर<sup>२</sup> फ़रमाते हैं, “हम अपने बच्चों को पाँच साल की उम्र में नमाज़ पढ़ने के लिए तैय्यार करते हैं और सात साल की उम्र में उन्हें नमाज़ पढ़ने का हुक्म देते हैं।<sup>(३)</sup>

पैग़म्बर<sup>३</sup> ने फ़रमाया है, “जब तुम्हारे बच्चे छः साल के हो जाएं तो उन्हें नमाज़ पढ़ने का हुक्म दो और सात साल के हो जाएं तो उनपर इसके लिए ज़्यादा जोर दो और अगर ज़रूरत हो तो मारपीट से भी उन्हें नमाज़ पढ़वाओ।<sup>(४)</sup>

इमाम सादिक<sup>५</sup> ने फ़रमाया है, “जब बच्चा सात साल का हो जाए तो उससे कहो कि मुँह हाथ

धोए और नमाज़ पढ़े लेकिन जब नौ साल का हो जाए तो उसे सही और मुकम्मल वुजू सिखाओ और सख़्ती से नमाज़ पढ़ने का हुक्म दो।<sup>(५)</sup>

इमाम सादिक<sup>५</sup> ही ने फ़रमाया है, “जब बच्चा छः साल का हो जाए तो ज़रूरी है कि वह नमाज़ पढ़े और जब वह रोज़ा रख सकता हो तो ज़रूरी है कि वह रोज़ा रखे।”

रोज़े के मामले में बच्चे को आहिस्ता आहिस्ता आदत डलवानी चाहिए। जो बच्चा तमीज़दार हो जाए और चीज़ों को समझने लगे तो उसे सहरी के लिए जगाया जाए ताकि वह नाश्ते की जगह सहरी खाए और इसका आदी हो जाए। जब बच्चा रोज़ा रख सकता हो तो ज़रूरी है कि उसे इसके लिए तैय्यार किया जाए और अगर वह रोज़ा रख कर उसे पूरा न कर पा रहा हो तो दिन के बीच ही में कुछ खाने पीने को दिया जा सकता है। आहिस्ता-आहिस्ता उसके रोज़ों की तादाद बढ़ाई जाए लेकिन उसके जिस्म और ताक़त का ख़याल ज़रूर रखा जाए। बच्चा बालिग़ हो जाए तो उससे कहा जाए कि तुम पर फ़र्ज़ है कि रोज़ा रखो और नमाज़ पढ़ो। अगर तुम ने ऐसा न किया तो गुनाहगार हो जाओगे। बेहतर ये है कि उसे रोज़े की फज़ीलत और सवाब भी बताया जाए ताकि उसमें बर्दाश्त करने की ताक़त बड़े। रमज़ानुल मुबारक के आखिरी दिनों में बच्चे की दूसरी ज़िम्मेदारियों और कामों में कमी की जाना चाहिए ताकि वह आराम से रोज़ा रख सके। रमज़ानुल मुबारक के आखिर में उसे इनाम के तौर पर भी कुछ दिया जाना चाहिए। दिन में ध्यान रखिए कि कहीं वह छुपछुपा कर रोज़ा न तोड़ ले।

ये भी ज़रूरी है कि माँ-बाप लड़के के बालिग़ होने से पहले-पहले उसे एहतेलाम के बारे में और लड़की को पीरियड्स के बारे में जानकारी दें, गुस्ल कैसे किया जाता है और इस्तेन्जा किसे कहते हैं, ये भी बताएं।

इस का भी ध्यान रहे कि अगर माँ-बाप की ख़्वाहिश है कि उनके बच्चे मस्जिद में आने जाने और दीनी प्रोग्रामों के शौकीन बनें तो फिर बचपन ही से उन्हें इसका आदी बनाएं। मस्जिद और दीनी प्रोग्रामों में उन्हें अपने साथ ले जाया करें ताकि उनमें भी इसका शौक पैदा हो जाए वरना बड़े होकर वह शौक से ऐसे प्रोग्रामों में नहीं जाया करेंगे। आखिर में इस बात की तरफ़ ध्यान भी ज़रूरी है कि बच्चा बालिग़ होने से पहले

मुकल्लफ़ नहीं होता यानी मज़हबी फ़रीज़े उस पर लागू नहीं होते और उन्हें छोड़ने पर उसे गुनाह नहीं होगा। मगर इसका मतलब ये नहीं है कि माँ-बाप बच्चों को बालिग़ होने से पहले-पहले आज़ाद छोड़ दें कि वह जो चाहें करते फ़िरें। अगर नमाज़ रोज़ा उन पर वाजिब न भी हो तो ये तो नहीं हो सकता कि वह किसी के भी घर का शीशा तोड़ आएँ, किसी को भी चोट पहुँचा दें, किसी का कान काट दें, आँख फोड़ दें या हाथ तोड़ डालें और अगर उन्होंने ऐसा कर दिया तो वाजिब है कि बालिग़ होकर उसकी शर्ई दियत अदा करें यानी जिसका नुक़सान किया है उसकी भरपाई करें।

दूसरी तरफ़ अगर आज़ाद छोड़ दिया जाए कि जो उसके जी में आए करे तो फिर बड़ा होकर भी वह गुनाह और ग़लत कामों का आदी ही बना रहेगा क्योंकि बालिग़ होकर फिर वह बचपन की आदतें नहीं छोड़ सकता। इसलिए ज़रूरी है कि माँ-बाप उसे बचपन ही से वाजिब और हaram कामों के बारे में बाक़ाएदा जानकारी दें। हaram कामों को करने से रोकेँ और वाजिब कामों को करने में उसकी मदद करें। ●

१- बिहार, जि-३ पे-२८१, २- मकारिमुल अख़लाक़, जि-१ पे-२५४, ३- वसाएल, जि-३ पे-१२, ४- मुस्तदरक, जि-१ पे-१७१, ५- वसाएल, जि-३ पे-१३







# Happy Eid

## ईद

आयतुल्लाह खामेनई

**म**ाहे रमज़ान अपनी सारी अज़मतों और रहमतों के साथ ख़त्म हो गया और पूरी दुनिया के मुसलमानों ने इस महीने में रोज़ों, दुआ, इबादत और कुरआने मजीद की तिलावत की बरकत से अपने दिलों को और मुनव्वर और खुदा से करीब कर लिया।

ईद एक बहुत बड़ा त्योहार है जिसे सारी इस्लामी दुनिया मनाती है। आज के दिन को खुदा ने मुसलमानों के लिए ईद करार दिया है। हमें इस आसमानी तोहफ़े से भरपूर फ़ाएदा उठाना चाहिए, अपने दिलों में मारेफ़त, तौबा और इस्तेग़फ़ार के नूर को फैलाकर सही मायने में हकीकी फ़ाएदा भी उठाना चाहिए। अगर मारेफ़त और इश्क़े इलाही की दुनिया की एक हल्की सी किरन भी हमारे दिलों पर पड़ जाए और हमारा वुजूद नूरानी हो जाए तो बाहर की दुनिया के बहुत से अंधेरे अपने आप दूर हो जाएंगे क्योंकि ये इन्सानों का दिल ही है जो सारी अच्छाईयों और बुराईयों की जड़ है।

हज़रत अली ने ईद के दिन लोगों के सामने एक ख़ुतबा दिया और उसमें यूँ बयान फ़रमाया, “ऐ लोगो! ये वह दिन है जिसमें नेक काम करने वालों को उनकी नेकियों का सवाब मिलेगा और जिन लोगों ने माहे रमज़ान में बुराईयाँ की हैं, वह घाटा उठाएंगे और महरूम रहेंगे।”

ईद यानी साल का वह दिन जो खुशियाँ लेकर आए। सवाल ये है कि कौन सी चीज़ मुसलमानों के लिए खुशियाँ लेकर आ सकती

है? जिसका जवाब इसके अलावा और कुछ नहीं हो सकता कि इस्लाम जो मुसलमानों से चाहता है अगर मुसलमान उसे पूरा कर दें तो यही असली ईद है और इसी से एक सच्चे मुसलमान की ज़िन्दगी में खुशियाँ आ सकती हैं।

ईद का दिन पाकीज़गी का दिन है। हो सकता है कि ये पाकीज़गी इस वजह से हो कि आपने एक महीने तक रोज़े रखे हैं और अपने आपको बुराईयों से पाक किया है या इस वजह से भी हो सकती है क्योंकि इस दिन इबादत के मैदान में हाज़िर होकर आपने एक सोशल इबादत में हिस्सा लिया है। बहरहाल बात ये है कि मुसलमान, माहे रमज़ान के बाद, ईद के दिन तहारत और पाकीज़गी के मैदान में होता है।

ईद का दिन वह दिन है जब मुसलमान, माहे रमज़ान के एक ख़ास इम्तिहान से गुज़र कर खुदा के हुज़ूर में हिसाब-किताब के लिए बैठते हैं और माहे रमज़ान के अपने आमाल को अपने परवरदिगार के हुज़ूर में पेश करते हैं।

ईद की मुबारकबाद, माहे रमज़ान को कामयाबी के साथ पूरा करने की मुबारकबाद के मायने में है। ईद, दुनिया के एक अरब मुसलमानों के ज़ंशन और खुशियों का दिन है। ईद, इबादत की ईद है, मग़फ़िरत की ईद है, एक मोमिन मुसलमान के लिए इबादतों के छोटे से लम्हे के ख़त्म होने की ईद है कि जो अपनी इन इबादतों से अपनी रूह को पाक करना और अपने अन्दर नेक ज़ज़्बात और पाकीज़गी को बढ़ाना चाहता है और फिर साल भर बल्कि पूरी उम्र उस से फ़ाएदा उठाना चाहता है।

### सच्ची ईद

हज़रत अली फ़रमाते हैं, “आज हकीकी ईद है मगर सिर्फ़ उसके लिए जिसके रोज़े, नमाज़ और इबादत को अल्लाह ने माहे रमज़ान

में कुबूल कर लिया हो और हर वह दिन जिसमें गुनाह न किया जाए, ईद का दिन है।”

अज़ीज़ो! गुनाह न करके और हराम कामों से बच के आज, कल बल्कि साल के हर दिन को अपने लिए ईद बना लीजिए।

ईद का दिन, खुदा की इबादत और उस से करीब होने का दिन है। खुदा ने इस महीने के आख़िर में एक ऐसा दिन रखा है जो ईद का दिन हो, समाज का दिन हो, बहुत बड़ा दिन हो, मुसलमान भाई-बहन एक दूसरे को मुबारकबाद पेश करें, माहे रमज़ान में हासिल होने वाली कामयाबी और तौफीक़ की क़द्र करें, अपने आमाल की जाँच-पड़ताल करें, जो कुछ इस मुबारक महीने में उनके लिए जमा हो चुका है उसे अपने लिए बचा के रखें। अगर ऐसा हो जाए तो ये दिन, ईद का दिन है।

एक ऐसे इन्सान को, जो पूरे साल अलग अलग तरह के गुनाहों और बुराईयों में घिरा रहा हो और जिसने नफ़सानी ख्वाहिशों और बुरी आदतों की वजह से अपने आपको खुदा की रहमत से दूर कर लिया हो, उसे खुदा की तरफ़ से हर साल एक सुनहरा मौक़ा अता किया जाता है और वह मौक़ा माहे रमज़ान है। माहे रमज़ान में दिल नर्म हो जाते हैं, रूह में ताज़गी आ जाती है, इन्सान खुदा की ख़ास रहमत के मैदान में क़दम रखने के लिए तैयार हो जाता है और हर एक अपनी सलाहियत और कोशिशों के मुताबिक़ आसमानी दस्तरख़्वान से फ़ाएदा उठाता है। माहे रमज़ान के ख़त्म होते ही नये दिन की शुरुआत, ईद का दिन यानी वह दिन जिस दिन इन्सान माहे रमज़ान में हासिल किए गए नतीजों को सामने रख कर खुदा के सीधे रास्ते पर चलने के लिए तैयार हो सकता है और ग़लत रास्तों से बच सकता है।

ईद अगर ईद है तो इबादत और खुदा से करीब होने का भी दिन है। ये दिन नमाज़ से शुरु होता है और दुआओं पर ख़त्म होता है। इस दिन की क़द्र कीजिए, तक्वे को ग़नीमत जानिए और ईद की अहमियत को समझिए।



# ऐसे होती है हिदायत

■ नफीसा

मेरी पैदाइश चेक रिपब्लिक में हुई थी और रोमन कैथोलिक चर्च में मेरी मज़हबी रस्में पूरी हुई थीं। मेरी फैमिली कोई मज़हबी फैमिली नहीं थी और न ही हम लोग दीन पर अमल करते थे। हों इतना ज़रूर है कि हम सब का खुदा पर ईमान ज़रूर था।

अभी मैं सिर्फ 14 साल ही की थी कि मेरी माँ का इन्तेक़ाल हो गया। चार साल के बाद अपनी नौजवानी ही में मैंने शादी कर ली थी जिस से मेरा एक बेटा भी है लेकिन मेरी शादी कामयाब नहीं हो सकी। शादी का ये फैसला मेरी ज़िन्दगी के बुरे फैसलों में से एक था।

मेरे पापा ने हमेशा यही कोशिश की थी कि मेरी अच्छी से अच्छी परवरिश हो जाए। मम्मी के इन्तेक़ाल के बाद पापा नशे के आदी हो गये थे। मैंने उनकी ये आदत छुड़ाने की बहुत कोशिश की लेकिन नहीं छुड़ा पाई। उनकी इस आदत की वजह से मेरी उनके साथ बहुत सी झड़पें भी हुई थीं लेकिन सब बेकार, वह नशा नहीं छोड़ सके। फिर भी मुझे अपने पापा से मुहब्बत थी और मुझे पता है कि वह भी मुझ से मुहब्बत करते थे और मेरे बेटे से भी उनको प्यार था।

बदकिस्मती से एक भयानक दिन वह भी आया जब मेरे पापा भी इस दुनिया में मुझे अकेला छोड़कर चले गए। जज़्बात पर काबू न पाने की वजह से मैं फूट-फूट कर रो पड़ी। मेरा दिल टुकड़े-टुकड़े हो गया था। मैं खुदा से दुआ माँग रही थी कि ऐ खुदा! अब मुझे भी उठा ले।

बाप दुनिया से जा चुका था और इधर शौहर भी मेरे साथ नहीं था। अभी भी हम दोनों शादीशुदा तो थे लेकिन तलाक़ नहीं हुई थी। फिर भी अलग-अलग ही रहते थे। आख़िरकार तलाक़ भी हो गई। अब मेरे सामने हर तरफ़ मुश्किलें ही मुश्किलें थीं क्योंकि अब मेरे बेटे की पूरी

ज़िम्मेदारी मेरे कंधों पर आ गई थी और मैं इस दुनिया में बिल्कुल अकेली थी। मैं अपने बच्चे के साथ बेसहारा औरतों के एक सेंटर में शिफ़्ट हो गई। वहाँ मैं खुद को इतना अकेला महसूस करती थी कि बस दुआ ही करती रहती थी। रातों को खुदा से दुआएं माँगती रहती थी और इबादत करती रहती थी वह इबादत जो मैंने अपनी नौजवानी में चर्च में सीखी थी। जब भी मैं इबादत करती थी तो हमेशा एक खास चीज़ का अजीब सा एहसास करती थी और वह ये कि कहीं न कहीं, कुछ न कुछ मुझ से छूट रहा है, शायद इसी लिए मेरी दुआएं भी कुबूल नहीं हो रही हैं। अब ये वह वक़्त था जब मैं अरब मुसलमानों के यहां काम कर रही थी। उन अरब मुसलमानों के कल्चर से मैंने बहुत सी अच्छी बातें सीख ली थीं जो मुझे यूरोपियन लाइफ़-स्टाइल में कहीं भी नज़र नहीं आती थीं।

इन लोगों के बीच रहते-रहते मैंने इस्लाम मज़हब के बारे में भी जानना शुरू कर दिया था। शुरू-शुरू में ये मज़हब मुझे बहुत नया-नया और अजीब सा लग रहा था। इसी बीच मुझे कहीं से कुरआन करीम भी हासिल हो गया। साथ ही खुदा ने मेरे ऊपर इतना करम और किया कि मुझे एक ऐसी औरत मिल गई जिसने खुद भी अपना मज़हब छोड़कर इस्लाम कुबूल कर लिया था। उसी औरत ने सब से पहले मुझे बाकायदा तौर पर इस्लाम के बारे में तफ़सील से बताया।

इस से पहले मुझे बिल्कुल नहीं मालूम था कि मुसलमान भी उसी ख़ालिक की इबादत करते हैं जिसकी ईसाई करते हैं, और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा<sup>०</sup> आख़िरी नबी हैं। अपनी रिसर्च शुरू करने के थोड़े ही दिनों बाद मैंने कलमा पढ़ा और मुसलमान हो गई। मैंने कुरआन पढ़ना भी शुरू कर दिया था। अब मुझे सच्चाई का रास्ता देखकर

बड़ा मज़ा आ रहा था और बहुत खुशी हो रही थी। अपनी इस रिसर्च के दौरान मैंने बाइबल की स्टडी भी की। बड़ी खुशी की बात थी कि बाइबल के अन्दर भी इस्लाम और आख़िरी नबी के बारे में सच को समझा जा सकता है।

इस्लाम को समझकर अब मुझे लग रहा था कि जैसे मैं अपनी सारी ज़िन्दगी इसी की तलाश में थी। यही मेरे लिए अब सीधा और सच्चा रास्ता था। इस्लाम मेरी ज़िन्दगी में कहीं खो गया था जिसको मैं अब तक ढूँढ़ नहीं पा रही थी।

आख़िरकार मैंने अपने बेटे को भी खुदा के बारे में बताना शुरू कर दिया। उसने हर उस बात को समझना और कुबूल करना शुरू कर दिया था जो मैं उसको समझाना चाहती थी। अब सब से बड़ी बात ये थी कि हमें ऐसा लगने लगा था कि हम अकेले नहीं हैं, खुदा हमारे साथ है। फिर भी अभी हमारे सामने बहुत सी मुश्किलें और परेशानियाँ थीं क्योंकि हमारी फैमिली पूरी नहीं थी। सालों साल गुज़रते रहे, मैं बहुत परेशान थी। कब तक अकेले ज़िन्दगी का बोझ ढोती रहती। वैसे ये मेरे ईमान का इम्तिहान भी था लेकिन इस्लाम को कुबूल करने और अपनी रिसर्च शुरू करने के बाद सब कुछ आसान हो गया था क्योंकि मैंने अपना फ़ोकस बदल दिया था। अकेले इतने सालों तक रहने से एक बड़ा फ़ायदा ये हुआ कि मेरा अक़ीदा और ईमान मज़बूत हो गया था और मैं भी ज़ेहनी तौर पर मज़बूत हो गई थी।

मैंने हर चीज़ और हर मुश्किल के साथ जीना सीख लिया था। अब मैं हर मुसीबत या मुश्किल पर सन्न कर लेती थी क्योंकि यही खुदा की मर्ज़ी है और जो कुछ इस दुनिया में होता है उसका कुछ न कुछ मक़सद होता है। कुरआन पढ़ने में मुझे बाक़ई बहुत मज़ा आता था। फिर भी मैंने कुरआन के अलावा दूसरी किताबों की स्टडी भी शुरू कर दी थी



जैसे सही बुखारी वगैरा। जो कुछ मैं पढ़ रही थी उस से पूरी तरह मुतमइन नहीं थी। इस लिए मैंने इस्लाम के दूसरे फ़िरकों की स्टडी शुरू कर दी क्योंकि मैं हक़ को और करीब से देखकर और समझकर उस पर चलना चाहती थी। जब मेरी स्टडी रसूले इस्लाम<sup>ﷺ</sup> के अहलेबैत<sup>३०</sup> तक पहुँची तो इस्लाम की इस तारीख़ ने बड़े अचम्भे में डाल दिया। जैसा कि मैंने ऊपर बताया कि बाइबल में हक़ को तलाश किया जा सकता है और उसमें हम रसूल<sup>ﷺ</sup> के अहलेबैत<sup>३०</sup> के बारे में सुबूत ढूँढ़ सकते हैं। अपनी रिसर्च के दौरान मुझे ऐसा लगा कि रसूल<sup>ﷺ</sup> के अहलेबैत<sup>३०</sup> को लोगों की नज़रों से छिपाने के लिए कुछ हदीसों को गढ़ा गया है और ये सब उन लोगों ने किया है या करवाया है जिनके पास हुकूमत रही है। रसूले इस्लाम<sup>ﷺ</sup> की वफ़ात के बाद की तारीख़ का सच यहीं छुपा हुआ है। अगर तारीख़ के इस हिस्से की रिसर्च की जाए तो हक़ को आसानी से ढूँढ़ा जा सकता है। हज़रत अली<sup>३०</sup> के इल्म और दूसरों पर आपकी फ़ज़ीलत आज भी तारीख़ में आसानी से तलाश की जा सकती है, अहलेबैत की अज़मत और उनकी पैरवी की जो अहमियत है उसको भी तारीख़ के इसी हिस्से में तलाश किया जा सकता है।

बहरहाल अपनी उस वक़्त की रिसर्च के दौरान मैं बड़ी परेशान थी और जब भी मैं कुछ पढ़ना शुरू करती थी तो कभी अगला पेज पढ़ती थी और कभी पिछला और यही करती रहती थी और फिर थक कर बैठ जाती थी क्योंकि मुझे लगता था कि मैं कभी भी हक़ और सीधे रास्ते तक नहीं पहुँच पाऊँगी। कभी-कभी मैं सुन्नी मुसलमानों के साथ शिया मज़हब के बारे में भी बहस करती थी लेकिन उन लोगों में तारीख़ के अन्दर छुपे हुए सच और हकीकत को तलाश करने के लिए वह जोश दिखता ही नहीं था जो मेरे अन्दर था। कुछ लोग तो यहाँ तक मानते थे कि शिया तो बहके हुए हैं। उनमें से बहुत से लोग शियों के बारे में बहुत सी ग़लत बातों पर यकीन

“

इस्लाम को समझकर अब मुझे लग रहा था कि जैसे मैं अपनी सारी ज़िन्दगी उसी की तलाश में थी। यही मेरे लिए अब सीधा और सच्चा रास्ता था। इस्लाम मेरी ज़िन्दगी में कहीं खो गया था जिसको मैं अब तक ढूँढ़ नहीं पा रही थी।

”

करते थे जैसे शियों का कुरआन दूसरे मुसलमानों से अलग है।

अपनी इसी रिसर्च के बीच मेरी एक सुन्नी मुसलमान से मुलाकात हुई और मैंने उस से शादी भी कर ली, मेरी ज़िन्दगी की खुशियाँ और मेरी दुआओं का जवाब मुझे मिल गया था। अपने नए शौहर के साथ मिलकर मैंने अपने बेटे की परवरिश करना शुरू कर दी और अब मैं एक और बच्चे की भी माँ बन गई थी।

जितनी मैंने सुन्नी किताबों की स्टडी की उतनी ही परेशानी बढ़ती गई। मेरे ज़ेहन में बहुत से सवाल पैदा हो रहे थे जिनका सुन्नी हदीसों में मुझे कोई जवाब नहीं मिल पा रहा था जैसे:

इस्लाम की इतनी बड़ी शख़्सियत, रसूले इस्लाम<sup>ﷺ</sup> के नवासे इमाम हुसैन<sup>३०</sup> को क्यों शहीद कर दिया गया?

सारी औरतों में सब से अज़ीम जनाबे फ़ातिमा<sup>३०</sup> की हदीसों क्यों मुझे नज़र नहीं आती?

मस्जिदों में खुतबों के दौरान हज़रत अली<sup>३०</sup> और जनाबे फ़ातिमा<sup>३०</sup> की औलाद के बारे में क्यों नहीं बताया जाता जबकि इन लोगों ने करबला में खुदा की राह में अपनी ज़िन्दगियाँ कुर्बान कर दी थीं?

शियों से इतनी नफ़रत क्यों की जाती है?

सिर्फ़ हज़रत अली<sup>३०</sup> ने ही क्यों रसूले इस्लाम<sup>ﷺ</sup> को गुस्ल और कफ़न दिया था?

जनाबे फ़ातिमा<sup>३०</sup> इस दुनिया से चली गईं लेकिन दूसरे ख़लीफ़ा से आख़िर तक नाराज़ रहीं, क्यों?

जनाबे आयशा ने हज़रत अली<sup>३०</sup> के खिलाफ़ जंगे जमल लड़ी जिसमें हज़ारों मुसलमान क़त्ल हो गए, इसके बाद भी वह इस्लाम की इतनी मोहतरम ख़ातून क्यों हैं?

मैं ये सब सोचती रहती थी और दुआ करती रहती थी, “ऐ खुदा! अब मेरे दिल में ताक़त नहीं है। मेरी हिदायत फ़रमा और मुझे अहलेबैत<sup>३०</sup> तक पहुँचने का रास्ता दिखा दे जिनसे मैंने हमेशा मुहब्बत की है, मैं अकेले इस सफ़र को तै नहीं कर सकती।”

हाल ही में सन् 2008 में मेरे सब्र करने की ताक़त ख़त्म हो चुकी थी और हौसला बिल्कुल टूट चुका था। मैं किसी भी तरह हिदायत के सीधे रास्ते पर आना चाहती थी। हद से ज़्यादा रिसर्च और दुआओं के बाद अब मैं अपने दिल की गहराईयों से कह सकती हूँ कि हज़रत अली<sup>३०</sup> इस्लाम के चमकते हुए खुशीद हैं और खुदा के आख़िरी नबी के बरहक़ जानशीन हैं। वह ऐसे इमाम हैं जिनसे मुहब्बत करना और जिनकी सीरत पर अमल

“

इस से पहले मुझे बिल्कुल नहीं मालूम था कि मुसलमान भी उसी ख़ालिक की उबादत करते हैं जिसकी ईसाई करते हैं, और हज़रत मुहम्मद मुस्ताफ़ा<sup>३०</sup> आख़िरी नबी हैं। अपनी रिसर्च शुरू करने के थोड़े ही दिनों बाद मैंने कलमा पढ़ा और मुसलमान हो गई। मैंने कुरआन पढ़ना भी शुरू कर दिया था। अब मुझे सच्चाई का रास्ता देखकर बड़ा मज़ा आ रहा था और बहुत खुशी हो रही थी। अपनी इस रिसर्च के दौरान मैंने बाइबल की स्टडी भी की।

”

करना हम सब पर वाजिब है।

इस अज़ीम इन्सान से ज़्यादा किस की बायोग्राफी दुनिया वालों को झिंझोड़ सकती है? जो ज़िन्दा रहा तो सिर्फ़ और सिर्फ़ खुदा के लिए और उसके दीन को फैलाने के लिए, जिसने अपने वक़्त के लोगों और अपने साथियों को हक़ का रास्ता दिखाने की अनथक कोशिशों की और उधर उस वक़्त की हुकूमत वालों (पहले और दूसरे ख़लीफ़ा) ने जब भी किसी मुश्किल में आपकी तरफ़ देखा तो आप ने हमेशा उनकी मदद की।

सच्ची बात ये है कि आज दुनिया को उस अज़ीम इन्सान, अली<sup>३०</sup> के किरदार और सीरत को पढ़ने और समझने की सबसे ज़्यादा ज़रूरत है। हज़रत अली<sup>३०</sup> आज की दुनिया के लिए बेहतरीन नमून-ए-अमल हैं।

अब मैं और मेरे शौहर, दोनों मिलकर अहलेबैत की तालीमात और हदीसों को पढ़ते हैं और अजीब बात ये है कि जो सच्चाई, गहराई और इल्म हमें अहलेबैत<sup>३०</sup> की बातों और हदीसों में नज़र आता है वह हमें इस्लाम के दूसरे फ़िरकों की किताबों में कहीं नहीं दिखा।

अब तो मुझे ऐसा लगता है कि जैसे मैं मुसलमान नहीं हुई थी बल्कि बीच में कहीं चली गई थी और अब फिर से इस्लाम की तरफ़ वापस आ गई हूँ।

अलहमुदिलिल्लाह ●



# पत्थर दिल वाले

इन्सान की रूह और दिल दोनों ही शुरु में नूरानी और पाको-पाकीज़ा, मेहरबान और मुहब्बत करने वाले होते हैं। इन्सान का दिल दूसरे इन्सानों के दुख-दर्द यहाँ तक कि जानवरों के दुख-दर्द को भी देख कर परेशान हो उठता है। जब दूसरे आराम से और एक अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारते हैं तो उसे बहुत अच्छा लगता है, दूसरों पर एहसान करने में उसे बड़ा मज़ा आता है। अपनी पाक रूह की वजह से वह आसानी से खुदा की तरफ़ बढ़ता चला जाता है, इबादतें करना और दुआएं माँगना उसे अच्छा लगता है, अच्छे काम करने में उसे खुशी होती है और बुरे काम करने से खुदा की बारगाह में शर्मिन्दा हो जाता है। ये है इन्सान का असल नेचर और रूह।

अगर उस ने अपनी इस पाकीज़गी और अपनी फ़ितरत के कहे को मान लिया और उस पर अमल करता रहा तो दिन ब दिन उसके दिल की नूरानियत और पाकीज़गी बढ़ती चली जाती है। इबादतें और दुआएं करते-करते इबादतों, दुआओं और खुदा से उसकी मुहब्बत भी दिन ब दिन बढ़ती रहती है लेकिन जैसे-जैसे वह अपने दिल की इस पाक आवाज़ को अनसुना करता है और इसके खिलाफ़ काम करने लगता है वैसे-वैसे उसके दिल की नूरानियत और रूह की पाकीज़गी धुंधली पड़ने लगती है और ऐसा भी हो सकता है कि ये नूर बिल्कुल ही ख़त्म हो जाए।

अगर उसने दूसरों के दुख-दर्द को देखा और चुपचाप देखता रहा, न उसे अफ़सोस हुआ और न कोई एहसास तो आहिस्ता-आहिस्ता वह इन सब का आदी हो जाता है और फिर किसी पर कोई भी मुश्किल आ पड़े उसे कोई फ़िक्र नहीं होती। बल्कि एक दिन वह भी आ सकता है कि दूसरों के फ़ाकों, बेरोज़गारी, परेशानियों और मुसीबतों को देखकर उसे मज़ा आने लगे। इन्सान शुरु में कोई भी गुनाह करने के बाद शर्मिन्दा होता है और उस पर अफ़सोस करता है लेकिन अगर एक बार गुनाह कर लिया तो दोबारा उसी गुनाह को करने पर तैयार हो जाता है। दूसरी बार के बाद तीसरी बार और तीसरी बार के बाद चौथी बार..... बार-बार गुनाह करने के बाद एक वक़्त वह भी आता है कि गुनाह करने के बाद उस पर शर्मिन्दगी तो बहुत दूर उसे गुनाह करने ही में मज़ा आने लगता है और उसी को वह अपनी कामयाबी समझ लेता है,

## ■ आयतुल्लाह इब्राहीम अमीनी

इसी में उसे खुशी भी मिलती है। ऐसे इन्सानों के दिल काले और उलटे हो चुके होते हैं। कुरआन और हदीसों में भी ऐसे ही लोगों को “कसिय्युल कल्ब” यानी पत्थर दिल वाले कहा गया है। ये वह लोग होते हैं जिनके दिलों पर शैतान कब्ज़ा कर लेते हैं और जब शैतान कब्ज़ा कर लेते हैं तो खुदा के नेक फ़रिश्ते वहाँ से चले जाते हैं। अब इसकी निजात के दरवाज़े इतनी बुरी तरह बन्द हो जाते हैं कि इसके लिए तौबा करने की उम्मीद भी नहीं की जा सकती। ऐसा इन्सान तौबा करना तो बहुत दूर तौबा करने के बारे में सोचता भी नहीं है।

कुरआन फ़रमाता है, “फिर इन सख़्तियों के बाद उन्होंने फ़रियद क्यों नहीं की। बात ये है कि उनके दिल सख़्त हो गए हैं और शैतान ने उनके आमाल को उनके लिए अच्छा बनाकर पेश कर दिया है।”<sup>(1)</sup>

दूसरी जगह फ़रमाता है, “अफ़सोस उन लोगों के हाल पर जिनके दिल ज़िक्रे खुदा के लिए सख़्त हो गए हैं। ऐसे लोग खुली हुई गुमराही में पड़े हुए हैं।”<sup>(2)</sup>

इमाम बाकिर<sup>(3)</sup> फ़रमाते हैं, “हर मोमिन के दिल में एक सफ़ेद प्वाइंट होता है। अगर उसने गुनाह किया और दोबारा उस गुनाह को अन्जाम दिया तो उसी में एक काला प्वाइंट पैदा हो जाता है। अगर उसने बार-बार गुनाह करना शुरु कर दिया तो ये काला प्वाइंट धीरे-धीरे फेलने लगता है और फिर इतना फैल जाता है कि सफ़ेद प्वाइंट को बिल्कुल ख़त्म कर देता है। उस वक़्त ऐसे दिल वाला इन्सान कभी भी खुदा की तरफ़ मुतवज्जेह नहीं होता।”<sup>(4)</sup>

इमाम अली<sup>(5)</sup> फ़रमाते हैं, “इन्सान के आँसू दिल की सख़्ती की वजह से खुश्क हो जाते हैं और दिल में सख़्ती गुनाहों के असर की वजह से होती है।”<sup>(6)</sup>

रसूल खुदा फ़रमाते हैं, “चार चीज़ें इन्सान के दिल के सख़्त होने की पहचान हैं: आँसुओं का खुश्क हो जाना, पत्थर दिल होना, रोज़ी रोटी के लिए हद से ज़्यादा लालची होना और गुनाहों को बार-बार करना।”<sup>(7)</sup>

इसलिए जो इन्सान भी अपने दिल की सलामती और कामयाबी चाहता है उसको छोटे-बड़े सारे गुनाहों से बचना चाहिए और हमेशा अपनी रूह को नेक कामों, इबादत, दुआ, खुदा से राज़ो-नियाज़, दूसरों पर एहसान, उनकी मदद, मज़लूमों की हिमायत, उनकी भलाई और नेक कामों में मदद और इन्साफ़ को फैलाने में लगाए रखना चाहिए ताकि उसकी रूह धीरे-धीरे अच्छे कामों और नेक आमाल की आदी हो जाए, दिल नूरानी और रूह पाको-पाकीज़ा हो जाए ताकि उसकी रूह फ़रिश्तों के आने जाने का मरकज़ बन जाए। ●

(1) अन्जाम: ४३, (२) जुमर: २२, (३) बिहार, पे-३६१ जि-७३,

(४) बिहार, पे-३५४ जि-७३, (५) बिहार, पे-३४६ जि-७३



बच्चों की सेहत और तन्दरुस्ती के लिए वही उसूल हैं जो हिफ्ज़ाने सेहत (Hygiene, Preventive and Social Medicine) के अन्दर बुनियादी चीजें हैं लेकिन ये बात ज़रूरी है कि अगर इन उसूलों पर बाकाएदा अमल न किया जाए तो बच्चे बहुत सारी बीमारियों के शिकार होकर अच्छी सेहत का पूरी तरह लुप्त नहीं उठा पाते। इसलिए बच्चों की खुराक और उनकी परवरिश पर पूरा ध्यान देना चाहिए। उनके लिए साफ़ गिज़ा और अच्छी आबो-हवा का इन्तेज़ाम करना चाहिए ताकि उनके अन्दर पैरेंट्स की आदतें वैसे ही आएँ जैसे थीं इसलिए कि वह फैमिली का आइना होते हैं। इसके लिए बच्चों में बीमारियों से बचने के लिए टीके दिए जाएँ खास तौर से सरकारी सेंटर पर ही टीका लगवाएं।

बच्चों को जो खुराक और गिज़ा हम दें वह नीचे दिए गए चार्ट के मुताबिक होना चाहिए।

### बच्चों का खुराक चार्ट

#### पैदाइश से एक महीने तक

माँ का दूध, अगर किसी वजह से न हो तो डिब्बे का दूध एक औंस पानी मिलाकर घोला जाए। अगर ब्रैस्ट का दूध दें तो उतनी ही मिक्चर में पानी शामिल करें। इसके अलावा Cad Liver Oil और संतरे का जूस देना चाहिए। एक महीने का बेबी 24 घंटे में 21 घंटे सोता है। इस उम्र में आम तौर पर बच्चे की लम्बाई 20 से 21 इंच होती है, वज़न ढाई किलो से तीन किलो होता है और तेज़ रौशनी का उसको एहसास होता है।

#### दूसरा महीना

माँ के दूध के साथ फलों का रस, फलों में संतरे का रस करीब 5 ML और Cad Liver Oil भी दिया जा सकता है। इस महीने में बच्चा मुस्कुराता है और रोता है, लम्बाई 22 इंच होती है।

#### तीसरा महीना

इस महीने में टमाटर या किसी भी सब्जी का सूप आधा कप बच्चे को दिया जाए और ये सूप सुबह 8 से 9 बजे के बीच दिया जाए। इसके अलावा ब्रैस्ट का ख़ालिस दूध भी दिया जा सकता है। इस महीने में बच्चा 24 घंटे में 19 घंटे सोता है। सर और हाथ पैर से खेलता है और उन्हें पकड़ता है। लम्बाई 23 इंच होती है।

#### चौथा महीना

इस महीने में बच्चे को दाल का पानी, गेहूँ और बाजरे की खीर जो शकर के साथ तैयार की गई हो और हॉफ़ ब्यायल्ड अंडा भी दीजिए। इस महीने में बच्चा तेज़ी से हंसता है और किसी चीज़ के सहारे बैठने लगता है। उसकी लम्बाई 23 इंच होती है, वज़न पाँच किलो के करीब होता है।



## बच्चों की सेहत के उसूल

#### पाँचवाँ महीना

इस महीने में बच्चे को आलू मसल कर दही के साथ दिया जाए, चिकन और ज़िगर का सूप, उबला या तला हुआ आधा अंडा और सब्जियों का सूप भी दीजिए। इस महीने में बच्चा आँखों और हाथ का इस्तेमाल करता है और उसकी लम्बाई 24 इंच होती है।

#### छठा महीना

इस महीने में बच्चे को दलिया, रवे, साबूदाने की खीर, फलों का जूस, टमाटर का सूप और बिस्कुट दिए जाएँ। इस महीने में बच्चा 24 घंटे में 18 घंटे सोता है और दो दाँत निकल आते हैं, चिड़े की तरह आवाज़ में चीखता है और लम्बाई 25 इंच हो जाती है।

#### सातवाँ महीना

इस महीने में बच्चे को चिकन की छोटी-छोटी बोटियाँ पीस कर, गोشت का कीमा, अथ उबला अंडा और सेब खुरचा हुआ देना चाहिए। बच्चे में दूध या पानी कप-गिलास से पीने की सलाहियत पैदा हो जाती है। इस महीने में बच्चे की लम्बाई 25 इंच होती है।

#### डा० आले मुहम्मद, अलीग

#### आठवाँ महीना

इस महीने में बच्चे को चिकन पीस कर और किसी अच्छी कम्पनी का चीज़, दूध से बनी हुई चीज़ें और कीमा दीजिए। बच्चे की लम्बाई 28 इंच हो जाती है और थोड़ा बहुत बोलता भी है। अपनी जुबान में दादा वगैरा कहता है और तिरछा होकर बैठ भी सकता है।

#### नवाँ महीना

इस महीने में बच्चे को मुर्ग का गोشت और कीमा, बकरे-भेड़ का गोشت और अच्छी तरह से बनी हुई सब्जी दीजिए। बच्चा 24 घंटे में 14 घंटे सोता है और हाँ और नहीं को समझने लगता है और घुटनों के बल थोड़ा बहुत चलने यानी रेंगने भी लगता है। उसका वज़न 8 और 9 किलो के बीच होता है।

#### दस से बारह महीने

इन दिनों में बच्चे को आहिस्ता-आहिस्ता आम गिज़ा थोड़ी मिक्चर में देना चाहिए। बच्चे को नई गिज़ा देते वक़्त देकर आजमाना चाहिए



और जो चीज़ खिलाई जा रही हो उसे एकदम से बन्द नहीं करना चाहिए क्योंकि अगर बच्चा किसी चीज़ को नापसन्द करता है तो हमेशा उसे नापसन्द ही करता है। नाश्ते में आधा संतरा, दलिया, आधा अंडा, मुर्गे के गोश्त का टुकड़ा, रात के खाने में जिगर का टुकड़ा कटा हुआ और मछली का टुकड़ा मसल कर दीजिए। टमाटर पकाया हुआ, अच्छी तरह से पकी हुई सब्जी और दूध की बालाई और साथ ही अच्छी कम्पनी की चीज़, ब्रेड और रोटी मसल कर, चुकन्दर, धीमी आंच पर पका हुआ फल वगैरा भी दीजिए। एक साल पूरा होते ही बच्चे की लम्बाई 38 इंच हो जाती है और 24 घंटे में 14 घंटे सोता है। वज़न 9 किलो हो जाता है। आवाज़ की नकल भी करता है और खड़ा होने लगता है। बातों को समझने लगता है और बातें करने की कोशिश भी करता है। 6 दाँत निकल आते हैं। पैरेंट्स को चाहिए कि इन सारी चीज़ों के साथ बच्चे को साफ़-सुथरा रखें और उसे अच्छा माहौल दें और खुश रखें ताकि आप आने वाली नस्ल की अच्छी परवरिश करके समाज को एक बेहतर इन्सान दे सकें।

**तन्दुरुस्ती हज़ार नेमत है। ●**



## बच्चे उससे डरते हैं जिस चीज़ को नहीं जानते

हर बच्चा पैदा होते ही अपने आस पास की दुनिया को पहचानने लगता है। इस बीच वह हर उस चीज़ से डरता है जिसको नहीं जानता। दूसरी तरफ़ जितनी उसके ख्यालों की दुनिया फैलने लगती है उतना ही उसे हर तरफ़ ख्याली और डरावनी चीज़ें भी दिखने लगती हैं जिनकी कोई हकीकत नहीं होती।

तीन साल तक के बच्चे के लिए भूतों से डरना कोई ऐसी खास बात नहीं है लेकिन अगर कोई बारह साल का बच्चा अकेले सोने में डरता हो तो यकीनन यह ख़तरे की घंटी है।

एक दूसरा डर जो आठ महीने से तीन साल तक के बच्चों में बहुत ज़्यादा देखने को मिलता है वह माँ-बाप से बिछड़ने का डर होता है। बच्चा कभी नहीं चाहता कि वह अपने माँ-बाप से बिछड़े। इसीलिए वह अकेले सोने और स्कूल जाने से घबराता है क्योंकि उसे उसके ज़ेहन के एतेबार से यह इत्मिनान नहीं होता कि जब वह सोकर उठेगा या स्कूल से वापस आएगा तो अपने माँ-बाप को अपने पास ही पाएगा। अब ज़ाहिर है कि आप हमेशा तो अपने बच्चे के पास रह नहीं सकती इसलिए आपको उसका यह डर उसके दिल से किसी न किसी तरह निकालना

ही होगा ताकि वह अपनी नेचरल जिंदगी जी सके। आप अपने बच्चे के अन्दर इस डर को पैदा होने से तो नहीं रोक सकती लेकिन उसके दिल से इस डर को निकालने में ज़रूर मदद कर सकती हैं। अगर आप अपने बच्चे से उसके डर के बारे में बात करें तो इसका फ़ायदा यह होगा कि वह आपसे अपने डर के बारे में बात करके ज़्यादा हलका महसूस करेगा। जब माँ-बाप अपने बच्चे से बात करते हैं और उसकी बातों को ग़ौर से सुनते हैं तो खुद यह बातें करना और उन्हें ग़ौर से सुनना ही अपने आप में बच्चे के लिए बहुत फ़ायदेमन्द होता है। कुछ डर तो ऐसे भी होते हैं जिन्हें सुनकर बड़े हँसते हैं लेकिन

बच्चों के लिए यही डर बड़े ख़तरनाक होते हैं।

सबसे खास बात यह है कि अपने बच्चे को यह बात समझाइए कि आप उसकी बातों और डर को समझ रही हैं। उसे बताइए कि जब आप बच्ची थीं तो आप भी इसी तरह डरती थीं। जब अपने बच्चे को आप अपने बचपन के डर के बारे में बताती हैं तो वह यह समझ लेता है कि उसका डर ऐसी कोई खास बात नहीं है। इसके अलावा जब आप अपने बच्चे को अपने डरों के बारे में बताती हैं तो उसका एक फ़ायदा यह भी होता है कि वह अपने डर के बारे में अपने एहसासों को आप से बता देता है और जितना वह अपने डर के बारे में बात करेगा उतना ही उसका डर कम होता जाएगा। इस तरह आप धीरे-धीरे उसके दिल से डर को निकालने में मदद कर सकती हैं। डरा हुआ बच्चा हमेशा ऐसे ताक़तवर और मज़बूत लोगों को तलाश करता रहता है जिनकी आगोश में उसे सुकून मिल सके और जहाँ उसका डर ख़त्म हो जाए। इसलिए आप जितनी ताक़तवर और मज़बूत होंगी उतनी ही अपने बच्चे की मदद कर सकेंगी। ●





# स० रसूल की शादी

■ मुहम्मद हसन नकवी

गर्मियों की एक तपती दोपहर में रेगिस्तानों की खाक छानता एक काफिला शाम की तरफ बढ़ रहा था। ऊँटों की लम्बी कतारें थीं जिन पर सामान लदा हुआ था। इसी काफिले में कुछ ऊँट एक ऐसे जवान के भी थे जो पूरे काफिले में सबसे खूबसूरत था। एक अजीब बात ये भी थी कि उम्र में बड़े लोग भी उस जवान की इज्जत कर रहे थे। ऐसा लगता था कि वह या तो बहुत बड़ा कारोबारी और बहुत दौलतमन्द इन्सान है या किसी बहुत ऊँचे खानदान से है। कुछ देर बाद ये काफिला एक गिरजाघर के पास आराम करने के लिए रुक गया। ये जवान भी अपने काफिले से थोड़ी दूर एक खजूर के पेड़ के नीचे जाकर आराम करने के लिए बैठ गया। तभी गिरजाघर से एक राहिव निकला और उसकी नज़र उस जवान पर पड़ गई और वह खड़े का खड़ा रह गया। फिर जैसे नींद से चौंका और भागता हुआ उस गुलाम के पास आया जो उस जवान के ऊँटों के खाने-पीने के इन्तिजाम में लगा हुआ था।

राहिव ने उस से पूछा, “ये जवान जो दरख्त के नीचे आराम कर रहा है, कौन है?”

गुलाम ने जवाब दिया, “ये हमारे शहर मक्के का रहने वाला है और हमारी मालकिन की तरफ से कारोबार करने के लिए शाम जा रहा है।”

“इसका नाम क्या है?” राहिव ने पूछा।

“हम सब उसे अमीन (यानी अमानतदार) कहते हैं।”

“कोई और नाम भी है?”

“हाँ, उसका असली नाम मुहम्मद है और ये कबीला-ए-बनी हाशिम से है।”

उसके बाद राहिव ने कहा, “ऐसा जलाल, ऐसी अज़मत और ऐसी पाकीज़गी किसी के चेहरे पर मैंने नहीं देखी है और इस पेड़ के नीचे सिवाए नबी के कोई पड़ाव नहीं डाल सका है। हो न हो, ये कोई नबी है।”

काफिला शाम पहुँचा और सारा सामान बेच कर बहुत अच्छा मुनाफ़ा कमाकर सब लोग खुशी-खुशी मक्के वापस आ गए। मैसरा गुलाम अपनी मालकिन ख़दीजा के पास पहुँचा और रास्ते में मुहम्मद<sup>स</sup> के बारे में जो कुछ सुना था सब बयान कर दिया। ख़दीजा ने अमीन को बुलाया और उस से जो तय हुआ था उस से ज़्यादा रक़म देना चाही मगर अमीन ने सिर्फ़ तय शुदा रक़म ही ली और अपने घर की तरफ़ चल पड़ा।



ख़दीजा खुद भी एक शरीफ़ और इज़्ज़तदार औरत थीं और अपने बाप के इन्तेक़ाल के बाद उनके कारोबार को चला रही थीं। उनका ख़ानदान भी अरब में अपना एक मुक़ाम रखता था। ख़दीजा बरसों से अपने लिए एक शरीफ़, अमानतदार और अच्छे ख़ानदान का कोई लड़का ढूँढ रही थीं मगर जाहिलियत के ज़माने में उनके जैसा कोई नहीं मिल रहा था। बहुत से दौलतमन्दों ने आपके लिए पैग़ाम भिजवाए थे मगर आपने कुबूल नहीं किया था।

जनाबे ख़दीजा, मैसरा से मुहम्मद<sup>०</sup> की तारीफ़ सुनकर सोच में डूब गईं। इससे पहले भी मुहम्मद<sup>०</sup> की शराफ़त और अमानतदारी के किस्से सुन चुकी थीं और इसीलिए आप ने उनको अपने कारोबार के लिए चुना भी था। इस बार ख़दीजा को हमेशा से ज़्यादा फ़ाएदा भी हुआ था।

ख़दीजा ने अपनी एक दोस्त नफ़ीसा को बुलाकर कहा कि मैं मुहम्मद से शादी करना चाहती हूँ, तुम मेरा पैग़ाम लेकर जाओ। नफ़ीसा हज़रत के पास आई और कहा, “क्या बात है, आप शादी क्यों नहीं करते?”

हज़रत<sup>०</sup> ने कहा, “मेरे पास पैसा नहीं है।”

नफ़ीसा ने कहा, “अगर उसकी ज़रूरत न हो और आपको ऐसी औरत भी मिल जाए जो ख़ूबसूरत भी हो, शरीफ़ भी और इज़्ज़तदार भी हो तो?”

“ऐसी कौन सी औरत है?”

“ख़दीजा।”

“क्या वह इस पर तैयार हैं कि एक ऐसे शख्स से शादी करें जिसके पास दुनिया की दौलत में से कुछ भी नहीं है?”

“ये मेरी ज़िम्मेदारी है।” नफ़ीसा ने कहा।

“तो मैं तैयार हूँ।”

नफ़ीसा की खुशी की इन्तेहा न रही। वह ख़दीजा के पास गई और उन्हें मुबारकबाद दी।

फिर क्या था शादी की तैयारी शुरू हो गई। तारीख़ और वक़्त तय हुआ और मरतबे के हिसाब से दुनिया के सबसे अमीर इन्सान का निकाह बहुत सादगी के साथ हो गया। हज़रत ख़दीजा की तरफ़ से उनके चचा अम्र बिन असद ने और रसूलु इस्लाम<sup>०</sup> की तरफ़ से हज़रत अबुतालिब ने निकाह पढ़ा।

बारह औंस सोना और पच्चीस ऊँट मेहर तय हुआ जो हज़रत अबुतालिब ने फ़ौरन अदा कर दिया।

कहा जाता है कि जनाबे ख़दीजा शादीशुदा थीं और उनके रसूल से पहले भी दो शौहर थे जिनका इन्तेक़ाल हो चुका था मगर ये सही नहीं है बल्कि हज़रत ख़दीजा कुंवारी ही थीं।

रसूल और ख़दीजा शादी के पाकीज़ा बन्धन

“दिन भर तबलीग़ करके थके-गाँदे रसूल जब घर में कदम रखते थे तो ख़दीजा की मुस्कुराहट आपको तरो-ताज़ा कर देती थी और दूसरे दिन फिर रसूल ताज़ादम होकर तबलीग़ में मशगूल हो जाते थे। हज़रत ख़दीजा ने अपने शौहर का हर कदम पर साथ दिया यहाँ तक कि जब रसूल ने रिसालत का एलान किया तो श्री औरतों में सबसे पहले आप ही ने कलमा पढ़ा और रसूल के मिशन में आपके कदम से कदम मिलाकर चलती रहीं।”

में बंध चुके थे और ज़िन्दगी हंसी खुशी गुज़र रही थी मगर अभी वह काम बाकी था जिसके लिए रसूल को भेजा गया था।

हज़रत की अमानतदारी, सच्चाई, शराफ़त और बुजुर्गी का हर इन्सान कायल हो चुका था और दूर तक आपकी शख्सियत को पहचाना जाने लगा था। तभी खुदा का हुक्म आया कि ऐ रसूल अब अपनी रिसालत का एलान कर दो।

रसूल ने खुदा की वहदानियत और अपने रसूल होने का एलान कर दिया। मगर वही मक्का और वही लोग जो रसूल की तारीफ़ें करते नहीं थकते थे और आपको अमानतदार और सच्चा मानते थे, आपको झुठलाने लगे और जब रसूल ने उनकी धमकियों पर ध्यान नहीं दिया तो जुल्म और ज़्यादती पर उतर आए। एक बहुत सख्त दौर की शुरुआत हो गई जिसमें पाबन्दियाँ, रसूल के रास्ते में काँटे बिछाना, आप पर कूड़ा फेंकना, तकलीफ़ें पहुँचाना सब कुछ शामिल था मगर वह तो रहमत का पैकर था जिनके होंटों पर हर तकलीफ़ के बाद यही दुआ होती थी कि ऐ खुदा! ये लोग मुझे पहचानते नहीं हैं इनको सीधा रास्ता दिखा दे मगर मक्के के मगरूर और दौलत और ताक़त के नशे में डूबे हुए लोग कब मानने वाले थे। उन्होंने रसूल और रसूल पर ईमान लाने वालों का बायकॉट कर दिया और फिर शुरू हुआ फ़ाकों का दौर जिसमें हज़रत ख़दीजा ने अपनी सारी दौलत रसूल के हवाले कर दी कि इस से ग़रीब मुसलमानों की मदद करें।

दिन भर तबलीग़ करके थके गाँदे रसूल जब घर में कदम रखते थे तो ख़दीजा की मुस्कुराहट

आपको तरोताज़ा कर देती थी और दूसरे दिन फिर रसूल ताज़ादम होकर तबलीग़ में मशगूल हो जाते थे। हज़रत ख़दीजा ने अपने शौहर का हर कदम पर साथ दिया यहाँ तक कि जब रसूल ने रिसालत का एलान किया तो भी औरतों में सबसे पहले आप ही ने कलमा पढ़ा और रसूल के मिशन में आपके कदम से कदम मिलाकर चलती रहीं। खुद रसूल खुदा ने फ़रमाया है कि वह मुझ पर उस वक़्त ईमान लाई जब लोग कुफ़्र में डूबे हुए थे। उन्होंने मुझे उस वक़्त पनाह दी जब लोगों ने मुझे छोड़ दिया था और उन्होंने मेरी उस वक़्त तस्दीक़ की जब लोग मुझे झुठला रहे थे।

हज़रत ख़दीजा की यही कुर्बानियाँ थीं जिनकी वजह से हज़रत ने आपको ज़िन्दगी ही में जन्नत की बशारत दे दी थी। रसूल खुदा की नज़र में आपकी अज़मत का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि जब तक हज़रत ख़दीजा ज़िन्दा रहीं आपने दूसरी शादी नहीं की और आपकी वफ़ात के बाद भी हमेशा आपको याद करते रहे। हज़रत आयशा का कहना है कि मुझे ख़दीजा से ज़्यादा रसूल की किसी बीवी से जलन नहीं हुई हालाँकि उनकी वफ़ात बहुत पहले हो चुकी थी और इसकी वजह ये थी कि रसूल, ख़दीजा को बहुत याद करते थे।

आयशा खुद कहती हैं, एक दिन रसूल खुदा<sup>०</sup>, ख़दीजा की तारीफ़ फ़रमा रहे थे। मुझे जलन हुई और मैंने कहा या रसूलुल्लाह! ख़दीजा एक बूढ़ी औरत ही तो थी जो मर गई और खुदा ने आपको उससे बेहतर बीवी अता कर दी है (आयशा का इशारा अपनी तरफ़ था)। रसूल<sup>०</sup> ये सुनकर नाराज़ हो गए और गुस्से में फ़रमाया, “खुदा की क़सम! उसने मुझे उनसे अच्छी बीवी अता नहीं की। वह मुझ पर उस वक़्त ईमान लाई थी जब लोग कुफ़्र में डूबे हुए थे, उन्होंने मेरी उस वक़्त तस्दीक़ की जब लोग मुझे झुठला रहे थे और उस वक़्त अपने माल से मेरी मदद की जब लोगों ने मुझे हर चीज़ से महरूम कर दिया था और खुदा ने सिर्फ़ उन्हीं के ज़रिए मुझे औलाद अता फ़रमाई और मेरी किसी भी बीवी के ज़रिए मुझे साहेबे औलाद नहीं किया।”

हज़रत ख़दीजा का यही ईसाar और सब कुछ कुर्बान कर देने का जज़्बा ही था जिसने इस्लाम को दुनिया के लोगों तक पहुँचा दिया। आज हम और सारे इन्सान ख़ास कर औरतें इस दुनिया में सर उठाकर जी सकती हैं। ये ख़दीजा का ही एहसान है कि उन्होंने उस इस्लाम की मदद की जो दुनिया को बराबरी, अमन, शान्ति, तालीम और शराफ़त सिखाने आया था, जिसने इन्सानों को जानवरों की क़तार से निकाल कर बुलन्दियों तक पहुँचा दिया।



बच्चों के लिए

# पुलाव

# कस्टर्ड

Recipe

गोشت .....	125 ग्राम
चावल .....	125 ग्राम
घी .....	2 चममच
प्याज़ .....	50 ग्राम
धनिया पिसा .....	1/2 चममच
लहसुन .....	2 जवे
सौंफ पिसी .....	1/2 चममच
नमक .....	टेस्ट के हिसाब से
लाल मिर्च पिसी .....	1/2 चममच

## तरीका

लहसुन और प्याज़ छील कर बारीक कुचल लें चावल चुन कर पानी में भिगो कर रख दें। फ्राई पैन में घी गरम करके उसमें लहसुन और प्याज़ भून कर बाहर निकाल लें फिर एक बर्तन में गोश्त और सारा सामान मिला कर यखनी तैयार करें। जब यखनी तैयार हो जाये तो उसमें चावल डाल कर मीडियम आँच पर पकाएं थोड़ी देर बाद भुनी हुई प्याज़ डाल कर आँच हलकी कर दें। जब चावल नर्म हो जाएं तो प्लेट में निकाल कर सलाद से सजा कर बच्चे के सामने रखें। अगर आपका बच्चा बोटियाँ न भी खाये तो परेशान न हों क्योंकि गोश्त में मौजूद सारे प्रोटीन यखनी के जरिये चावलों में मिल चुके हैं।

कस्टर्ड पावडर .....	1 चममच
दूध .....	1/2 लीटर
शकर .....	25 ग्राम
अंडा .....	1 पीस
बादाम की गिरी .....	4 पीस

## तरीका

बादाम को गरम पानी में भिगो कर छिलका उतार कर बारीक पीस लें। एक बर्तन में अंडे फेंट कर उसमें कस्टर्ड पावडर, दूध, पिसा हुआ बादाम और शकर डाल कर अच्छी तरह मक्स कर लें फिर किसी खुले मुँह के बर्तन में पानी डाल कर गैस पर रख दें जब पानी खौलने लगे तो कस्टर्ड वाला बर्तन उसमें रखकर तेज़ आँच पर पकायें जब कस्टर्ड गाढ़ा हो जाये तो प्लेट में निकाल कर ठंडा कर लें।

मज़ेदार कस्टर्ड तैयार है।

# बच्चों के पकवान





# मियाँ बीवी की पहली जिम्मेदारी



नई जिन्दगी के आगाज़ में ज़रूरी है कि मियाँ-बीवी एक दूसरे को जानें और समझें, एक दूसरे के सोचने के अन्दाज़, अख़लाक़, ख्वाहिशों, पसन्द-नापसन्द और जिस्मानी हालत को पहचानते हों। एक दूसरे की अच्छाईयों और कमज़ोरियों को पहचानते हों। साथ ही इन सबका मक़सद आपसी जिन्दगी में मज़बूती, ख्वाहिशों में बैलेन्स और मौजूदा सोर्सेज़ से ज्यादा से ज्यादा फ़ाएदा उठाना हो, न ये कि एक दूसरे की बुराईयाँ ढूँढना।

अगर इस मक़सद के तहत वह एक दूसरे को समझें और उनमें से किसी को भी दूसरे में कोई **बुराई या ऐब** नज़र आए तो उसे बुनियाद बनाकर शोर-मुल न मचाया जाए बल्कि कोशिश ये हो कि उसको सुधारा जाए।

ऐब दो तरह के हो सकते हैं: जिस्मानी या रूहानी। अगर जिस्मानी ऐब है और इलाज हो सकता है तो उसके इलाज की कोशिश की जाए और अगर इलाज के क़ाबिल न हो तो फिर जिन्दगी के आख़िरी लम्हों तक सब्र किया जाए। अगर अख़लाकी और रूहानी ऐब है तो किसी अच्छे तरीक़े और सलीके के साथ उसको सुधारने की कोशिश की जाए। अगर किसी अख़लाकी ऐब की इस्लाह न हो सके तो बेहतर यही है कि उसे नज़रअन्दाज़ कर दिया जाए और आपसी जिन्दगी को आगे बढ़ाने की कोशिश की जाए।

अगर बीवी को अपने शौहर में कोई ऐब नज़र आए और उसको दूर न किया जा सकता हो तो वह उस ऐब के बावजूद उसे अपना शौहर माने और पक्का इरादा कर ले कि कुछ भी हो जाए आपसी जिन्दगी की ये गाड़ी यूँ ही चलती रहेगी। मिसाल के तौर पर अगर उसका शौहर गुस्से वाला है तो कोशिश करे कि कोई ऐसी बात या काम न करे जो उसके शौहर के गुस्से को उभार दे और अगर उसे गुस्सा आ ही जाए तो सब्र और मेहरबानी के साथ मामले को हल करने की कोशिश करे। अगर वह जल्दी किसी बात से परेशान हो जाता है तो कोई ऐसा काम न करे जो उसको परेशान कर दे और अगर वह परेशान हो ही जाए तो उससे इस बारे में बात करे और उसकी परेशानी को दूर करने की कोशिश करे। अगर उसकी जिन्दगी में कोई टाइमटेबल नहीं है तो मुहब्बत के साथ दो क़दम आगे बढ़कर

उसकी जिन्दगी को पंक्चुअल बनाने की कोशिश करे। अगर बहुत ज्यादा शक्की मिज़ाज का हो तो ऐसे कामों से बचे जिनसे वह शक़ में पड़ जाता हो और अगर किसी चीज़ में शक़ कर ही बैठे तो कोशिश करे कि मेहरबानी और नमी के साथ उसका शक़ दूर करे और इसी तरह दूसरे काम भी।

बहरहाल मियाँ-बीवी दोनों को ये बात याद रखना चाहिए कि मासूमियत<sup>१०</sup> के अलावा कोई भी बुराई और ऐब से पाक नहीं है। फ़र्क़ सिर्फ़ ये है कि हर शख्स में अलग-अलग ऐब और बुराईयाँ होती हैं। किसी में कुछ तो किसी में कुछ। बीवी को ये सोचना चाहिए कि क्या वह खुद हर ऐब और बुराई से पाक है जो अपने शौहर के बेऐब होने की उम्मीद रखती है? हाँ, ये ज़रूर है कि अक्सर ऐबों और बुराईयों को नज़रअन्दाज़ किया जा सकता है और उनके मुक़ाबले में सब्र करके और उन्हें बर्दाश्त करके एक खुशहाल जिन्दगी गुज़ारी जा सकती है। क्या ये अफ़सोस की बात नहीं है कि इन्सान एक छोटे से ऐब की वजह से अपनी फैमिली लाइफ़ को जहन्नम बना डाले?!

बहरहाल शादी के बाद की जिन्दगी के शुरू में मियाँ-बीवी की पहली जिम्मेदारी एक दूसरे को जानना और समझना है और उसके बाद एक दूसरे के हुकूक़ को अदा करना और अपनी-अपनी जिम्मेदारियों को निभाना है। ये कोई आसान काम नहीं है बल्कि एक बहुत बड़ी महारत है जिसके लिए बहुत सूझबूझ और जानकारी की ज़रूरत है। मियाँ-बीवी पहले एक दूसरे के राइट्स को जानें, फिर उन पर अमल करें और अगर इसमें उन्होंने ढील से काम लिया तो अन्जाम भी उन्हीं को भुगतना होगा। उस वक़्त सुधार मुश्किल बल्कि नामुमकिन भी हो सकता है।

शादी के बाद पहले दो तीन साल बहुत नाजुक, ख़ास और ख़तरनाक होते हैं क्योंकि ये लड़का-लड़की जिन्होंने नई जिन्दगी की शुरुआत की है, ये पहले से इसके लिए तैयार नहीं थे। इसलिए एक-दूसरे के साथ इनका बर्ताव बिल्कुल नेचरल नहीं होता। ये दोनों कई सालों के तज़ुर्बे के बाद आपसी जिन्दगी के तौर-तरीक़े सीखते हैं और एक दूसरे के मश्वरे के साथ अच्छी जिन्दगी गुज़ार पाते हैं।

इसलिए लड़ाई झगड़ों के शुरू होने से पहले बल्कि इस नई जिन्दगी की शुरुआत ही से इस आपसी जिन्दगी का एक नपातुला सिस्टम तैयार किया जाए जिसके ज़रिए आगे होने वाले इख़्तेलाफ़ों और झगड़ों से बचा जा सके और जिन्दगी को आराम, सुकून, खुशहाली, मुहब्बत, मेहरबानी और ख़ूबसूरती से सजाया जा सके।

## ज्वाइंट फैमिली

अगर ज्वाइंट फैमिली है तो मामला और सज़्ज हो जाता है। लड़की को घर के सभी लोगों को खुश रखना होता है जो बहुत मुश्किल काम है। इस जगह भी दोनों तरफ़ से जिम्मेदारी बनती है कि एक दूसरे को समझें। नई दुल्हन के एहसासात और जज़्बात का ख़याल रखें और उसमें बुराईयों और ऐबों को न ढूँढ़ें बल्कि उसकी ग़लतियों को सुधारने की कोशिश करें और अगर लड़की की ग़लतियाँ न सुधर सकती हों तो दिन रात ताने कसने के बजाए उसकी ग़लती को नज़रअन्दाज़ करें। अगर घर में और भी बहूवें या बेटियाँ हों तो घर के कामों को किसी एक पर न छोड़ें बल्कि कामों को बांट दें और सब के साथ एक जैसा बर्ताव करें ताकि घर झगड़ों से बचा रहे।

ज्वाइंट फैमिली में सास घर के सब लोगों को जोड़े रखने में बेहतरीन रोल अदा कर सकती है मगर उसे बहू बेटे को एक आँख से देखना होगा। साथ ही बहू की भी जिम्मेदारी है कि घर की जुजुर्गी की हैसियत से सास की बात को अहमियत दे।

इस जगह सब से ख़ास बात ये है कि बेटे की शादी के बाद उसकी अपनी पर्सनल लाइफ़ में घर के दूसरे लोग दख़ल न दें बल्कि उन दोनों को अपने फ़ैसले खुद करने दें। यहाँ तक कि उनके बच्चों की परवरिश में भी विला वजह दख़ल न दें। माँ-बाप को खुद परवरिश करने दीजिए ताकि वह जैसा चाहें अपनी औलाद की परवरिश करें। हाँ, अगर आपको लगता है कि वह सही फ़ैसले नहीं कर पा रहे हैं या अपने बच्चों की परवरिश सही तरह से नहीं कर रहे हैं तो उनको समझाईए और बातचीत और प्यार-मुहब्बत के साथ सारे मसअलों को हल कीजिए ताकि घर जन्नत का नमूना बन जाए। ●



# लड़कियों के राइट्स

बहुत ज़्यादा हैं।



■ अब्बास असगर शबरेज़

कुरआने मजीद, इस्लाम से पहले के ज़माने में लड़कियों की अफ़सोसनाक हालत को इस तरह बयान करता है, “और जब खुद उनमें से किसी को लड़की की बशारत दी जाती है तो उसका चेहरा सियाह पड़ जाता है और वह खून के घूंट पीने लगता है। कौम से मुँह छिपाता है कि बहुत बुरी ख़बर सुनाई गई है। अब उसको ज़िल्लत के साथ ज़िन्दा रखे या ख़ाक में मिला दे। यकीनन ये लोग बहुत बुरा फैसला कर रहे हैं।”<sup>(1)</sup>

लेकिन इतनी सदियाँ गुज़रने के बाद अब जाके इन्सान समझा है कि लड़की भी लड़के की ही तरह एक इन्सान है और उसे भी एक अच्छी ज़िन्दगी जीने का पूरा-पूरा हक़ है। रसूले अकरम<sup>०</sup> ने फ़रमाया है, “जिसके पास बेटी हो और वह उसकी अच्छी परवरिश करे और उसको अच्छे कामों की तालीम दे, उसे अच्छा खिलाए-पिलाए और जिन नेमतों को खुदा ने उसे दिया है उसे लड़की के ऊपर खर्च करने में कोई कमी न करे तो ऐसा शख्स जहन्नम की आग से दाएं और बाएं दोनों तरफ़ से बचता हुआ जन्नत में दाख़िल हो जाएगा।”<sup>(2)</sup>

यह हदीस तो बहुत मशहूर है जिसमें इमाम सादिक<sup>०</sup> फ़रमाते हैं, “लड़के नेमत और लड़कियाँ रहमत हैं।”<sup>(3)</sup>

एक दूसरी जगह इमाम सादिक<sup>०</sup> ने फ़रमाया है, “अगर कोई अपनी लड़कियों की मौत की आरजू करे तो वह उनकी ख़िदमत के अज़ और सवाब से महरूम हो जाता है और वह गुनाहगार की सूत में खुदा से मुलाकात करेगा।”<sup>(4)</sup>

लड़कियों के जो हक़ हैं उन्हें समझाने और लड़कियों की परवरिश के लिए रसूले खुदा<sup>०</sup> ने

फ़रमाया है, “अगर कोई शख्स अपनी तीन लड़कियों या तीन बहनों की ज़िन्दगी का खर्च चलाए तो जन्नत उस पर वाजिब हो जाती है। किसी ने पूछा, दो लड़कियाँ या दो बहनें? फ़रमाया, हाँ। फिर किसी ने पूछा, क्या एक लड़की और बहन भी? फ़रमाया, हाँ, एक लड़की या एक बहन भी।”<sup>(5)</sup>

कुछ हदीसों में तो यहाँ तक आया है कि खुदा मर्दों से ज़्यादा औरतों पर मेहरबानी करता है।

उस ज़माने में जब लड़कियों को गिरी हुई नज़र से देखा जाता था, रसूले खुदा<sup>०</sup> ने उनकी हिफ़ाज़त और परवरिश के लिए मुसलमानों को हुक्म दिया और बड़े खूबसूरत तरीक़े से लड़कियों के इन्सानिय स्टेटस की तरफ़ लोगों का ध्यान मोड़ा।

इस्लाम में लड़कियों और औरतों के लिए एज़ूकेशन के मैदान में आगे बढ़ने के लिए कोई हद क़रार नहीं दी गई है। हर इन्सान चाहे मर्द हो या औरत, जहाँ तक हो सके, एज़ूकेशन हासिल कर सकता है। यही इस्लाम की ख़्वाहिश है और यही इस्लाम का मक़सद है। हर मर्द की तरह अच्छे से अच्छे तरीक़े से एज़ूकेटेड होना हर लड़की का पैदाईशी हक़ है जिसको उस से कोई नहीं छीन सकता। इस्लाम ने कभी भी औरतों पर भी ये नहीं कहा कि एज़ूकेशन सिर्फ़ लड़कों का हक़ है, लड़कियों को इससे कोई मतलब नहीं है बल्कि जहाँ भी एज़ूकेशन की बात की वहाँ लड़के और लड़कियों दोनों को शामिल किया है। इस्लामी हिस्ट्री में ऐसी बहुत सी मशहूर औरतें गुज़री हैं जिन्होंने इल्मी मैदानों में अपने झंडे गाड़े हैं।

बाहर के मेहनत भरे कामों में औरतों का मर्दों के साथ ताल-मेल एक ऐसा सबजेक्ट है जो आज

की मीडिया में बहुत चर्चों में है। इस्लाम ने कभी ये नहीं कहा है कि लड़कियाँ या औरतें घर के अन्दर कोई काम या घर से बाहर कोई जॉब नहीं कर सकतीं। मुश्किल जॉब या नौकरी करने में नहीं है। औरत कोई भी काम या कोई भी जॉब चुने उसे इस बात का पूरा पूरा ख़्याल रखना होगा कि उसकी पाकीज़गी और शराफ़त पर कहीं भी और कहीं से भी कोई धब्बा न लगे। अगर वह घर से बाहर जाती है तो उसे अपने पूरे इस्लामी हिजाब में जाना चाहिए जिसमें उसका बदन ग़ैर मर्दों की भूकी निगाहों से बचा रहे। यह सब अपनी जगह लेकिन इसके साथ ही साथ इस्लाम ने जिस चीज़ पर सब से ज़्यादा ज़ोर दिया है वह है घर और फैमिली की ज़िम्मेदारी। अगर लड़की या औरत अपने इस फ़र्ज़ से दामन बचा रही है तो बाकी सारी छूट अपने आप ख़त्म हो जाएगी। अगर घर से बाहर की अपनी मसरूफ़ियत की वजह से वह अपनी इस ज़िम्मेदारी को पूरा नहीं कर पा रही है तो दीन आगे बढ़कर रोक देगा।

औरत की ज़िन्दगी का शानदार होना बिल्कुल एक नेचरल सी बात है जो उनको बहरहाल मिलना चाहिए लेकिन कुछ लोग ये भी मानते हैं कि औरतों को सिर्फ़ अगली नस्ल की परवरिश, देखभाल और घर के कामों में ही मसरूफ़ होना चाहिए जो कि ग़लत नज़रिया है और यह भी ग़लत है कि औरतों को घर से बाहर जाने और कुछ भी करने की खुली छूट मिल जाए। दोनों बातें ग़लत हैं, इस बारे में एक बीच का रास्ता अपनाना चाहिए जिसे दीन ने भी कुबूल किया है और वह वही रास्ता है जिस पर चलकर ही लड़कियों और औरतों को उनके पूरे पूरे हक़ मिल सकते हैं।



फ्रांस के मशहूर फ्लासफर, कांट इस बारे में कहते हैं, “अच्छा तो यही है कि औरतों की ज़िन्दगी सुकून और आराम के साथ गुज़रे और मर्दों के कामों की ज़िम्मेदारी उन पर न हो क्योंकि ये काम उन्हें उनकी नेचरल ज़िम्मेदारियों के रास्ते से हटा देते हैं और उनकी नेचरल सलाहियों को बर्बाद कर देते हैं।”

जिस तरह राइट्स, फ़लसफ़ियों, शायरों, फ़नकारों और किसी भी तरह के आर्टिस्टिक ज़ेहन वाले इन्सान को अपने इल्म से फ़ायदा उठाने के लिए सुकून, आराम और फुरसत की घड़ियाँ चाहिए उसी तरह औरतों को भी अपनी इन्सानी और समाजी ज़िम्मेदारियों जैसे बच्चों की परवरिश, घरदारी, प्रेगनेन्सी और पैदाइश के लिए इसी तरह का आराम, सुकून और फुरसत की घड़ियाँ चाहिए। ये पैराग्राफ़ उसी फ्रेंच फ़्लासफ़र, कांट के नज़रियों का निचोड़ है लेकिन जैसा कि ऊपर बताया गया, कुछ फ़लसफ़ियों ने कहा है कि औरतों को अपने नेचरल रास्ते से हटकर एक नया रास्ता चुनना चाहिए और समाजी ज़िन्दगी में मर्दों के शाना बशाना चलकर अपनी ज़िन्दगी की बुनियाद डालना चाहिए। इन नई और दिल को लुभाने वाली बातों ने चाहे एशिया हो या यूरोप, दोनों जगह ख़ूब अपना असर दिखाया है क्योंकि लोग हलकी-फुल्की किताबें और कहानियाँ जो लज़्ज़त पहुँचाने वाली हों, के पढ़ने के ज़्यादा शौकीन होते हैं जिसका नतीजा आज ये सामने आया है कि इस नज़रिए पर सारी दुनिया एक हो गई है। जिसका नुक़सान हम सबको ये उठाना पड़

रहा है कि आज का इन्सानी समाज एक पागलपन और जुनूनी कंडीशन में आ गया है जिसमें औरतें घरों को छोड़कर बाहर की दुनिया की रंगीनियों में खो गई हैं जिसमें उनका वजूद कहीं नज़र नहीं आता। इलेक्ट्रानिक और प्रिंट मीडिया दोनों ने ही इस बारे में ख़ूब प्रोपेगंडा किया है। पिछले पचास-साठ सालों में इतना हंगामा किया, इतना हंगामा किया कि औरतों को सड़क पर लाकर ही छोड़ा और एक ऐसी ज़िन्दगी की बुनियाद डाल दी जो मर्दों और औरतों दोनों के लिए ही नुक़सानदेह है। सारी दुनिया में न जाने कितनी मैगज़ीनें, न्यूज़ पेपर, डेली, वीकली और मंथली सिर्फ़ इसी एक सबजेक्ट पर घरों तक पहुँचाए जा रहे हैं और मज़े की बात तो ये है कि खुद माँ-बाप अपनी लड़कियों के लिए ऐसी मैगज़ीन्स लेकर आते हैं। बेटियाँ भी अपने कीमती वक़्त को ऐसे बेफ़ायदा कामों में बर्बाद कर देती हैं।

बात अगर सिर्फ़ यहीं पर ख़त्म हो गई होती तब भी अच्छा था। मुश्किल तो ये है कि तरक्की और खुशहाली के नाम पर औरत के स्टेटस को इतना गिराया गया, इतना गिराया गया कि उसके जिस्म पर कपड़े भी नहीं छोड़े और ऐसा सिर्फ़ थियेटर के स्टेज तक ही नहीं हुआ बल्कि आम ज़िन्दगी में भी यही सब कुछ करवाया गया, शॉपिंग माल्स, मार्किट्स, सड़कें, बसें, पार्क, पिकनिक स्पॉट, समुद्रों के किनारे और बेहयाई के अड्डों पर यह नुमाइश ख़ूब-ख़ूब हो रही है।

क्या यही वीमेन राइट्स हैं? क्या यही ह्युमन राइट्स हैं? क्या औरतों की तरक्की यहीं पर रुक

जाती है?

अगर यही सब वीमेन राइट्स होते और अगर यही सब तरक्की होती तो कुरआन कभी न कहता, “लोगों की हाथों की कमाई की वजह से फ़साद, खुशकी और तरी हर जगह फैल गया है।”<sup>(१)</sup>

आज की दुनिया जो कुछ वीमेन राइट्स के नाम पर औरतों को सौगात में दे रही है वह कहीं से कहीं तक वीमेन राइट्स नहीं हैं। वीमेन राइट्स वही हैं जो दीन ने औरतों को दिए हैं, वह राइट्स जो इस्लाम से पहले औरत के पास थे ही नहीं। उसको तो पैदा होते ही ज़िन्दा दफ़न कर दिया जाना फ़ख़र की बात समझी जाती थी और ज़िन्दा दफ़न नहीं भी किया जाता था तो उसे सिर्फ़ दूसरे जानवरों की तरह एक जानवर समझ कर सिर्फ़ काम लिया जाता था लेकिन इस्लाम ने इस मरी हुई औरत को ज़िन्दगी बख़्शी और इतना ऊँचा उठाया कि सही मायने में मर्दों के शाना बशाना खड़ा कर दिया और औरतों को वह सारे हक़ दिए जिनकी वह हक़दार थी, वह हक़ जिनके बारे में आज की मार्डन सोसाइटी सोच भी नहीं पाती है, उन पर अमल करना और उन्हें औरतों को देना तो बहुत दूर की बात है। ●

(1) नहल/58-59, (2) मुहज्जतुल बैज़ा, जिल्द/2, पेज/64, (3) मुहज्जतुल बैज़ा, जिल्द/2, पेज/64, (4) बिहार, जिल्द/23, पेज/114, (5) बिहार, जिल्द/23, पेज/114, (6) रूम/41





# कुछ बातें पैरेंट्स से बच्चों के बारे में

बच्चे खुदा का सबसे खूबसूरत क्रिएशन हैं और शायद सब से प्येरीदा भी। जितना मज़ा उनके साथ रहने में आता है उतना ही टफ़ उनको और उनकी ज़रूरतों को समझना है। एक तो बहुत बड़ी मुश्किल ये भी है कि हर बच्चा दूसरे बच्चों से बिल्कुल अलग होता है। इसलिए हर बच्चे को उसी के एतेबार से ट्रीट करना पड़ता है लेकिन फिर भी कुछ बातें और ज़रूरतें ऐसी हैं जो आमतौर पर सारे बच्चों में एक सी होती हैं और सब ही को उनकी ज़रूरत होती है। उनमें से कुछ को हम यहां बयान कर रहे हैं।

कहते हैं कि इन्सान का कैरेक्टर उसकी शख्सियत की बुनियाद पर होता है। कुछ लोगों की शख्सियत इतनी रोबदार होती है कि दूसरा उनसे बात करते हुए हिचकिचाता है और कुछ लोगों की शख्सियत में जाहिर तौर पर तो ऐसी कोई बात नहीं होती लेकिन उसके चलने फिरने, उठने बैठने और बात करने का अन्दाज़ इम्प्रेस करने लगता है।

एक्सपर्ट्स कहते हैं कि माँ-बाप का वर्ताव बच्चों की पर्सनैलिटी की तराश-ख़राश में बहुत ख़ास रोल अदा करता है। दूसरे लफ़्ज़ों में बच्चों की शख्सियत की बुनियाद दरअसल पैरेंट्स के ज़रिए बनाए गए घरेलू माहौल से पड़ती है। जिसमें बच्चे सिर्फ़ ज़िन्दगी गुज़ारने के उसूल सीखते हैं।

आमतौर पर ये भी देखने में आता है कि लोगों की एक बहुत बड़ी तादाद अपनी शख्सियत की कमज़ोरी की वजह अपने घर के ख़राब माहौल को बताती है। किसी भी बच्चे में ये कमज़ोरी उसकी ज़िन्दगी के हर मोड़ पर अपना असर छोड़ती है और वह तरह-तरह की परेशानियों में बिला वजह घिरा रहता है। उसे दूसरे कामों को करने में भी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। वक्त इतनी तेज़ी से बदलता जा रहा है कि लोगों की ख़्वाहिशों और पसन्द-नापसन्द का अन्दाज़ा लगाना मुश्किल हो गया है। इन्सान के लिए पहला और आखिरी स्कूल उसका अपना घर

होता है। एक बच्चा जो कुछ अपने घर से सीख सकता है, वह किसी और जगह से नहीं सीख सकता। जिस तरह घर से मिली खुशियाँ हमेशा सबसे पहले याद आती हैं, उसी तरह घर से मिली हुई महरूमियाँ भी इन्सान का साया बन जाती हैं जो हर वक्त उसका पीछा करती रहती हैं। लोगों के कैरेक्टर के बनने-संवरने और निखार लाने में घर का माहौल बुनियादी रोल अदा करता है और कभी-कभी बेजा लाड-प्यार बच्चों की परवरिश और कैरेक्टर को भी बिगाड़ देता है। पैरेंट्स का फ़र्ज़ ये है कि वह बच्चों को ऐसा खुशगवार माहौल दें कि वह आगे चलकर एक खुशगवार और खूबसूरत ज़िन्दगी गुज़ार सकें।

## बच्चों में कहानियाँ पढ़ने का शौक पैदा कीजिए

एक और चीज़ जो बच्चे की क्रिएटिविटी और ज़ेहनी डेवलपमेंट के लिए बहुत ज़रूरी है, वह है उन्में कहानियाँ पढ़ने का शौक पैदा करना। कुछ पैरेंट्स तो अपने बच्चों को कहानियाँ वगैरा पढ़ने का आदी बना देते हैं जबकि कुछ का मानना ये होता है कि इससे उनकी पढ़ाई पर गुलत असर पड़ता है लेकिन इस मसले में भी हकीकत ये नहीं है। एजुकेशनल फ़ील्ड के एक्सपर्ट्स का कहना है कि सिलेबस की किताबों से हटकर दूसरी







किताबों और कहानियों को पढ़ने से न सिर्फ ये कि बच्चों की मालुमात बढ़ती है बल्कि इस से उनमें मैच्योरिटी भी आती है और वह सिर्फ कोर्स की किताबें पढ़ने वाले बच्चों के मुकाबले में कहीं ज़्यादा ज़ेहीन होते हैं।

हमारे यहां वैसे ही बच्चों के लिए बहुत कम किताबें और किस्से-कहानियाँ लिखी जाती हैं ऊपर से बच्चों के लिए अच्छे और स्टैंडर्ड मैगज़ीन भी न होने के बराबर हैं लेकिन यूरोप-अमेरिका में बच्चों के लिटरेचर पर भी बहुत खास ध्यान दिया जाता है। जिसकी एक आम मिसाल हेरी पॉटर की नॉविल की सीरीज़ की शोहरत है जो बच्चों और बड़ों में बराबर से मकबूल है।

एक्सपर्ट्स कहते हैं कि सिलेबस से बच्चों को सिर्फ एक हद तक मालुमात मिल पाती है जिसका रोज़मर्रा ज़िन्दगी से ज़्यादा वास्ता नहीं पड़ता। इसके ख़िलाफ़ दूसरी किताबें बच्चों के लिए बहुत फ़ाएदेमन्द साबित होती हैं।

किताबें और कहानियाँ पढ़ने के साथ-साथ डायरी लिखना भी बच्चों के लिए बेहतरीन और दिलचस्प मशगला हो सकता है। डायरी लिखने से न सिर्फ बच्चों की ज़िन्दगी में मैच्योरिटी और पंकचुअलिटी पैदा होती है बल्कि उनकी ज़ेहनी और क्रिएटिव सलाहियतें भी उभर कर सामने आती हैं। मशहूर एजुकेशनलिस्ट डॉक्टर नताशा कहती हैं कि हर इन्सान में किसी न किसी तरह की क्रिएटिविटी होती है। ज़रूरत इस बात की होती है कि इस क्रिएटिविटी को पहचाना जाए और उसमें निखार पैदा किया जाए।

किताबें पढ़ना, टीवी देखना, खेलना-कूदना और दूसरी Co-curriculum एक्टिविटीज़ ऐसी चीज़ें हैं कि अगर उनमें बैलेंस रखा जाए तो इन में दिलचस्पी रखने वाले बच्चे दूसरों के मुकाबले

ज़्यादा ज़ेहीन और समझदार होते हैं। डॉक्टर नताशा के मुताबिक बच्चों की उम्र में इन्सानी ज़ेहन तेज़ी से बहुत सी चीज़ों को सीख रहा होता है। इस बीच अगर उनके ज़ेहन की अच्छी परवरिश की जाए तो बच्चों में पॉज़िटिव सोच को बढ़ाया जा सकता है। ऐसे बच्चे हर मामले में खुदपैतमादी और समझदारी का सुबूत देते हैं।

## बच्चों को दोस्तों में घुलने-मिलने दीजिए

ये भी देखने में आता है कि आज कल पैरेंट्स बच्चों का बहुत ख़याल रखते हैं। ये न खाओ, ये न पियो, इन बच्चों के साथ न खेलो, यहाँ न जाना, वहाँ न जाना, होमवर्क कर लिया है या अभी कम्प्यूटर पर बैठे गेम्स खेल रहे हो? आज कल के पैरेंट्स का अपने बच्चों पर इतनी कड़ी नज़र रखना बच्चों के सेल्फ़-कॉन्फ़ीडेंस को कम कर रहा है।

ये पैरेंट्स सिर्फ़ इस डर से बच्चे को घर से बाहर दोस्तों में घुलने-मिलने नहीं देते कि न जाने बच्चा बाहर से क्या-क्या सीखकर आएगा और उनकी परवरिश धरी की धरी रह जाएगी। इसके अलावा ख़ानदान भर में उनके बच्चे की बदतमीज़ियों और शरारतों का ढिंढोरा भी पिटना शुरू हो जाएगा। हालांकि ऐसी बात हरगिज़ नहीं होती। पैरेंट्स को अपने बच्चों की परवरिश पर पूरा भरोसा होना चाहिए कि उनका बच्चा कहीं भी चला जाए, उनकी नेकनामी का सबब ही बनेगा। इन पैरेंट्स के एक अन्जाने ख़ौफ़ ने बच्चों की आज़ादी छीन ली है। अक्सर देखा गया है कि कभी-कभी ज़्यादा ख़याल रखना भी बच्चों के लिए नुक़सानदेह हो सकता है। बच्चे अपने पैरेंट्स की तरफ़ से इस क़दर तवज़्जोह पाकर परेशान हो जाते हैं और कभी-कभी तो वह ज़िद्दी और हटधर्म भी हो जाते हैं।

बहुत से पैरेंट्स की ख़्वाहिश होती है कि उनके बच्चे घर से बाहर न निकलें और स्कूल से आने के बाद घर की चारदीवारी के अन्दर ही



लिखें-पढ़ें, खेलें या दूसरे काम-काज में वक़्त गुज़ारें।

ऐसे पैरेंट्स बच्चों को बाहर निकलने और नए दोस्त बनाने से भी मना करते हैं। बच्चों की साइकॉलोजी के एक्सपर्ट्स कहते हैं कि इन्सान को दोस्तों की ज़रूरत हर वक़्त होती है, यहां तक कि ऐसे वक़्त में भी जब बच्चे दोस्ती के मतलब और मायनों को नहीं जानते, उन्हें तब भी अच्छे दोस्तों की ज़रूरत होती है।

पैरेंट्स चाहे बच्चों को कितना ही क्वालिटी टाइम क्यों न दें उन्हें फिर भी अपनी उम्र के दोस्तों की ज़रूरत होती है। पैरेंट्स और बच्चों में दोस्ती के साथ-साथ अदब और किसी हद तक डर का रिश्ता भी होता है।

पैरेंट्स बच्चों के कितने भी करीब क्यों न हों जाएं, बच्चा कभी भी उनके सामने उतनी बेतकल्लुफी से बात नहीं कर सकता, जितना वह अपने दोस्तों के बीच में करता है। बच्चे जितना अपने पैरेंट्स से सीखते हैं उस से कहीं ज़्यादा वह अपने दोस्तों से सीखते हैं। ख़ासतौर पर दोस्तों में घुलने मिलने से उन्हें लोगों का मिज़ाज और उनकी आदतें समझने में बहुत मदद मिलती है और ये चीज़ ज़िन्दगी भर उनके काम आती है।

बच्चे जितना सुकून, इत्मिनान और कॉन्फ़ीडेंस अपने साथियों और दोस्तों की कम्पनी में महसूस करते हैं उतना अपने पैरेंट्स के साथ नहीं कर पाते क्योंकि उन्हें उनके सामने एक तरह की शर्म और ख़ौफ़ महसूस होता है। बच्चों के यही दिन हंसने खेलने के होते हैं। इसलिए ऐसे सारे पैरेंट्स को चाहिए कि वह अपने बच्चों की परवरिश के बीच सख्ती के साथ-साथ हमदर्दानी और नर्म बरताव के साथ भी पेश आए।

हाँ, इस बात का ध्यान रखना ज़रूरी है कि बच्चा किन दोस्तों के साथ उठता बैठता है। अगर



# बच्चों के नाम अच्छे रखिए

कुछ नाम बहुत खूबसूरत, अच्छे मायने वाले होते हैं लेकिन कुछ नाम इतने भद्दे और बेमानी होते हैं कि उनको सुनकर कान उकता जाते हैं।

पैगम्बर इस्लाम<sup>ॐ</sup> बुरे नामों को सुनते ही बदल दिया करते थे। आप फरमाते हैं, “बाप का बेटे के लिए पहला तोहफा अच्छा नाम रखना है।”

एक दूसरी हदीस में फरमाया, “बच्चों के लिए अच्छे नाम चुनो क्योंकि क़यामत के दिन इन्हीं के जरिए पुकारे जाओगे और कहा जाएगा कि उठ ऐ फुल्लों बिन फुल्लों! तेरे साथ नूर है और उठ ऐ फुल्लों बिन फुल्लों! तू नूराणी नहीं है।”

नामों में नबियों, रसूलों और इमामों के नाम बेहतरीन नाम हैं।

इमाम बाकिर<sup>ॐ</sup> फरमाते हैं, “सब से अच्छा नाम वह है जिसमें खुदा की बंदगी का एहसास हो और बेहतरीन नाम नबियों के नाम हैं।”

जब आपको इमाम हसन<sup>ॐ</sup> की विलादत की खुशखबरी दी गई तो आप फौरन तशरीफ़ लाए। बच्चे को हाथों पे लिया, दाएं कान में अज़ान और बाएं में अक़ामत कही और हज़रत अली<sup>ॐ</sup> से फरमाया, “तुमने मेरे बेटे का नाम क्या रखा है?” अर्ज किया कि मेरी क्या मजाल कि आपसे पहले नाम रखूं। आपने फरमाया मैं भी अपने परवरदिगार से आगे नहीं बढ़ सकता। हज़रत जिब्रील नाज़िल हुए और कहा, “ऐ मुहम्मद! आपका परवरदिगार आपको सलाम कहता है और फरमाता है कि अपने इस बेटे का नाम हसन रखिए।” और आपका नाम हसन रख दिया गया।

इसी तरह इमाम हुसैन<sup>ॐ</sup> की विलादत के मौके पर भी हुआ। जब सातवां दिन हुआ तो आपने हुसैन नाम रखा और हज़रत फातिमा<sup>ॐ</sup> को बच्चे का सर मुंडाने और उसके बालों के बराबर चाँदी सदके में देने का हुक्म दिया जिस तरह उनके भाई इमाम हसन की विलादत के मौके पर किया जा चुका था।

आज के साइकैट्रेट और साइकॉलोजिस्ट भी कहते हैं कि इन्सान का अपने नाम के साथ बहुत गहरा रिश्ता होता है। अगर किसी का नाम खराब और भद्दा है तो यह नाम उसके कान से भी मुसलसल टक़राता रहता है जो उसके जेहन से होता हुआ उसकी पर्सनॉलिटी पर बहुत बुरा असर डालता है जिससे उसका अख़लाक़ और कैरेक्टर भी खराब हो जाता है।

इमाम काजिम<sup>ॐ</sup> फरमाते हैं, “सब से पहला एहसान जो कोई अपने बच्चे पर कर सकता है वह यह है कि उसका अच्छा नाम रखे।”

बहरहाल बर्थ सर्टिफिकेट पर लिखा हुआ नाम सिर्फ़ एक लपज़ नहीं है बल्कि ये बच्चे का एक पैदाइशी हक़ है जो उसकी शरियत को संवारता है और उसकी परेशान रूह उसके दिलकश मायने की वजह से ऐसे खिल उठती है जैसे बहार के फूलों की खुशबू सूँघ कर इन्सान का दिल शाद हो जाता है और रूह मुअत्तर हो जाती है।

## “

बच्चे की सेहत का भी कपड़ों से बहुत करीबी रिश्ता होता है। इसलिए बच्चों के कपड़े न तो टॉइट होने चाहिए और न ही बहुत ढीले बल्कि कपड़े इस तरह के हों कि बच्चा उनमें अपने आपको अच्छा फील करे और खेलकूद सके। बच्चों का लिबास “अपनी मदद आप” के उसूल पर बनाना चाहिए ताकि वह खुद ही अपने कपड़े पहन सके।

## ”

उसकी संगत खराब हो तो उसे उन दोस्तों से दूर रहने की सलाह दे सकते हैं।

## बच्चों के कपड़े सोच-समझ कर चुनिए

बच्चों के कपड़े खरीदते वक़्त कुछ बातों को ध्यान में रखना ज़रूरी है जिसमें सबसे खास बात ये है कि बच्चों के कपड़े आरामदेह और ढीले-ढाले होने चाहिए ताकि वह आसानी से खेलकूद सकें और उठ बैठ सकें। बच्चों के कपड़े खरीदते वक़्त बच्चों की ज़रूरतों को हमेशा ध्यान में रखिए जैसे उनका आराम, सेहत और खेल-कूद वगैरा।

लिबास, कपड़े की सख्ती के लिहाज़ से आरामदेह होना चाहिए, ज़्यादा सज़ल न हो वरना

चुभेगा। कपड़े का वज़न और डिज़ाइन भी बच्चे के लिहाज़ से होना चाहिए क्योंकि ज़्यादा भारी कपड़ों से बच्चा आज़ादी से खेलकूद नहीं सकता। कपड़े खरीदते वक़्त इस बात का भी ख़याल रखिए कि उसको पहन कर बच्चों का जिस्म अच्छा लगे, लिबास बेशक ढीला-ढाला हो लेकिन उसका डिज़ाइन ऐसा हो कि बुरा न लगे। इसी तरह बच्चों के जूते और मोज़े भी आरामदेह होने चाहिए।

बच्चे की सेहत का भी कपड़ों से बहुत करीबी रिश्ता होता है। इसलिए बच्चों के कपड़े न तो टॉइट होने चाहिए और न ही बहुत ढीले बल्कि इस तरह के हों कि बच्चा उनमें अपने आपको अच्छा फील करे और खेलकूद सके।

बच्चा अपने जिस्म से बड़े कपड़ों में भी आराम महसूस नहीं करता। इसलिए बच्चे के लिए ऐसे कपड़ों को चुनिए जो बिल्कुल फिट हों। अगर कपड़े टॉइट होंगे और बच्चे उनमें आराम महसूस नहीं करेंगे तो वह गुस्सेल और चिड़चिड़े हो जाएंगे क्योंकि आरामदेह लिबास बच्चों को आज़ादी और एक्टिव बनाए रखने में मदद देते हैं। अगर बच्चों का लिबास बहुत भारी या टॉइट होगा तो उन्हें एक्टिव रहने में मुश्किल होगी। बच्चों का लिबास “अपनी मदद आप” के उसूल पर बनाना चाहिए ताकि वह खुद ही अपने कपड़े पहन सकें और पहनाने के लिए किसी को परेशान न करें। इस से बच्चों को खुद कपड़े पहनना भी आ जाता है और उनका जिस्म भी एक्टिव रहता है। बच्चों के कपड़ों में ज़िप, हुक वगैरा नहीं होने चाहिए क्योंकि इस उम्र तक वह जिस्मानी और जेहनी तौर पर इस लायक नहीं होते कि वह खुद ही ज़िप और हुक लगा सकें। बच्चों को कपड़े जैसी मर्ज़ी हो पहनाइए लेकिन उनकी आसानी और आराम का ज़रूर ख़याल रखिए। ●





खानदाने रिसालत की मज़लूमियत जानने के लिए मक़तल पढ़ने और कूच-ए-बनी हाशिम का तसव्वुर ज़ेहन में लाने की कोई ज़रूरत नहीं है बल्कि जब आप अपने नबी की इतरत की ज़ियारत के लिए मस्जिदुन्नुबी की ठंडी फ़िज़ाओं और पुरशिकोह इमारत से चन्द ही कदम दूर हो जाती हैं तो आपको मिट्टी के छोटे-छोटे ढेर देखने को मिलते हैं जिनके ऊपर टेढ़े-मेढ़े पत्थर रखे हुए हैं, यही निशान हैं रसूले खुदा<sup>ॐ</sup> के ज़िगर गोशों के और यही मिसाल है अज़्रे रिसालत की अदाएगी की।

क़ब्रें तो ज़ाहिर में बड़ी ग़रीबो-बेकस और उजड़ी हुई हैं मगर इनमें दफ़न नूरे इलाही की रोशनी, चमक और ताबन्दगी इतनी है कि अंधेरो में जीने वाली ताक़तें इसे देखने की भी रवादार नहीं हैं और हर आन इन वीरान क़ब्रों को भी नज़रों से ओझल करने और छुपाने की कोशिश में लगी रहती हैं।

जन्नत के इन चार छोटे-छोटे टुकड़ों ने किसी का क्या बिगाड़ा है? जन्नतुल बक़ी कहां है?

“क़ब्रिस्ताने बक़ी” की तारीख़, इस्लाम से पहले के ज़माने की है। मदीने के लोग रसूले खुदा और मुसलमानों की हिज़रत से पहले अपने मुदों को कभी बनी सालिम के क़ब्रिस्तान में, कभी बनी हराम के क़ब्रिस्तान में और कभी अपने घरों के अहातों में दफ़नाया करते थे और कभी जन्नतुल बक़ी में, मगर मुसलमानों की हिज़रत के बाद जन्नतुल बक़ी जो मस्जिद के करीब ही था? मुसलमानों का आम क़ब्रिस्तान बन गया था।

अहलेबैत<sup>ॐ</sup> के चाहने वाले भी और दूसरे मुसलमान भी बक़ी के लिए अक़ीदत और एहतेराम के कायल हैं क्योंकि चार मासूम इमामों, हज़रत इमाम हसन<sup>ॐ</sup>, हज़रत इमाम सज्जाद<sup>ॐ</sup>, हज़रत इमाम बाकिर<sup>ॐ</sup>, हज़रत इमाम सादिक<sup>ॐ</sup>, जनाब

फ़ातिमा ज़हरा<sup>ॐ</sup>, अमीरुलमोमिनीन<sup>ॐ</sup> की वालिदा हज़रत फ़ातिमा बिनते असद, के साथ-साथ दूसरे बड़े-बड़े सहाबी भी इसी क़ब्रिस्तान में दफ़न हैं मगर सज़दियों के जकड़े हुए दिमाग़ और जुल्म की वजह से मुलसमान इस क़ब्रिस्तान की खुसूसियतों को जान ही नहीं पाते और इसकी बरक़तों से मालामाल नहीं हो पाते, जैसे सज़दियों ने दुनिया के मुसलमानों को उनके दीन की तारीख़ के झरोकों में झांकने से रोक रखा है।

1925 में सज़दियों के हाथों जन्नतुल बक़ी के इन्हेदाम से पहले इस मुक़द्दस क़ब्रिस्तान के दो दरवाज़े थे जिनमें से एक दरवाज़ा सुबह से शाम तक ज़ाएरीन के लिए खुला रहता था। यहीं पर कई हरम और मज़ार और भी थे।

मगर अफ़सोस! वह घड़ी भी आई जब 8 शव्वाल, 1343 हि० (मई 1925) को जन्नतुल बक़ी के मज़ारों को मुन्हदिम कर दिया गया। रसूल<sup>ॐ</sup> के मुक़द्दस मज़ार को भी ढाना चाहा मगर सज़दी अपने इस इरादे को पूरा नहीं कर सके।

हिजाज़ पर सज़दियों के कंट्रोल के बाद इस मुबारक मक़बरे की ज़ियारत के सिलसिले में बहुत ज़्यादा सख़्तियाँ की गईं। इस वक़्त ख़्वातीन के लिए इस क़ब्रिस्तान की ज़ियारत करना मना है और मर्द ज़ाएरीन भी सिर्फ़ नमाज़े सुबह के बाद एक घंटे तक और नमाज़े अस्र के बाद भी एक घंटे तक ही इस मुक़द्दस मुक़ाम पर हाज़िरी दे सकते हैं और इन दो घंटों में भी सज़दी अरब के शुर्ते बहाने-बहाने से ज़ाएरीन को अज़िय्यत और तकलीफ़ पहुँचाने के रास्ते तलाश करते रहते हैं।

### सज़दियों की अजीब हरकत

इतनी ज़्यादा सख़्तियों से भी सज़दियों को सुकून नहीं मिला और उन्होंने इन क़ब्रों को ज़ाएरीन की नज़रों से ओझल करने की कोशिश भी की और क़ब्रों के चारों तरफ़ लाल रंग की रुकावटें खड़ी कर दीं, 24 घंटों तक यह रुकावटें बाक़ी रखीं और ये भी एलान किया कि ये

रुकावटें हमेशा के लिए बाक़ी रहेंगी।

माजरा तब शुरू हुआ जब 22 अप्रैल 2009 को ज़ाएरीन नमाज़े फ़त्र के बाद जन्नतुल बक़ी में हाज़िर हुए तो उन्हें लाल रंग की ऊँची रुकावटों का सामना करना पड़ा जो क़ब्रों के चारों तरफ़ रखी गई थीं।

ये रुकावटें इस तरह से रखी गई थीं कि क़ब्रों की ज़ियारत नहीं की जा सकती थी। इस सूरते हाल के बाद अलग-अलग मुल्कों के ज़ाएरीन ने सज़दी हुक्मत के इस हुक्म के खिलाफ़ सख़्त एहतेजाज किया मगर सज़दी हुक्मरानों ने इसमें बदलाव का कोई भी सरकारी एलान नहीं किया।

ईरान की अलग-अलग शख़्सियतों और दुनिया भर की मुस्लिम कौमों की तरफ़ से सख़्त रिएक्शन का नतीजा ये सामने आया कि 23 अप्रैल को सुबह दस बजे सज़दी पुलिस ने रुकावटें हटा दीं और यूँ ज़ाएरीन की आँखें एक बार फिर नूरे आले मुहम्मद<sup>ॐ</sup> से रौशन हो गईं और ज़ाएरीन को एक तै जगह से ये मुक़द्दस क़ब्रें नज़र आने लगीं।

मगर ये 24 घंटे ही हम पर बहुत सख़्त गुज़रे।

सवाल ये है कि ये 85 साल दुनिया की औरतों की सरदार जनाबे फ़ातिमा ज़हरा<sup>ॐ</sup> के लख्ते ज़िगर और हमारे इमामे ज़माना के ऊपर कैसे गुज़रे होंगे?

खुदाया! हम अपने नबी<sup>ॐ</sup> के इस दुनिया से चले जाने, अपने इमाम<sup>ॐ</sup> की ग़ैबत, ज़माने की सख़्तियों, फ़ितनों की शिद्दत, अपने दुश्मनों की ज़्यादती और दोस्तों की कमी से तेरी बारगाह में शिकायत करते हैं और तेरी पनाह चाहते हैं!

पालने वाले मुहम्मद और आले मुहम्मद<sup>ॐ</sup> पर दुख़द भेज...और हमें वह दिन देखने की तौफ़ीक़ भी इनायत फरमा कि जब इन वीरान क़ब्रों पर आलीशान रोज़े तामीर हों! ●

इन चार वीरान  
क़ब्रों से  
उन्हें क्या ख़तरा है?



# औलाद की परवरिश



बच्चों की तरबियत और परवरिश का सबसे पहला स्कूल माँ की आगोश होती है। अल्लामा इक़बाल फ़रमाते हैं—

सीरते फ़रज़न्द हा अज़ उम्महात  
जौहरे सिद्को-सफ़ा अज़ उम्महात

यानी बच्चों का अच्छा या बुरा कैरेक्टर और अख़लाक माँ के हाथ में होता है, ये माँ ही है जो बच्चे को अच्छी आदतें सिखाती है।

आज जहाँ इन्सान ने साइंस में इतनी तरक्की की है अब वह स्पेस में छलांगें लगाता हुआ गैलेक्सी के दूसरे प्लैनेट्स पर अपने झंडे गाड़ रहा है, वहाँ इन्सानियत, हुमेन वैल्यूज़, अख़लाक, किरदार और रूहानियत में उसका ग्राफ़ बहुत तेज़ी के साथ नीचे की तरफ़ आ रहा है। ज़ाहिर है कि ये दुनियावी तरक्की आज के एज़ूकेशन प्रॉसेस का लॉजिकल रिज़ल्ट है जो होना ही था लेकिन ज़िंदगी की चौतरफ़ा तरक्की के लिए एक और चीज़ भी ज़रूरी होती है जिसको परवरिश कहते हैं। परवरिश इन्सान की ऐसी ज़रूरत है जो माँ की गोद से शुरू होती है। आज इन्सान उस जगह पहुँच चुका है जहाँ आज की मॉडर्न एज़ूकेशन का असली मक़सद अपने मुख़ालिफ़ों को जड़ से मिटा देना हो गया है। दुनिया की बड़ी ताक़तों के मौजूदा मन्सूबे इस बात की दलील हैं जो बराबर साइंसी तज़ुबों की शक़ल में सामने आ रहे हैं। इनके ज़रिए कोशिश की जा रही है कि ऐसे हथियार बनाए जाएँ जिनसे कम से कम वक़्त में ज़्यादा से ज़्यादा इन्सानों को नाबूद किया जा सके। इन सारे हालात की रोशनी में इन्सान की सही परवरिश की ज़रूरत दिन-बदिन बढ़ती जा रही है।

एज़ूकेशन और परवरिश में फ़र्क़ यह है कि एज़ूकेशन कहते हैं किसी चीज़ के सिखाने या समझाने को। जबकि परवरिश का मतलब होता है इन्सान की शख्सियत को बनाना और उसको सवांरना। परवरिश के ज़रिए अपनी पसन्द के मुताबिक़ लोग ढाले और तैयार किए जा सकते हैं

और नतीजे में समाज को बदला जा सकता है।

परवरिश के लिए ज़रूरी है कि यह एक सोचे समझे तरीके और एक अच्छी प्रोग्रामिंग के साथ अन्जाम पाए ताकि कामयाबी के साथ रिज़ल्ट्स भी सामने आएँ।

**परवरिश के लिए कुछ चीज़ें बहुत ज़रूरी हैं—**

(१) परवरिश करने वाला उस शख्स को अच्छी तरह पहचानता और समझता हो जिसकी उसे परवरिश करना है।

(२) परवरिश करने वाले की निगाह में परवरिश का कोई मक़सद होना चाहिए यानी उसको पता होना चाहिए कि वह कैसा इन्सान बनाना चाहता है।

(३) परवरिश के लिए परवरिश करने वाले के पास कोई प्रोग्रामिंग होना चाहिए यानी उसे पता होना चाहिए कि जैसी शख्सियत वह परवान चढ़ाना चाहता है उसके लिए किन हालात और शर्तों की ज़रूरत है। जब यह सारी शर्तें पूरी हो जाएँ तो पूरी लगन और ध्यान से काम शुरू करना चाहिए।

परवरिश करने के लिए सबसे अच्छा ज़माना बचपन का होता है क्योंकि इस ज़माने में बच्चे का ज़ेहन किसी भी चीज़ को कुबूल करने के लिए पूरी तरह तैयार होता है। ये ख़ास ज़िम्मेदारी पहली स्टेज में माँ-बाप के ज़िम्मे है।

परवरिश कोई आसान और सादा सा काम नहीं है बल्कि ये एक बहुत नाज़ुक और बारीक फ़न है जिसके लिए काम की पहचान, अच्छी मालूमात, तज़ुर्बा, सब्र, हौसले और पक्के इरादे की ज़रूरत है। अफ़सोस की बात ये है कि अक्सर माँ-बाप को पता ही नहीं होता कि परवरिश कैसे की जाती है। यही वजह है कि ज़्यादातर बच्चों की परवरिश किसी तय प्रोग्राम के तहत नहीं होती बल्कि यह बच्चे उन पौधों की तरह परवान चढ़ते हैं जो खुद बख़ुद बढ़ते हैं।

आज की दुनिया के डेवलपड मुल्कों में परवरिश को बहुत ख़ास माना जाता है। इन मुल्कों ने इस बारे में बहुत रिसर्च की है। उनके यहाँ इस फ़न के बहुत से एक्सपर्टीज़ मौजूद हैं जिन्होंने बड़ी अच्छी-अच्छी किताबें लिखी हैं लेकिन हमारे मुल्क में ज़िन्दगी के इस अहम मसले की तरफ़ कोई

“एज़ूकेशन और परवरिश में फ़र्क़ यह है कि एज़ूकेशन किसी चीज़ के सिखाने या समझाने को कहते हैं। जबकि परवरिश का मतलब होता है इन्सान की शख्सियत को बनाना और उसको सवांरना। परवरिश के ज़रिए अपनी पसन्द के मुताबिक़ लोग ढाले और तैयार किए जा सकते हैं और नतीजे में समाज को बदला जा सकता है। परवरिश के लिए ज़रूरी है कि यह एक सोचे समझे तरीके और एक अच्छी प्रोग्रामिंग के साथ अन्जाम पाए ताकि कामयाबी के साथ रिज़ल्ट्स भी सामने आएँ।”

“हर इन्सान की कामयाबी और बँबादी उसकी परवरिश से जुड़ी होती है और इस अजीम काम की ज़िम्मेदारी माँ-बाप के कंधों पर डाली गई है। सबसे अजीम ख़िदमत जो माँ-बाप अपने बच्चों के लिए कर सकते हैं, ये है कि उन्हें एज़ूकेटेड, सहेतमंद, मेहरबान, हमदर्द, बहादुर, समझदार, अच्छे ढंग से काम करने वाला, शरीफ़, ईमानदार, फ़र्ज़ को पढ़वाने वाला, मेहनती और ख़िदमत गुज़ार बनने की परवरिश दें।”



ख़ास ध्यान नहीं दिया गया है। ठीक है कि कुछ एक्सपर्टीज़ पाए जाते हैं और थोड़ी बहुत किताबें भी हैं लेकिन इनसे कुछ नहीं होने वाला। दूसरी ज़बानों जैसे इंग्लिश या हिन्दी में इस सब्जेक्ट पर जो किताबें हैं उनमें दो बड़े ऐब मौजूद हैं।

**पहला ऐब** ये है कि इन किताबों में इन्सानी ज़िन्दगी के रूहानी पहलू और आखिरत की ज़िन्दगी को नज़रअन्दाज़ करते हुए सिर्फ़ जिस्मानी-दुनियावी ज़िन्दगी की तस्वीर पेश की गई है। पश्चिमी दुनिया में परवरिश करने का इसके अलावा और कोई मकसद नहीं है कि बच्चे के बदन को मज़बूत बनाया जाए और ज़ेहन को तेज़ किया जाए ताकि जिस वक़्त वह बड़ा हो तो आराम से एक अच्छी ज़िन्दगी गुज़ार सके। इन किताबों में अगर अख़लाक़ के बारे में बात होती भी है तो वह भी सिर्फ़ इसी दुनियावी ज़िन्दगी के बारे में। आखिरत की कामयाबी या बर्बादी का कोई ज़िक्र नहीं होता यानी ये कहा जा सकता है कि इनमें अख़लाकी और रूहानी ज़िन्दगी के बारे में कुछ नहीं होता। **दूसरा ऐब** ये है कि पश्चिमी और आज की मॉडर्न दुनिया में परवरिश के मसाएल तजुबों और साइंस पर बेस करते हैं, दीन का उन पर कोई रंग नहीं होता।

इसलिए वहां माएं हमारे कल्चर के एतेबार से फ़ाएदेमन्द और मुकम्मल नहीं हो सकतीं क्योंकि एक मुसलमान की नज़र में इन्सान के दो पहलू होते हैं, एक जिस्म और दूसरा रूह यानी एक दुनियावी ज़िन्दगी और दूसरी आखिरत की ज़िन्दगी।

हर इन्सान की कामयाबी और बर्बादी उसकी परवरिश से जुड़ी होती है और इस अज़ीम काम की ज़िम्मेदारी माँ-बाप के कंधों पर डाली गई है। हकीक़त में माँ-बाप ही बच्चे को एक अच्छा इन्सान बना कर उसे कमाल तक पहुंचा सकते हैं। सबसे अज़ीम ख़िदमत जो माँ-बाप अपनी औलाद के लिए कर सकते हैं वह ये है कि उसे एजूकेटेड, सेहतमंद, खुश-अख़लाक़, मेहरबान, इन्सान दोस्त, हमदर्द, बहादुर, इंसाफ़-पसन्द, समझदार, अच्छे ढंग से काम करने वाला, शरीफ़, ईमानदार, अपने फ़र्ज़ को पहचानने वाला, मेहनती और ख़िदमत गुज़ार बनने की परवरिश दें।

“

**आयतुल्लाह ख़ामेनेई**

परवरिश अगर एजूकेशन से ज़्यादा अहम न हो तो कम भी नहीं है। हमारे बच्चों का तरो-ताज़ा, ख़ाली और सफ़ेद ज़ेहन सिर्फ़ कुछ लाइनें खींच देने और उस पर कुछ नम्बर लिख देने या तस्वीरें और डायग्राम बना देने से ही कामयाब ज़ेहन नहीं बन सकता, इसके लिए तरबियत बहुत ज़रूरी है। तरबियत ही असली परवरिश है।

”

माँ-बाप को चाहिए कि अपने बच्चे को इस तरह से ढालें कि वह दुनिया में भी कामयाब हो और आखिरत में भी। ऐसे ही माँ-बाप हकीक़त में अज़ीम मरतबे पर फ़ाएज़ हो सकते हैं न वह कि जिन्होंने एक जिन्सी जज़बे के तहत औलाद को वुजूद बख़्शा और उसे बड़ा होने के लिए छोड़ दिया कि जाओ, खुद बखुद अपनी परवरिश कर लो।

जो माँ-बाप अपनी औलाद की एजूकेशन और परवरिश की तरफ़ ध्यान नहीं देते हैं और अपने किरदार और लाइफ़-स्टाइल से उन्हें गुमराह बना देते हैं, बहुत बड़े मुजरिम हैं। ऐसे माँ-बाप से पूछना चाहिए कि क्या इस बेगुनाह बच्चे ने आपसे कहा था कि मुझे वुजूद बख़्शो। अब वजूद में लाने के बाद उसे गाए के बछड़े की तरह क्यों छोड़ दिया है। अब जबकि आप उसके माँ-बाप बन ही गए हैं तो शरई तौर पर और अक्ली तौर पर भी आप ज़िम्मेदार हैं कि उसकी एजूकेशन और परवरिश के लिए जो जान से कोशिश करें। इसीलिए एजूकेशन और परवरिश हर माँ-बाप की अज़ीम ज़िम्मेदारियों में से एक है।

इसके अलावा माँ-बाप समाज के सामने भी जवाबदेह हैं क्योंकि आज के बच्चे ही कल के मर्द और औरत हैं। कल का समाज वही बनाएंगे। आज जो सीखेंगे कल वही करेंगे। अगर उनकी परवरिश अच्छी हो गई तो कल का समाज एक अच्छा और ख़ूबसूरत समाज होगा और अगर आज की नस्ल ने ग़लत परवरिश पाई तो कल का समाज भी जहन्नम बन जाएगा। कल की पॉलिटिकल, एजूकेशनल, लिट्रेरी और सोशल शख़्सियतें इन्हीं में से सामने आएंगी। आज के बच्चे कल के माँ-बाप हैं यानी आज के बच्चे कल के परवरिश करने वाले होंगे और अगर इन्होंने अच्छी परवरिश पाई होगी तो अपनी औलाद को भी वैसा ही बना लेंगे और अगर उनकी परवरिश सही नहीं हुई होगी तो उनकी औलाद भी बद-अख़लाक़, कंजूस, बेईमान, क्रिमिनल और न जाने कैसी-कैसी बुराईयों में डूब जाएगी।

इसलिए अगर माँ-बाप चाहें तो आने वाले समाज को अच्छा बना सकते हैं और इसी तरह अगर चाहें तो उसे बुरा भी बना सकते हैं। इसका मतलब ये हुआ कि माँ-बाप की समाज के सामने भी एक ख़ास ज़िम्मेदारी है। अगर उन्होंने अपने





बच्चों की सही एजुकेशन और परवरिश कर दी तो उन्होंने समाज की एक बड़ी खिदमत की है जिसके लिए उन्हें सिला भी मिलना चाहिए और अगर वह इस मामले में ध्यान न दें और अपनी कोशिशें न करें तो न सिर्फ़ ये कि वह अपने मासूम बच्चों के गुनाहगार हैं बल्कि उन्होंने पूरे समाज के साथ ख़यानत की है।

एजुकेशन और परवरिश का मामला इतना अहम है कि माँ-बाप औलाद की परवरिश के लिए जो कोशिश करते हैं और जो मुसीबतें उठाते हैं वह सैकड़ों टीचरों, इंजीनियरों, डाक्टरों और आलिमों के कामों पर भारी हैं। ये माँ-बाप ही हैं जो एक अच्छा और नेक इन्सान परवान चढ़ाते हैं और एक लायक और दीनदार टीचर, डाक्टर और इंजीनियर वगैरा बनाते हैं।

ख़ास तौर पर माएं बच्चों की परवरिश के बारे में ज़्यादा ज़िम्मेदारी रखती हैं और परवरिश का बोझ उनके कंधों पर ज़्यादा रखा

“

### शहीद मुतहरी:

इसमें तो कोई शक ही नहीं है कि एजुकेशन और तरबियत का मक़सद बच्चों और समाज के सोचने और समझने की सलाहियत को परवान चढ़ाना है। एजुकेशन देने वाला कोई भी हो- चाहे टीचर हो या उस्ताद, मां हो या बाप, जाकिर हो या ख़तीब- उसकी कोशिश यह होना चाहिए कि वह अपने सामने वाले शरूख़ के अन्दर सोचने-समझने और अनैलिसिस करने का माददा पैदा करे, न यह कि उसका साया जोर सिर्फ़ इस पर हो कि बस याद कराया जाए, याद कराया जाए...और अगर ऐसा ही होता रहा तो न बच्चे को कोई फ़ाएदा होगा और न समाज को।

”

गया है। बच्चे अपने बचपन का ज़्यादा हिस्सा माओं के दामन में ही गुज़ारते हैं और आने वाली ज़िन्दगी के रुख़ की बुनियाद इसी ज़माने में पड़ती है। इसलिए समाज की कामयाबी या गुमराही और तरक्की या बर्बादी की कुंजी माओं के हाथ में है।

जो माँ-बाप पाक, नेक और अच्छे बच्चे परवान चढ़ाते हैं वह न सिर्फ़ ये कि अपनी औलाद और समाज की खिदमत करते हैं बल्कि खुद भी इसी दुनिया में अपने बच्चों की अच्छाईयों से फ़ाएदा उठाते हैं। नेक औलाद से माँ-बाप का सर ऊँचा उठता है और यही औलाद बुढ़ापे में उनका सहारा होती है। अगर माँ-बाप इनकी अच्छी परवरिश करेंगे तो इसी दुनिया में इसका रिज़ल्ट देख लेंगे और अगर इस मामले में ढीले पड़ गए तो यहीं इसका नुक़सान भी देख लेंगे। इसलिए जो लोग माँ-बाप बन जाते हैं उनके कंधों पर एक भारी ज़िम्मेदारी आ पड़ती है और ये ज़िम्मेदारी ऐसी है जो खुदा के हुज़ूर में भी है, समाज के सामने भी है और औलाद के सामने भी। अगर उन्होंने अपनी इस ज़िम्मेदारी को सही तरीक़े से पूरा कर लिया तो उनके लिए इस दुनिया में भी अज़्र है और आख़िरत में भी।

खुदा हमें तौफ़ीक़ दे कि हम ऐसी औलाद और ऐसे बच्चों की परवरिश कर सकें जो हमारे खुद के, हमारे समाज के और दीन के काम आ सकें! ●







## नए पैदा होने वाले बच्चों की फ़र्स्ट-ऐड

**न**ए पैदा होने वाले बच्चों को संभालना यकीनन एक फन है और ये फन तजुबों ही से आता है। पहले ज़माने में जब कम्बाइंड फैमिली सिस्टम था तो हर घर में तजुबेकार माएं, फूफियाँ या दादियाँ हुआ करती थीं। अब अकेले रहने वाले शादीशुदा जोड़े नए पैदा होने वाले बच्चों को संभालने में मुश्किलों का शिकार नज़र आते हैं। ये आर्टिकल ऐसे ही माँ-बाप के लिए लिखा गया है।

इस दुनिया में आँखें खोलने के बाद हर बच्चा नई से नई चीज़ों को जानने, समझने, हाथ लगाकर छूने, उम्र बढ़ने के साथ-साथ मुँह में लेकर चखने की कोशिश करता है। बच्चों का ये अन्दाज़ जहाँ उनके फलने-फूलने की तरफ़ बढ़ता हुआ अच्छा कदम होता है वहीं इस कोशिश में उन्हें बहुत सी परेशानियों और तकलीफों का भी सामना हो सकता है। पैरेंट्स अगर थोड़ा सा ध्यान दें तो उनके बच्चे बहुत हद तक महफूज़ रह सकते हैं। खुदा न करे अगर किसी बच्चे को कोई चोट लग जाए जो आमतौर पर बच्चों को लगती रहती है तो फ़ौरन एहतियाती तदबीरों के ज़रिए उसे फ़र्स्ट-ऐड दी जा सकती है। आइए देखें कि वह क्या तरीक़ों हो सकती हैं जिन पर किसी इमेरजेंसी की सूरत में आप अमल कर सकते हैं।

अगर आपका बच्चा ऐसी कोई चीज़ निगल ले जिसकी वजह से उसे साँस लेने में परेशानी हो रही हो तो आप क्या करेंगी?

**हल:** बच्चे को अपनी गोद में उलटा लिटाइए लेकिन खयाल रहे कि उसके सर को आपके हाथ का सहारा मिल रहा हो। बच्चे की कमर पर पांच-छः बार हलकी हलकी थपकियाँ दीजिए। अगर वह फिर भी उस चीज़ को न उगले तो उसे सीधा लिटाकर सीने पर भी थपकियाँ दीजिए। यहाँ तक कि वह चीज़ बाहर आ जाए जिसकी वजह से आपके लाडले या लाडली को साँस लेने में परेशानी हो रही है। अगर फिर भी कोई नतीजा न निकले तो बच्चे को फ़ौरन क़रीबी क्लीनिक या अस्पताल ले जाएं। बच्चे की उम्र एक साल से कम है तो उसके पेट पर थपकियाँ मत दीजिए।

अगर आपका बच्चा कोई जहरीली दवा पी ले तो आप को फ़ौरी तौर पर क्या करना है?

**हल:** बच्चे को फ़ौरन क़रीबी अस्पताल ले जाइए। जो दवा बच्चे ने ग़लती से पी है उसकी शीशी ज़रूर साथ ले लीजिए। अपने बच्चे की उम्र और उसकी मेडिकल हिस्ट्री आपको मालूम होना चाहिए क्योंकि डाक्टर बच्चे की जान बचाने के लिए ये सवाल आपसे ज़रूर मालूम करेंगे। बच्चे को न कुछ खिलाइए न पिलाइए और न ही उसे ज़बरदस्ती उल्टी करने पर मजबूर कीजिए। अगर आपने डाक्टरों को सही सूरतें हाल बता दी हैं तो वह बच्चे की ज़्यादा बेहतर देख भाल कर सकेंगे।

अगर बच्चे की गर्दन में रस्सी फंसे जाए तो क्या करना चाहिए?

**हल:** अपना माइंड कंट्रोल में रखिए। बहुत

एहतियात के साथ बच्चे को उठा कर रस्सी या डोरी उसकी गर्दन से निकाल लीजिए। अगर वह साँस न ले रहा हो तो फ़ौरन डाक्टर से मिलिए।

याद रखिए, घरों में ऐसा कोई तार या डोरी मत छोड़िए जो छोटे बच्चों की पहुँच में हो। आप जानती ही हैं कि एहतियात इलाज से बेहतर है।

बच्चा बेड से सर के बल गिर जाए तो क्या करना चाहिए?

**हल:** फ़ौरन अपने डाक्टर से मिलिए चाहे आपका बच्चा नार्मल ही क्यों न नज़र आ रहा हो। अगर सर से खून बह रहा हो तो ज़ख्म को इस तरह सख्ती से दबाए रखिए कि बच्चे को तकलीफ़ न हो। खुदा न करे अगर आपको ये ख़तरा हो कि गर्दन में चोट लगी है तो जितनी जल्दी हो सके, क़रीबी डाक्टर के पास ले जाइए।

डाक्टरी मुआयने के बाद भी 48 घंटे तक बच्चे के सोने और साँस लेने के अमल को चेक करते रहिए। अगर बच्चा सुस्त नज़र आ रहा हो, कै करे या चलने में लंगड़ाहट महसूस हो तो फ़ौरन उसे किसी अच्छे डाक्टर के पास ले जाइए।

### Infant CPR

अगर बच्चा साँस न ले रहा हो और न ही कोई हरकत कर रहा हो तो बच्चे के सीने पर अपनी बीच की और दूसरी उंगली रखिए, आहिस्ता-आहिस्ता उसे दबाइए, आधे इंच या एक इंच तक, डेढ़ सेकेंड तक CPR यानी मसनूई तनफ़ुस दीजिए। ऐसा उस वक़्त तक करती रहिए जब तक कि आप बच्चे को डाक्टर के पास लेकर न पहुँच जाएं।

आप अपने घर को बेबी प्रूफ़ बनाकर भी इमेरजेंसी सेंटर पर जाने से बच सकती हैं। बच्चे की तरह घुटनों के बल बैठकर अपने घर की चीज़ों पर नज़र डालिए। अगर किसी अलमारी में ऐसी चीज़ें रखी हैं जो बच्चे के लिए ख़तरनाक साबित हो सकती हैं तो उस ख़ाने को ताला लगाकर रखिए।

शीशे की चीज़ें, बिजली का सामान, लोहे के औज़ार, दवाएं, केमिकल, स्विच-बोर्ड वगैरा भी बच्चों की पहुँच से दूर रखना आपके बच्चे और खुद आपके लिए फ़ायदे का सौदा हो सकता है। घर की किसी जगह को चेक किए बिना मत छोड़िए, चाहे वह जगह आपके बच्चे की पहुँच से दूर ही क्यों न हो। अगर आप फ़्लैट में रहती हैं तो बालकनी-खिड़कियों का खयाल रखिए कि वहाँ से बच्चा बाहर न गिर जाए।

घर में हमेशा नीचे दी गई चीज़ें रखे रहिए ताकि किसी भी इमेरजेंसी में फ़र्स्ट-ऐड दे सकें:

1-थर्मामीटर 2-दूध पीने वाले बच्चों के लिए पेन-किलर, 3-बुखार कम करने के लिए बुखार उतारने वाली दवाएं, 4-अलग-अलग साइज़ की बेंडेज/टैप वगैरा और इस तरह की दूसरी चीज़ें। ●





# बच्चों के साथ रसूल का बर्ताव

अस्ताब चीख़ पुकार करने लगते मगर रसूल ख़ुदा<sup>ॐ</sup> उनको रोक देते थे कि बच्चे पर चीख़ो नहीं और उसको अपनी गोद से अलग भी नहीं करते थे।

जब वह पेशाब कर लेता था तब आप बच्चे को उसके माँ-बाप को वापस करते थे और फिर अपने कपड़ों को पाक करते थे।

आपने फ़रमाया है कि अपनी औलाद का एहतेराम करो और उसके साथ अच्छी तरह से पेश आया करो।

एक दिन रसूल ख़ुदा<sup>ॐ</sup> मस्जिद में तशरीफ़ लाए। इमाम हसन<sup>ॐ</sup> भी आपके साथ थे। आपने इमाम हसन को अपने बराबर बिठाया और नमाज़ जमाअत शुरू कर दी। जब आप सजदे में गए तो सजदे से सर उठाने में बहुत देर हो गई, एक शख्स का कहना है कि मैंने सजदे से सर उठाकर देखा तो इमाम हसन<sup>ॐ</sup> अपनी जगह से उठकर रसूल की पीठ पर सवार हो गए थे। जब नमाज़ ख़त्म हुई तो लोगों ने रसूल से अर्ज़ किया कि हम ने ऐसा सजदा कभी नहीं देखा हम समझे कि आप पर “वही” नाज़िल हो रही है। आपने फ़रमाया, “वही”

नाज़िल नहीं हुई थी बल्कि हसन मेरी पीठ पर सवार हुए थे मैंने इन्तिज़ार किया कि बच्चा खुद बख़ुद मेरी पीठ से उतर आए तब सर उठाऊँ”।

इसी तरह एक रोज़ इमाम हुसैन<sup>ॐ</sup> के साथ भी हुआ कि रसूल ख़ुदा<sup>ॐ</sup> नमाज़ पढ़ रहे थे। जब रसूल सजदे में जाते तो इमाम आपकी पीठ पर सवार हो जाते और रसूल जब उठना चाहते तो इमाम हुसैन<sup>ॐ</sup> को उठाकर अपने बराबर में ज़मीन पर लिटा देते। जब आप फिर सजदे में जाते इमाम दोबारा आप पर सवार हो जाते। पूरी नमाज़ ये सिलसिला चलता रहा। एक यहूदी ये सब देख रहा था। नमाज़ ख़त्म होने के बाद वह रसूल के पास आया और कहने लगा कि आप अपने बच्चों के साथ जिस तरह पेश आते हैं हम कभी इस तरह पेश नहीं आते। आपने जवाब दिया कि अगर तुम भी ख़ुदा और रसूल पर ईमान रखते तो तुम भी बच्चों के साथ मेहरबानी और मुहब्बत से पेश आते। वह यहूदी कहने लगा कि मैं अभी ख़ुदा और रसूल पर ईमान लाता हूँ। रसूल की बच्चों से मुहब्बत और मेहरबानी को देख कर उसका दिल नर्म हो गया और वह मुसलमान हो गया।

ख़ुदा ने बच्चों की सूरत में अपनी एक बहुत बड़ी नेमत इन्सान को अता की है और उनकी सही तरबियत और परवरिश का हुक्म दिया है क्योंकि बच्चे ही किसी कौम, समाज और मुल्क का फ़यूचर होते हैं। अगर उनकी परवरिश में कमी रह गई तो वह ख़ानदान, कौम, समाज और यहाँ तक कि पूरे मुल्क को बर्बादी की कगार तक ले जा सकते हैं और अगर उनकी परवरिश सही हुई तो वह एक बेहतरीन समाज, तरक्की याफ़ता मुल्क और मार्टन और कल्चर्ड कौम बनकर उभरते हैं।

इस्लाम ने बच्चों की परवरिश पर बहुत ज़ोर दिया है और खासकर रसूल अकरम<sup>ॐ</sup> बच्चों के साथ बहुत मुहब्बत और हमदर्दी का रवैया रखते थे। यहाँ पर रसूल अकरम<sup>ॐ</sup> के बच्चों के साथ बर्ताव के कुछ नमूने पेश किए जा रहे हैं।

## (1) बच्चों से मुहब्बत और उनका एहतेराम

एक रोज़ रसूल ख़ुदा<sup>ॐ</sup> ने किसी बच्चे को गोद में बिठा लिया। बच्चे ने आपके लिबास पर पेशाब कर दिया। उसकी माँ ने उसे जल्दी से रसूल की गोद से छीन लिया जिसकी वजह से बच्चा रोने लगा। आपने फ़ौरन उससे कहा कि ऐसा मत किया करो। मेरे कपड़े तो पानी से पाक हो जाएंगे लेकिन तुम्हारे चीख़ने और इस तरह बच्चे को खींचने से जो असर उसके नाज़ुक से दिल पर पड़ा है उसे किसी चीज़ से दूर नहीं किया जा सकता।

रसूल<sup>ॐ</sup> की इस बात से समझ में आता है कि दूध पीता बच्चा भी हमदर्दी और प्यार को समझता है, सख़्ती और गुस्सा उस पर असर डालते हैं।

रसूल ख़ुदा<sup>ॐ</sup> का ये रवैया सारे ही बच्चों के साथ था। बहुत से लोग अपने बच्चों का नाम रखवाने के लिए उन्हें रसूल के पास लेके आते थे। रसूल बच्चों को अपनी गोद में बिठा लेते थे। अक्सर ऐसा हो जाता था कि बच्चा आपकी गोद में पेशाब कर देता और उसके माँ-बाप या आपके







इमाम सादिक<sup>ॐ</sup> से रिवायत है कि एक बार रसूल ख़ुदा<sup>ॐ</sup> नमाज़े ज़ोहर बजा ला रहे थे। आपके पीछे बहुत से मुसलमान भी नमाज़ पढ़ रहे थे। आख़िर की दो रकअत नमाज़ आपने बहुत जल्दी पढ़ ली। लोगों ने नमाज़ के बाद आप से पूछा, “या रसूलुल्लाह! नमाज़ के बीच में कोई खास बात हो गई थी क्या?” रसूल ने कहा कि क्यों क्या हुआ? लोगों ने कहा कि आप ने आख़िरी दो रकअतें बहुत जल्दी पढ़ा दीं? आपने फ़रमाया, “क्या तुम ने बच्चे के रोने की आवाज़ नहीं सुनी?”

इस जगह रसूल<sup>ॐ</sup> ने बच्चे के रोने की वजह से नमाज़ जल्दी पढ़ ली ताकि लोग जाकर बच्चे को चुप करा सकें और दूसरी जगह बच्चे के एहतेराम की ही वजह से नमाज़ के सजदे को लम्बा कर दिया।

(2) एक दिन रसूल ख़ुदा<sup>ॐ</sup> बैठे हुए थे। इमाम हसन<sup>ॐ</sup> और हुसैन<sup>ॐ</sup> आते हुए दिखाई दिए। आप अपनी जगह से खड़े हुए और उनके पहुँचने का इन्तेज़ार करने लगे। बच्चे धीरे-धीरे चल रहे थे इसलिए रसूल ख़ुदा<sup>ॐ</sup> खुद उनकी तरफ़ बढ़े। उन्हें अपनी गोद में उठाया और अपने कन्धों पर बिठा लिया और चलने लगे और फ़रमाया कि मेरे बच्चों! तुम्हारी सवारी कितनी अच्छी है और तुम कितने बेहतरीन सवार हो।

दूसरे मुसलमानों के बच्चे भी आपकी इस मुहब्बत और एहतेराम से महरूम नहीं थे। एक रोज़ आप किसी सफ़र से वापस हो रहे थे कि रास्ते में कुछ बच्चे नज़र आए। आप उनके एहतेराम में रुक गए फिर आपने बच्चों को अपने पास लाने को कहा। आपके सहाबी बच्चों को उठाकर आपको देते, आप किसी को गोद में बिठाते और किसी को कन्धे पर बिठा लेते थे। फिर आपने अस्हाब से फ़रमाया कि बच्चों को

गोद में लिया करो और अपने कन्धों पर बिठाया करो।

बच्चे आपके इस बर्ताव से बहुत खुश हुए।

### (3) बच्चों को सलाम करना

अगर बच्चा बड़े को सलाम करे तो उसे उसके सलाम का बहुत अच्छी तरह जवाब देना चाहिए। अगर उसके सलाम का जवाब रवा-रवी में दिया जाए तो इससे बच्चे को अपनी तौहीन का एहसास होता है और उसको इससे तकलीफ़ पहुँचती है।

रसूल ख़ुदा<sup>ॐ</sup> एक दिन कुछ बच्चों के पास से गुज़रे। आपने बच्चों को सलाम किया और कुछ खाने को दिया और फ़रमाया कि पाँच चीज़ें ऐसी हैं जिनको मैं मरते दम तक नहीं छोड़ूँगा। उन्हीं में से एक बच्चों को सलाम करना है। मैं चाहता हूँ कि मेरे बाद मेरी ये सुन्नत मुसलमानों में बाकी रहे और वह भी इस पर अमल करें।

रसूल ख़ुदा<sup>ॐ</sup> ने बच्चों के साथ अच्छे सुलूक के लिए बहुत कुछ कहा है और इस पर खुद भी अमल किया है। बच्चों से मुहब्बत करने, मेहरबानी से पेश आने, उनसे किए हुए वादों को पूरा करने, उन्हें प्यार करने, उनके सर पर हाथ फेरने पर बहुत ज़ोर दिया है। आप हर सुबह बच्चों के सर पर हाथ फेरा करते थे।

### (4) रसूल ख़ुदा<sup>ॐ</sup> की मेहरबानी

ईद का दिन था, ज़शन का समाँ था,

लोग ग़रीबों की मदद कर रहे थे,

फ़ितरा और

सदका तकसीम

हो रहा था। ईद

की नमाज़ ख़त्म

हुई, दुआ और ईद का

खुतबा भी हुआ। इसके बाद मिठाई

वगैरा तकसीम हुई। इस ज़शन और खुशी के

माहौल में रसूल<sup>ॐ</sup> की नज़र एक बच्चे पर पड़ी

जो एक खज़ूर के पेड़ के नीचे मैले कुचैले

कपड़ों में बैठा हुआ था और उन बच्चों को

देख रहा था जो ज़शन में शरीक थे। आप समझ

गए कि ये बच्चा यतीम है आप उठे और बच्चे

के पास गए और मुस्कुराते हुए फ़रमाया कि

आज मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा बाप बनकर

तुम्हारे साथ रहूँ। फिर बच्चे को ज़मीन से

उठाया और अपनी गोद में ले लिया उसको

इतना लाड़-प्यार किया कि बच्चा खुश हो गया

और मुस्कुराने लगा और फिर आपके साथ

ज़शन में शरीक हो गया।

### (5) बच्चों के साथ खेलकूद

आपने फ़रमाया कि जिस शख्स के पास कोई बच्चा हो उसे उसके साथ बच्चा बनकर उसकी परवरिश करना चाहिए। एक शख्स रसूल<sup>ॐ</sup> की ख़िदमत में किसी जगह दावत में जाने के लिए निकला। उसने देखा कि घर के सामने इमाम हुसैन<sup>ॐ</sup> खेल रहे थे। कुछ ही देर बाद रसूल ख़ुदा<sup>ॐ</sup> भी बाहर तशरीफ़ लाए। जब आपने इमाम हुसैन<sup>ॐ</sup> को देखा तो हाथ फैलाकर उनकी तरफ़ बढ़े ताकि उनको पकड़ लें मगर इमाम हुसैन<sup>ॐ</sup> हंसते हुए इधर-उधर भागने लगे। रसूल ख़ुदा<sup>ॐ</sup> भी हंसते हुए आपके पीछे भागे और आपको पकड़ लिया फिर गोद में उठाकर प्यार किया।

लोगों के बीच रसूल<sup>ॐ</sup> का ये बर्ताव इसलिए था क्योंकि आप समझाना चाहते थे कि माँ-बाप का फ़रीज़ा जहाँ अपने बच्चों की अच्छी परवरिश करना है वहीं उनके साथ खेलना और उनको खुश रखना भी है। ●





इमाम सादिक<sup>अ०</sup> का ज़माना वह ज़माना था जिसमें जहाँ एक तरफ़ पोलिटिकल उथल-पुथल मची हुई थी तो दूसरी तरफ़ फ़िक्री और अकीदती मुश्किलें और तरह-तरह के शक समाज में जन्म ले रहे थे। इसलिए ऐसे हालात में इमाम<sup>अ०</sup> के लिए ज़रूरी था कि तीरों और तलवारों की जंग का रुख़ मोड़कर इस नये मोर्चे से एक नयी इल्मी और फ़िक्री जंग की शुरूआत करें।

दूसरी सदी हिजरी के पहले पाँचवे दशक का वह ज़माना कि जिसमें इमाम सादिक<sup>अ०</sup> ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, इमाम हुसैन<sup>अ०</sup> के ज़माने यानी पहली सदी हिजरी के पहले पाँच दशकों से काफी अलग था। पहली सदी हिजरी के इन पहले पाँच दशकों में अगर एक मुसलमान, इस्लाम और मुसलमानों के लिए कुछ करना चाहता था तो उसको सिर्फ़ एक मोर्चे से लड़ना पड़ता था और वह मोर्चा गुमराह हो चुकी ख़िलाफ़त के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाना था। इसके अलावा अभी और दूसरे मोर्चे सामने नहीं आ सके थे या अगर आए भी थे तो उनकी इतनी अहमियत नहीं थी। अभी तक जो कुछ भी हो रहा था वह ख़िलाफ़त और हुकूमतों के इर्द-गिर्द हो रहा था और ज़्यादातर लोग अभी भी शुरुआती दौर के इस्लामी तरीकों की ज़िन्दगी जीने के आदी थे। लेकिन बाद में अलग-अलग वजहों से धीरे-धीरे जैसे-जैसे लोगों की फ़िक्र और सोच बदलती और फैलती गयी, नए-नए इल्मी और फ़िक्री मोर्चे उभर कर इस्लामी समाज में सामने आते गए।

इस तरह धीरे-धीरे कई अलग-अलग ग्रुप और फ़िर्के उसूलें दीन और फ़ुरूए दीन में पैदा हो गए। जैसा कि एक हिस्टोरियन ने लिखा है, “अब समाज में मुसलमान जंग के मैदान और तलवारों के बजाए इल्मी और कल्चरल मैदान को फ़तह करने की तरफ़ ज़्यादा ध्यान देने लगे थे। इस्लामी लिटरेचर और तालीमात अब तरक्की की तरफ़ आगे बढ़ने लगे थे। यह वह ज़माना था कि जब बनी उमय्या और बनी अब्बास आपस में हुकूमत के लिए लड़ रहे थे जिसकी वजह से एक हद तक इस्लामी तालीमात को फैलाने में भी मुश्किल हो रही थी लेकिन दूसरी तरफ़ मुसलमानों के बीच हकीकत को समझने और रिसर्च करने का जोश और

## इमाम<sup>अ०</sup> सादिक<sup>अ०</sup> के ज़माने के समाजी हालात

■ शहीद मुतहरी



वलवला भी पैदा हो चुका था। इसलिए ज़रूरी था कि इमाम सादिक<sup>अ०</sup> जैसी शख्सियत इस इल्मी और फ़िक्री मोर्चे की रहबरी करे और अपने बेपनाह इल्म को लोगों के बीच आम करे और लोगों के बीच उन सारी अख़लाक़ी-फ़िक्री बातों और इस्लामी तालीमातो-अहक़ाम वगैरा को फैलाए जिनकी लोगों को सख़्त ज़रूरत थी। इससे पहले के ज़मानों में न तो लोगों में इतनी समझ ही थी और न ही जोश और वलवला।

इमाम सादिक<sup>अ०</sup> की ज़िन्दगी में एक मौक़ा ऐसा भी आता है जब आपके पास इब्ने अबिल औजा, अबूशाकिर दीसानी और यहाँ तक कि इब्ने मुकफ़्फ़ा जैसे खुदा का इन्कार करने वाले लोग भी आते हैं, आपसे बहस और मुनाज़ेरा करते हैं और अपने बहुत से सवालों के जवाब लेकर वापस जाते हैं। तारीख़ की किताबों में इमाम<sup>अ०</sup> के इस तरह के बहुत से मुनाज़ेरे और बहसों मौजूद हैं जिनको पढ़कर इन्सान ताज्जुब में पड़ जाता है कि आपके पास आख़िर कितना इल्म था। तौहीदे मुफ़ज़्ज़ल इसी तरह की एक अज़ीम किताब है जिसके बारे में मिलता है कि इस किताब में वह सवाल-जवाब हैं जो इमाम के एक बड़े सहाबी, मुफ़ज़्ज़ल और खुदा का इन्कार करने वाले एक शख्स के बीच हुए थे और जिन सवालों के जवाब मुफ़ज़्ज़ल ने इमाम<sup>अ०</sup> से पूछ-पूछ कर उसको दिए थे।

दूसरी तरफ़ मिलता है कि मोतज़िला फ़िर्के के बड़े-बड़े लोग जैसे अग्र बिन अबीद और वासिल बिन अता इमाम की ख़िदमत में तौहीद और दूसरे समाजी इश्यूज़ का हल पाने के लिए आते थे और इन इश्यूज़ पर आपसे डिस्कस करते थे। ये लोग कोई मामूली आदमी नहीं होते थे बल्कि अपने ज़माने में इल्मी और फ़िक्री शख्सियत हुआ करते थे।

इतना ही नहीं बल्कि तारीख़ में मिलता है कि आपके ज़माने के अक्सर बड़े फ़कीह और उलमा या तो आपके शाग़िर्द हुआ करते थे या आपकी ख़िदमत में सवालों के जवाब पाने के लिए आया करते थे।

इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मालिक दोनों इमाम सादिक<sup>अ०</sup> के ज़माने में थे और दोनों ही ने इमाम<sup>अ०</sup> से बहुत कुछ सीखा था। इमाम शाफ़ई और इमाम अहमद बिन हम्बल तो इमाम



सादिक<sup>ॐ</sup> के शगिर्दों के शगिर्द थे। इमाम मालिक मदीने में रहते थे और बराबर इमाम सादिक<sup>ॐ</sup> की खिदमत में आते थे। इमाम मालिक, हज़रत इमाम सादिक<sup>ॐ</sup> के बारे में कहते हैं, “आप अल्लाह के बुजुर्ग और बड़े बन्दों में से थे, मुत्तकी और परहेज़गार थे और आपके दिल में खौफ़े खुदा बहुत ज़्यादा था। आप ऐसे शख्स थे जिन्हें रसूले खुदा<sup>ॐ</sup> की बहुत सी हदीसों का इल्म था, आप<sup>ॐ</sup> बहुत खुशमिज़ाज थे और आपके इल्मी जलसे बहुत फ़ाएदेमन्द हुआ करते थे।”

इमाम अबू हनीफ़ा कहते हैं, “हज़रत इमाम सादिक<sup>ॐ</sup> से ज़्यादा फकीह और आलिम शख्स मैंने नहीं देखा।” इसके बाद आगे बढ़कर कहते हैं, “जिस वक़्त इमाम सादिक<sup>ॐ</sup> मन्सूर के बुलाने पर इराक़ तशरीफ़ लाए, मन्सूर ने मुझसे कहा कि इमाम<sup>ॐ</sup> से पूछने के लिए ऐसे इश्यूज़ और सवाल तैयार करूँ जो बहुत ज़्यादा सज़्त हों। मैंने चालीस बहुत टफ़ इश्यूज़ और सवाल तैयार किए और फिर उनको लेकर मजलिस में जा पहुँचा। मन्सूर ने मेरा तआरुफ़ कराया। इमाम<sup>ॐ</sup> ने फरमाया कि हाँ, मैं पहचानता हूँ, वह मेरे पास आ चुके हैं। उसके बाद मैंने मन्सूर के हुक्म से उन इश्यूज़ और सवालों को पेश किया जो मैंने तैयार किये थे। इमाम ने हर सवाल के जवाब में फरमाया कि तुम इराक़ के उलमा का इस मसले में ये अक़ीदा है, मदीने के उलमा का इस मसले में ये अक़ीदा है, और खुद कभी कभार मेरी भी तार्ज़द करते थे और कभी मदीने के उलमा की और कभी-कभी एक तीसरी राय भी बयान करते थे।

इसी तारीख़ में यह भी मिलता है कि सुफ़ी हज़रात आपकी खिदमत में आते थे और सवालों के जवाब लेकर वापस जाया करते थे।

इमाम सादिक<sup>ॐ</sup> का ज़माना वह ज़माना था जिसमें तरह-तरह के फ़िक़्री और अक़ीदती नज़रियों की जंग शुरू हो चुकी थी और अब ज़रूरत इस बात की थी कि इमाम<sup>ॐ</sup> अपनी स्ट्रेटजी को इस महाज़ से शुरू करें और अपने आपको इस फ़िक़्री और अक़ीदती मोर्चे पर सामने लेकर आएँ। आपने हमेशा इस बात का ख़्याल रखा कि जो क़दम भी उठाया जाए वह ऐसा हो जिसके रिज़ल्ट्स सामने आएँ। जिस तरह इमाम हुसैन<sup>ॐ</sup> जानते थे कि आपकी शहादत का असर और फ़ाएदा होगा तो आपने व़्याम फरमाया और शहीद हो गए जिसका असर आज तक बाक़ी है।

इमाम सादिक<sup>ॐ</sup> ने देखा कि यह मौक़ा

इस्लामी टीचिंग्स और इस्लामी अहक़ाम को फैलाने का बेहतरीन मौक़ा है और आपने अपनी कोशिशें इसी में लगा दीं। बग़दाद शहर जो इस्लाम के शुरुआती ज़माने में एक बहुत बड़ा और मशहूर एज़ूकेशनल सेंटर था उसकी बुनियाद इमाम<sup>ॐ</sup> ही ने रखी थी। तारीख़ में मिलता है कि इमाम<sup>ॐ</sup> अपनी उम्र के आखिरी ज़माने में बग़दाद तशरीफ़ ले गए थे। जिसका असर यह हुआ कि शिया दूसरे इस्लामी फ़िरकों से आगे नज़र आने लगे और इस्लामी उलूम के बानी और माहिर हो गए और या कम से कम दूसरे इस्लामी फ़िरकों के कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ने लगे थे और इल्मी मैदान की सभी ब्रांचेस चाहे वह लिट्रेरी मैदान हो या तफ़सीर, फ़िक़ही मैदान या थियॉलोजी, फ़िलॉसफ़ी हो या इरफ़ान, मैथमैटिक्स हो या हिस्टरी या ज़्योग्रफ़ी सभी मैदानों में माहिर हो गए थे। जिसका रिज़ल्ट यह सामने आया कि बहुत सी किताबें लिखी गईं और बड़े-बड़े स्कॉलर और उलमा इस्लामी दुनिया में पैदा हुए।

आज अगर हम देख रहे हैं कि दुनिया भर के रिफ़ॉर्मिस्ट शिया मज़हब को हज़ार सालों के बाद बाकाएदा तौर पर कुबूल कर रहे हैं तो यह इसीलिए है कि शिया मज़हब दरहकीक़त एक हकीक़ी इस्लामी स्कूल ऑफ़ थॉट है। ज़िंदगी की हर फ़ील्ड में शियों की किताबें इस बात को साबित करती हैं कि अब वह ज़माना नहीं रहा कि जब इस फ़िरके पर सियासी इलज़ाम लगाए जाते रहे थे। यह जो सारी की सारी किताबें और हमारी इल्मी विरासत आज दुनिया के सामने मौजूद हैं यह सिर्फ़ शियों के ईमान और अक़ीदे की बिना पर हैं। ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता कि यह इतनी बड़ी इस्लामी धरोहर महज़ एक पॉलिटिकल बैकग़्रॉउंड की वजह से वजूद में आ गई हो। पॉलिटिक्स इतनी बड़ी-बड़ी फ़िक़ही, फलसफ़ी और तफ़सीरी और हदीसी किताबें नहीं लिख सकती। आज दुनिया में शियों की जो भी इज़्ज़त और मुक़ाम है वह सब इमाम सादिक<sup>ॐ</sup> की कोशिश और मेहनतों की वजह से है।

इन सारी चीज़ों को बयान करने का मक़सद सिर्फ़ यह है कि हमारे इमामों ने हर ज़माने में उस ज़माने के हालात को नज़र में रखते हुए इस्लाम और मुसलमानों की तरक्की के लिए हर मुमकिन कोशिश की है और यही नहीं, इस काम को हर इमाम ने बड़ी सूझबूझ और स्ट्रेटजी के साथ पूरा किया है। अगर हालात और ज़माने में ज़रा सा भी बदलाव नज़र आता था तो आप हज़रात भी अपने तरीक़े, अन्दाज़ और स्ट्रेटजी

अलग-अलग ज़मानों में हमारे इमामों का अलग-अलग मोर्चों से अलग-अलग तरह से जंग करने का तरीक़ा न सिर्फ़ यह कि इमामों के बीच किसी इज़्तिलाफ़ का इशारा नहीं है बल्कि यह तो उन लोगों के लिए एक बेहतरीन दर्स और तज़ुर्बा है जिनकी रूढ़, अक्ल और सोच सही रास्ते पर है।

को हालात, इस्लाम और मुसलमानों की हकीक़ी ज़रूरत को नज़र में रखते हुए बदल लिया करते थे।

अलग-अलग ज़मानों में हमारे इमामों का अलग-अलग मोर्चों से अलग-अलग तरह से जंग करने का तरीक़ा न सिर्फ़ यह कि इमामों के बीच किसी इज़्तिलाफ़ को नहीं दिखाता है बल्कि यह तो उन लोगों के लिए एक बेहतरीन दर्स और तज़ुर्बा है जिनकी रूढ़, अक्ल और फ़िक़र सही रास्ते पर है यानी यह कि हमारे इमामों का अपने ज़माने के हालात के एतेबार से आगे बढ़ना इस चीज़ को ज़ाहिर करता है कि कोई भी समझदार और अक्ल रखने वाला इंसान आसानी से समझ सकता है कि एक वक़्त वह था जब इस्लाम को खून की ज़रूरत थी तो इमाम हुसैन<sup>ॐ</sup> ने बढ़ के शहादत को गले लगा लिया था और फिर एक वह ज़माना आया कि इमाम सादिक<sup>ॐ</sup> ने अपने ज़माने में हालात से फ़ाएदा उठाते हुए इस्लामी टीचिंग्स और उलूम को इतना फैलाया कि आज शिया मज़हब बाकाएदा एक स्कूल ऑफ़ थॉट की तरह पहचाना जा रहा है। इसी तरह दूसरे इमामों ने भी अपने-अपने ज़माने और हालात के एतेबार से इस्लाम को बचाने और फैलाने की भरपूर कोशिशें कीं। ●



# बच्चों के साथ लगना पड़ता है

अपने बच्चे से पैरेंट्स को बहुत सी उम्मीदें होती हैं जैसे:-

बच्चा अपने पैरेंट्स और दूसरे बड़ों का एहतेराम करे।

बच्चा खुद अपने लिए और समाज के लिए फायदेमन्द हो।

बच्चा अच्छी एजुकेशन हासिल करे, अच्छा रोजगार पाए वगैरा।

हम सभी ये जानते हैं कि बच्चे के बदन पर सिर्फ कपड़े पहना देना या मेज़ पर उसके लिए खाना रख देना काफी नहीं है बल्कि पैरेंट्स और समाज दोनों ही की बच्चों से बहुत सारी डिमांड्स होती हैं और उसके लिए पैरेंट्स बहुत कुछ करते भी हैं लेकिन हमारी सारी ख्वाहिशें हमेशा पूरी नहीं होती।

जिसकी कई वजहें हो सकती हैं जैसे:-

हम ने बच्चे के लिए साफ़ और क्लियर बाउंडेशन नहीं लगाई है।

हम ने बच्चे के साथ ज़्यादा वक्त नहीं गुज़ारा है।

हम ने बच्चों के लिए मौक़ा फ़राहम नहीं किया है।

हम ने बच्चे की सलाहियत और क़ाबलियत का ज़्यादा (ग़लत) अन्दाज़ा लगा लिया है।

बच्चे की ख्वाहिश और ज़रूरत ध्यान में रखे वगैर हम ने बच्चे से अपनी ख्वाहिशें जोड़ रखी हैं।

हम ने बच्चे की बात को सुना ही नहीं है।

बच्चे को ज़्यादा ज़िम्मेदारियां सौंप दी हैं।

बच्चे की डिफेंसिव सोच और फ़िक्क को एक्टिव नहीं किया गया है।

एक बहुत अहम चीज़ जो बच्चे की परवरिश के लिए बहुत ज़रूरी है वह घर में बच्चे की परवरिश के बारे में एक राय का बनना है। पैरेंट्स को इसके बारे में आपस में बातचीत करना चाहिए है कि बच्चे की परवरिश के लिए क्या ज़रूरी है और मुख़तलिफ़ मौक़ों पर उसके साथ किस तरह पेश आना है वरना बच्चा जल्दी ही ये जान जाएगा कि उसको अपनी बात मनवाने के लिए किसके पास जाना है।

**रोज़मर्रा ज़िन्दगी में बच्चे के लिए हृद कैसे बनाएं और उसके सोने, पढ़ने, खेलने और खाने पीने का टाइम टेबिल किस तरह सेट करें?**

## बच्चे के सोने के वक्त

बच्चे के सोने के बारे में होने वाले मसाएल जाने पहचाने हैं। आप शायद चाहती हैं कि बच्चा आठ बजे सो जाए लेकिन बच्चा कहता है कि उसे भूक लगी है, पेट में दर्द है, वह टीवी देखना चाहता है या वह डैडी के आने का इन्तेज़ार करना चाहता है या फिर वह ज़िद कर रहा है कि अभी उसे नींद नहीं आ रही है वगैरा वगैरा।

जब आप जानती हैं कि बच्चे को खाना खाए अभी ज़्यादा देर नहीं हुई है और बच्चा थका हुआ है तो आपको बड़े प्यार से मगर अटल लहजे में उस से कह देना चाहिए कि बिस्तर पर जाए और सो जाए। हो सकता है कि बच्चा रोए, शोर मचाए या आपसे बाहर हो जाए। यहाँ पर ज़रूरी है कि आप बच्चे को दो टूक बता दें कि ये आप हैं जो फैसले करती हैं और उसे अब सोना ही होगा। जब आप बच्चे को बिस्तर पर लिटा चुकी हों और बच्चा भी क़रार पा गया हो तो आप बच्चे के सोने तक वहाँ अच्छा माहौल पैदा करें, लाइट ऑफ़ कर दें, नर्मी से और धीरे-धीरे बोलें, बच्चे को कोई कहानी सुनाएं या लोरी दें, बच्चे को टेडीबियर



वगैरा दे दें ताकि वह उसे अपने साथ लिटाकर सो जाए। कोशिश करें कि बच्चे के साथ दिन का खात्मा एक अच्छे और खुशगवार तरीके से हो। आप जब कुछ हफ्ते ऐसा ही करेंगी तो फिर बच्चा ज्यादा मुश्किलें नहीं खड़ी करेगा बल्कि बिस्तर पर जाते वक़्त खुशी महसूस करेगा क्योंकि आप उसके लिए उस वक़्त को मज़ेदार बना देती हैं।

### खाना खाने की मुश्किलें

खाना खाना सोशल लिहाज़ से मिल बैठने का एक बहुत अच्छा तरीका है। ज्यादातर फैमिलीज़ में खाना खाते वक़्त ये मुश्किलें पैदा होती हैं कि बच्चे खाना खाना नहीं चाहते, वह कोई और डिश खाना चाहते हैं या सबके साथ नहीं खाना चाहते, उनको टीवी देखना है, वह बाहर जाना और खेलना चाहते हैं या कुछ और करना चाहते हैं।

### बच्चा खाना नहीं खाना चाहता

ये बहुत ज़रूरी है कि बच्चे की खाना खाने की चाहत का एहतेराम किया जाए। कभी-कभी बच्चों को ज्यादा खाने की ज़रूरत होती है क्योंकि वह बड़ा हो रहा होता है। बच्चा अपनी भूक की ख्वाहिश की कमी या ज्यादाती को खुद पूरा करता है। अगर आप उसमें दखल देंगी और उसे कम या ज्यादा करने की कोशिश करेंगी तो फ़्युचर में बच्चे के लिए उसका ख़राब रिज़ल्ट सामने आएगा। बच्चा बहुत मोटा या बहुत दुबला हो सकता है।

### बच्चा कोई और डिश खाना चाहता है

बच्चा किसी और तरह का खाना चाहता है या फिर वह शोर मचाता है, बदतमीज़ी करता है। यहाँ भी आपको बड़े दोस्ताना लेकिन अटल लहजे में बच्चे को बताना चाहिए कि उसे वही कुछ खाना है जो उसे दिया गया है। उस से किसी दूसरी डिश के बारे में न पूछें वरना आप ये ख़तरा मोल ले लेंगी कि बच्चा अगले दिन फिर बहानेबाज़ी करके आपसे अपनी बात मनवाने लगेगा और एक अच्छी गिज़ा खाने के बजाए ऊट-पटांग खाकर अपनी सेहत ख़राब कर लेगा।

### बच्चा उधम मचाता है

ये ज़रूरी है कि आप खाने से पहले, खाने के बीच और उसके बाद एक अच्छा माहौल पैदा करें। मिसाल के तौर पर आप पहले से ही बच्चे को बता सकती हैं कि वह मज़ेदार और अच्छा खाना खाने वाला है, बच्चे को दस्तरख़ान या मेज़ पर खाना लगाने में मदद करने दें। खाने के बीच बच्चा अगर छुरी कांटे का इस्तेमाल जानता है तो आप दखल न दें और उसे खुद अपने हाथों से खाना न खिलाएं। बच्चे को खाना खुद खाने की इजाज़त होनी चाहिए। अगर बच्चा बेआरामी पैदा करता और उधम मचाता है तो उस से पूछें कि क्या ख़राबी है और अगर ऐसी कोई बात नहीं है तो उससे कहें कि वह आराम से बैठे और उधम न मचाए।

बच्चे को जब खाना खाना हो तो उसे टीवी

नहीं देखना चाहिए और न ही उसे खेलने के लिए उस वक़्त बाहर जाना चाहिए, यह बहुत ज़रूरी है। इस तरह पूरी फैमिली एक साथ बैठकर खाना खा सकती है। बच्चे को बताया जाना चाहिए कि खाने में मम्मी ने कौन-कौन सी डिश तैयार की हैं। बच्चे को खाने के लिए उनका शुक्रिया अदा करना सिखाएं जिन्होंने खाना तैयार किया हो और अगर खुद बच्चे ने खाना बनाने या मेज़ पर लगाने में मदद की हो तो उस मदद के लिए उसका भी शुक्रिया अदा करें। इससे फैमिली को कांफ़िडेंस और खुशी मिलती है और एक दूसरे के लिए इज़्ज़त-एहतेराम भी ज़ाहिर होता है। पैरेन्ट्स की जिम्मेदारी है कि बच्चे की अच्छी परवरिश करें और उसे खाने पीने के ऐसे आदाब सिखाएं जिन्हें वह बाद में अपनी जिन्दगी में इस्तेमाल कर सकें।

### ज़बान सिखाना

बोलचाल में अच्छी ज़बान इस्तेमाल करें, मादरी ज़बान बोलते वक़्त बच्चे को वही एक ज़बान बोलने को कहें जो उस वक़्त आप खुद बोल रही हैं। ऐसा आप कई तरीकों से कर सकती हैं जैसे बच्चों की किसी छोटी किताब से कोई कहानी पढ़कर या फिर बच्चे के साथ खेलकर। याद रखिए कि बच्चा एक तरह से एक बड़ा कंटेनर है जिसे हर वक़्त भरने की ज़रूरत है, चाहे बच्चे ने अभी बोलना न शुरू किया हो। इस तरह जब बच्चा बोलना शुरू करता है तो वह बातचीत करने और अपनी बात को दूसरों के सामने रखने में बहुत कामयाब होता है।

### अपने बच्चे के लिए ऊँची आवाज़ में पढ़िए

जब बच्चे को आराम करना हो या आप बच्चे के साथ मिलकर लुप्त उठाना चाहती हों या फिर बच्चा सोने के लिए बिस्तर पर जाने वाला हो तो आप अपने बच्चे के लिए ऊँची आवाज़ में पढ़ सकती हैं। इस तरह से आप बच्चे को लफ़्ज़ों की पहचान कराती हैं जो फ़्युचर में उसके लिए बहुत फ़ायदेमन्द रहेगा। बच्चे की तरफ़ तवज्जो दें और उसे किताबों में दिलचस्पी लेने का शौक दिलाएं।

### अपने बच्चे से बातें कीजिए

जब आप अपने बच्चे को कुछ बताती हैं या

बच्चा खुद कुछ करना या बताना चाहता है तो याद रखें कि बच्चे को चीज़ों के नाम ज़रूर बताएं जैसे ये कहने के बजाए कि 'वह जग ले आओ' बेहतर है कि आप बच्चे से कहें कि 'वह रेड जग जो दरवाज़े के करीब पड़ी गोल मेज़ पर रखा है उठा लाओ' कहेंगी तो ज्यादा अच्छा होगा। जब आप बच्चे को कपड़े पहनाएं तो उसे बताएं कि आप उसे क्या पहना रही हैं। अपने बच्चे को हमेशा ये बताने के लिए तैयार रहें कि आगे क्या होने वाला है। जैसे आप बच्चे को बता सकती हैं कि अभी कुछ देर में आपकी कुछ सहेलियाँ आने वाली हैं और फिर आप कार में बैठ कर बाहर ख़रीदारी करने जाएंगी। अगर उसे किसी चीज़ की ज़रूरत है तो उससे पूछें या फिर बच्चे के साथ ये वादा कर लें कि आप उसे दस रुपये देंगी जिस से वह अपनी पसन्द की कोई चीज़ ख़रीद सकता है। अगर आपका बच्चा कोई ऐसी चीज़ ख़रीदना चाहता है जिसकी कीमत 15 रुपये है तो आप बच्चे को बता दीजिए कि इसके लिए उसके पास पैसे नहीं हैं। यूँ बच्चा सही तरह से पैसा ख़र्च करना भी सीख सकता है।

### गुप्तगू करना

गुप्तगू के बीच अपने जुमलों को बच्चे के हिसाब से सेट कीजिए। बच्चा खुद अपने आप में, फैमिली में और दूसरों में दिलचस्पी ले, इसके लिए उसके साथ बातचीत करना बहुत ज़रूरी है। यूँ आप बच्चे को बातचीत करना सिखा सकती हैं। जब बच्चा कुछ कहे तो उस से पूछें कि वह ऐसा क्यों कह रहा है या ऐसा क्यों सोच रहा है। अपने बच्चे को ये सोचने और बताने का मौका दें कि जब वह कुछ कहता है तो वैसा क्यों कहता है या जब वह कुछ करना चाहता है तो वैसा क्यों करता है जैसा कि वह कर रहा होता है। बच्चे को सिखाएं कि जब कोई दूसरा बोल रहा हो तो उसे सुनना चाहिए। बच्चे को सीखना चाहिए कि जब उसकी माँ, बाप या बहन भाई या कोई दूसरा बोल रहा हो तो उसे बीच में नहीं बोलना चाहिए और न ही उन्हें टोकना चाहिए। उसे दूसरों की राय का एहतेराम भी करना चाहिए। ●







# माँ ऐसी होती है।

दुनिया से बिल्कुल अन्जान होता है। माँ उसे बाहर की दुनिया को पहचनवाने में खास रोल अदा करती है। बच्चा अपनी ज़िन्दगी के बारे में अपने ज़ेहन में जो तस्वीरें बनाता है उनके बनने में माँ का एक खास रोल होता है। वह दुनिया, मज़हब, अपनी ज़िन्दगी और ज़िन्दगी के मकसद के बारे में सोचने का अन्दाज़ माँ ही से लेता है। हो सकता है कि जब वह बड़ा हो तो उसकी सोच बदल जाए लेकिन बचपन की ज़िन्दगी और इस ज़िन्दगी में वह जो कुछ सीखता है उसका उसके ज़ेहन पर गहरा और अनमिट असर छूट जाता है।

## बच्चे का आइडियल

बच्चे के लिए अपनी ज़िन्दगी में सबसे खास शख्सियत उसकी माँ की होती है जिसे वह सबसे ज्यादा चाहता है और जिसका वह सब से ज्यादा एहतेराम करता है क्योंकि उसका हर काम और हर आदत बच्चे के लिए आइडियल होती है। उसके रहन-सहन, मिलने-जुलने, बोल-चाल का अन्दाज़, घर के काम करने का तरीका, पैसा खर्च करने का सलीका बल्कि उसकी पूरी ज़िन्दगी पूरी तरह बच्चे की ज़िन्दगी और उसके कैरेक्टर पर असर डालती है। माँ सैकड़ों टीचरों से हज़ार गुना अच्छी होती है। उसकी नफ़िसवाती मजबूती और जज़्बाती कमजोरियाँ बच्चे के लिए आइडियल होती हैं, वह उन्हें अपना लेता है और सालों तक उसी तरह का रिएक्शन दिखाता है चाहे वह ग़लत ही क्यों न हों। बहुत से ऐसे लोग भी देखे गए हैं जो अपनी माँ का लाइफ-स्टाइल ये जानने के बावजूद भी अपना लेते हैं कि उनकी माँ ग़लती पर थी। ये रिएक्शन अन्जाने में होता है जिस से बचने के लिए काफी मेहनत की ज़रूरत है। इसलिए माँ की ये बहुत खास ज़िम्मेदारी है कि वह खुद को बच्चों के सामने मिसाल और आइडियल बनाकर पेश करे। हो सकता है कि ये मुश्किल बल्कि नामुमकिन दिखाई दे लेकिन ऐसा करना पड़ेगा। बहुत सी माँओं को ये बहुत बड़ा बोझ लगता है कि वह हर वक़्त अपने बच्चों को ध्यान में रखते हुए सही काम करें। लेकिन जो कुछ भी हो ये एक बहुत अच्छी और ज़रूरी ट्रेनिंग है। अपने बच्चों की वजह से माँ अपने अन्दर जो बदलाव लाएंगी वह उनकी आदत बन जाएगी जिसके नतीजे में उनके अन्दर आहिस्ता-आहिस्ता एक सच्ची तबदीली आएगी जो उन्हें कुछ दिनों के बाद बोझ नहीं लगेगी। माँ के रोल के बारे में इतना जोर देने का मकसद ये है कि इस्लाम ये चाहता है कि माँ अच्छे कैरेक्टर के ज़रिए अपने बच्चों के सामने आइडियल और रोल-माडल बनने की ज़िम्मेदारी को कुबूल करें। ●

## ■ ताहेरा कासिम अली

एक अच्छी माँ में बहुत सी अच्छाइयाँ और खूबियाँ होती हैं जो उसे दूसरों से बिल्कुल अलग बना देती हैं। यहाँ पर हम उन्हीं में से कुछ को पेश कर रहे हैं:-

### १-बच्चों से बेपनाह मुहब्बत

माँ की मुहब्बत बेमिसाल होती है। बच्चा चाहे नौजवान हो या जवान, सेहतमन्द हो या जिस्मानी एतेबार से उसमें कोई कमी हो, शरारती हो या बात मानने वाला, माँ उस से बहरहाल मुहब्बत करती है और वह अपनी इस मुहब्बत का इज़हार बहुत से अलग-अलग रास्तों से करती है।

कभी-कभी बच्चा माँ के डांटने या मारने को मुहब्बत के कम होने की निशानी समझता है। हालांकि बच्चे को ये बात पूरी तरह समझा देना चाहिए कि जिस वक़्त वह डिसिप्लिन के खिलाफ़ कोई काम करता है उस वक़्त भी वह अपनी माँ का चहेता होता है। ऐसा बच्चा हमेशा खुश रहता है और वह मुहब्बत और ज़ेहनी सुकून की तलाश में किसी दूसरी जगह नहीं जाता। माँ की मुहब्बत की वजह से उसे अपनी सारी खुशियाँ और सुकून घर पर ही मिल जाता है। माँ की वजह से ही अपने घर में बच्चे का दिल लगता है।

### २-ईसार और कुर्बानियाँ

माँ अपने बच्चों के लिए बहुत सी कुर्बानियाँ देती है। वह अपना वक़्त, अपनी नींद, खुशियों और बहुत सारी चीज़ों को सिर्फ़ इसलिए छोड़ देती है कि उसके बच्चों को कोई परेशानी न हो। जैसा कि इमाम सज्जाद<sup>३०</sup> फ़रमाते हैं, “माँ अपने

बच्चे के लिए जो कुछ भी करती है कोई दूसरा उसका एक हिस्सा भी नहीं कर सकता।” इसी वजह से इमाम फ़रमाते हैं कि सिर्फ़ खुदा की मदद के ज़रिए से ही माँ की कुर्बानियों और ज़हमतों का शुक्रिया अदा किया जा सकता है।

एक माँ अपने बच्चों की जिस्मानी और नफ़िसवाती, दोनों ज़रूरतों को पूरा करती है। खास तौर पर आज के मॉडर्न ज़माने में ये बात ज़ेहन में रखना चाहिए क्योंकि आज माँ समाज के बहकावे में आकर अपने कैरियर और जॉब को घर से ज्यादा अहमियत दे रही हैं। घर, हमेशा औरत की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी रहेगी जिसके लिए हर तरह की कुर्बानियों की ज़रूरत है। बल्कि सच्चाई तो ये है कि ये कुर्बानी नहीं बल्कि इन्वेस्टमेंट है जिसका मुनाफ़ा बाद में मिलेगा।

### ३-हिफ़ाज़त

माँ की पूरी कोशिश यही होती है कि अपने बच्चों को मुश्किलों और ख़तरों से बचाए। वैसे कुछ माँएं इस बारे में थोड़ा ज्यादा ही सेंसिटिव होती हैं। बच्चे के लिए ज़रूरी है कि वह अपनी उम्र और हालात के लिहाज़ से ज़िन्दगी में सख़्तियों और मुश्किलों का मुकाबला करना सीखे। जिस बच्चे को हमेशा मुश्किलों से बचाया जाता रहेगा बड़ा होकर ज़िन्दगी की सच्चाईयों का सामना नहीं कर पाएगा क्योंकि सारी दुनिया उसकी माँ की तरह उसका ख़याल नहीं रखेगी।

### माँ: बच्चे के लिए आईना

जब बच्चा पैदा होता है तो वह बाहर की



पैरेंट्स अक्सर शिकायत करते हैं कि हमारे बच्चे हमारी बात नहीं सुनते, हालांकि यही शिकायत बच्चों की भी पैरेंट्स से होती है। इसलिए बात सुनने में पैरेंट्स को पहल करना चाहिए। मशहूर साएक्रेट डॉक्टर गज़ाल मूसी ने अपनी किताब, “बच्चे आपकी बात क्यों नहीं सुनते” में मशहूर राएटर एडल फ़ेबर और एलन फ़रलिश की एक मशहूर किताब “How to talk, so kids will listen and listen, so kids will talk” का रिफ़्रेंस देते हुए लिखा है कि चाहे आपके बच्चे की बातें ग़लत ही क्यों न हों आप उनकी बातें सुनिए, बच्चे को अपनी बात कहने का मौक़ा ज़रूर दीजिए। इसके बाद अगर ज़रूरी हो तब ही उसकी बात की मुख़ालेफ़त कीजिए, वरना नहीं। बच्चों की बात को ग़ौर से सुनना बहुत ज़रूरी है, ख़ास कर जब वह अपनी फ़ीलिंग्स को ज़ाहिर कर रहे हों। जब हम बच्चे के निगेटिव

एहसास को कुबूल कर लेते हैं तो उसकी शिद्दत कम हो जाती है। कई बार बच्चे अपने निगेटिव एहसास का बार-बार इज़हार करते हैं। हमें हर बार हौसले से बच्चे की बात सुन लेना चाहिए। बात सुनने के बाद बच्चे को समझाइए कि किस वजह से उसकी बात सही नहीं है। बच्चा अपना एहसास ज़ाहिर कर रहा हो तो सर और गर्दन ऊपर नीचे हिलाती रहिए और “हूँ, हूँ” करके बात सुनिए। अगर उसकी बात सही हो तो “ठीक”, “सही” या “बिल्कुल सही” भी कहिए।

अगर आप एक बालटी में कूड़ा डालेंगी तो उसमें से कूड़ा ही निकलेगा और अगर आप उसमें फूल डालेंगी तो उसमें से फूल ही निकलेंगे। अगर आप चाहती हैं कि आपके बच्चे आपके साथ इन्तेहाई नर्म लेहजे में बात-चीत करें तो आप भी उनके साथ इन्तेहाई नर्म लेहजे में बात-चीत कीजिए। अगर आप चाहती हैं कि आपके बच्चे आप का साथ दें तो आप भी उनका साथ दीजिए। एक अच्छे घरेलू माहोल के लिए अपने बच्चों का आपस में या दूसरे बच्चों के साथ मुकाबला कभी मत कीजिए।

बच्चों की तारीफ़ का सब से बेहतरीन तरीक़ा

ये है कि जो नज़र आ रहा है या सुनाई दे रहा है उसे बयान कीजिए। आप अपने बच्चे को यह सिखाइए कि अपनी बात कैसे कही जाती है और तारीफ़ कैसे की जाती है जैसे अगर बच्चे की राइटिंग ख़राब भी है तो वह अल्फ़ाबेट्स या वर्ड्स ढूँढिए जो ख़ूबसूरत हों और उन पर उंगली रखकर कहिए कि ये अल्फ़ाबेट जैसे “A” या “B” या “P” या “X” कितना सीधा और ख़ूबसूरत है।

बच्चों की अच्छी तालीमो-तरबियत और उन्हें समाज का कामयाब मिम्बर बनने के लिए कुछ चीज़ों पर अमल दरआमद बहुत ज़रूरी है।

- बच्चे पर हर चीज़ और हर काम थोपने के बजाए उसे चुनाव का हक़ दीजिए। होम वर्क, नहाना-धोना या कोई भी दूसरा काम जो आपका बच्चा नहीं करता अचानक उस पर मत थोपिए बल्कि उसे कुछ टाइम दीजिए।
- बच्चों के ग़लत कामों को भी नज़रअन्दाज़ नहीं करना चाहिए जैसे खाने के बर्तन रखे छोड़ देना, कूड़ा-करकट जगह-जगह ढेर कर देना, गन्दगी फैलाना। बच्चे पर ज़ोर देकर एक दो बार उसी के हाथों यही काम

# बच्चों की

# बात सुनने में हमेशा पहल कीजिए





करवाइए तो बच्चा महसूस भी नहीं करेगा और उसमें सुधार भी आ जाएगा और बेहतर नतीजे भी सामने आएंगे।

- बच्चों में पाज़िटिव बदलाव आने के लिए कुछ हफ़्तों का इन्तेज़ार करना पड़ता है। इस बीच बच्चों का सेल्फ़-कॉन्फ़िडेंस मज़बूत हो जाता है और वह अपने आपको कमज़ोर नहीं समझते।
- माएं अक्सर गुस्से में या नार्मल हालत में भी बच्चों को 'बदतमीज़' या 'बदतमीज़ी न करो' कहती हैं। इसके बजाए उन्हें बच्चों को पूरी बात बताना चाहिए।
- अगर बच्चा लापरवाही से काम करता है तो उसका नाम "लापरवाह" मत रखिए बल्कि उसे अपने साथ लगाकर एहतियात से काम करना सिखाइए। पहले उसको कर के दिखाइए और फिर बताइए। जितना काम सही कर रहा है उसकी तारीफ़ कीजिए और ग़लतियों को नर्मि और सब्र के साथ सही करवाइए। जो थोड़ी सी मेहनत आज इस बच्चे की परवरिश पर लगेगी वह कल आप सब के काम आएगी।
- बच्चों के झगड़े तीन तरह के होते हैं जैसे 'नोक-झोंक'। ये बग़ैर किसी बड़े की मदद के अपने आप ठीक हो जाती है। अगर आपको लगता है कि पहली तरह का झगड़ा है तो कोई दख़लअन्दाज़ी मत कीजिए। अगर झगड़ा बढ़ता जा रहा है तो पैरेंट्स को दख़लअन्दाज़ी करके सब बच्चों की बात ग़ौर से सुनने के बाद झगड़ा ख़त्म करा देना चाहिए। शदीद किस्म के झगड़े पर 10-20 मिनट के लिए बच्चों को अलग-अलग कर दें। बच्चों को अपनी-अपनी जगह पर मसरूफ़ रखने के लिए कोई काम दे दीजिए या कोई काम पकड़ा दीजिए। इस बीच बच्चों की तरफ़ देखकर बार-बार मुस्कुराती भी रहिए।
- हफ़्ते में कम से कम एक बार उनके साथ कोई खेल ज़रूर खेला कीजिए।
- बच्चों की परवरिश में आमतौर पर माँ की ज़िम्मेदारी सबसे ज़्यादा होती है। इसलिए घर के बड़े लोगों को चाहिए कि माँ के एहतेराम और इज़्ज़त का ज़्यादा से ज़्यादा ख़याल रखें, बात-बात पर माँ पर क़िटिसाइज़ न करें। घर के सब बड़े हर अच्छे काम पर एक दूसरे की तारीफ़ करें और बच्चों के सामने तनकीद और झगड़ा न करें। इसी में सारे घर और समाज का फ़ायदा है।

एक अच्छा समाज बच्चों की अच्छी एज़ूकेशन और अच्छी परवरिश में छुपा होता है। ●

## बच्चों के खेल जिन्हें अब बच्चे भी नहीं जानते

खेलकूद हमेशा से बच्चों की तफ़रीह का सामान रहे हैं जिनके ज़रिए बच्चे खुद को मसरूफ़ रखने के साथ-साथ अपने शौक को भी पूरा करते हैं। हर ज़माने में बच्चों के खेल भी अलग-अलग रहे हैं। ज़माने के बदलने के साथ-साथ बच्चों के खेल भी बदल गए हैं। सदियों पुराने खेल जो नरल दर नरल बच्चों में मुन्तक़िल होते रहते थे आज के ज़माने में इन खेलों को हमारे बच्चे जानते तक नहीं। हम यहां आज से पचास-साठ साल पहले के आम बच्चों के खेलों के बारे में मालूमात फ़राहम कर रहे हैं।

हमारे बरसों पुराने कल्वर में वह खेल भी शामिल हैं जो पिछले ज़माने में बच्चे खेला करते थे। ये खेल बच्चों की परवरिश का हिस्सा भी होते थे। आठ से दस साल तक के बच्चों का सबसे पसन्दीदा खेल मिट्टी के खिलौनों से खेलना था। मिट्टी के खिलौनों में किचन का सारा सामान जैसे चूल्हा, हांडी, तवा और ग्लास सब चीज़ें शामिल होती थीं। बच्चे उन्हें घर के सहन या छत पर सजाते और झूठ मूठ का खाना पकाकर मेहमानों को पेश भी करते थे। इस तरह बच्चियों में खाने पकाने का शौक और मेहमान नवाज़ी का सलीका भी परवान चढ़ता था।

लकड़ी के बैट और बॉल से खेलना भी छोटे बच्चों का पसन्दीदा खेल था जिसे वह घर के अन्दर या गली दोनों जगह खेला करते थे। इस तरह बच्चों में बचपन से ही अच्छा क्रिकेटर बनने का जज़बा पैदा हो जाता था और इन गलियों-मुहल्लों में खेले जाने वाले क्रिकेट ने बड़े-बड़े खिलाड़ी भी पैदा किए थे। झूले और पैंगे चढ़ाना भी बच्चे बहुत पसन्द करते थे। पैंगे तो अक्सर घरों में ही बच्चों के शौक की ख़ातिर लगा दी जाती थी।

"कीड़ी काड़ा" एक दिलचस्प खेल था जिसमें बच्चे-बच्चियाँ एक दूसरे का मुकाबला करते थे। इस खेल में एक बड़ी और लम्बी जगह को आठ खानों में बांट दिया जाता था और एक ठीकरी को एक टॉंग पर छलांगे लगाते हुए इन खानों से गुज़ारा जाता था। ये खाने चॉक या कोएले से फ़र्श पर बनाए जाते थे।

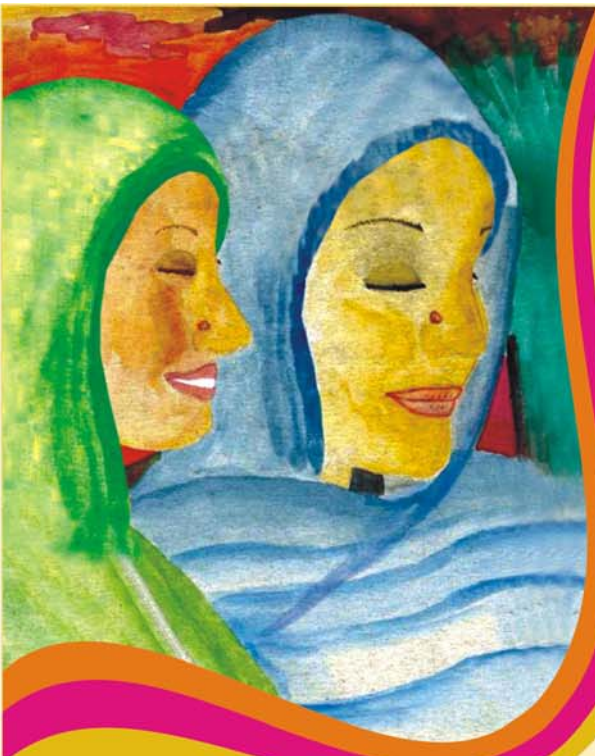
"छुपन-छुपाई" या "आइस-पाइस" भी बच्चों का बहुत पसन्दीदा खेल था। इसमें बच्चे बड़ी तादाद में खेलते थे। सारे बच्चे कहीं न कहीं छुप जाते थे और उनमें से एक बच्चा, जिसकी बारी होती वह गाते हुए बाकी बच्चों को तलाश करता था।

थोड़ी बड़ी उम्र को पहुँच कर लड़के और लड़कियों के खेल एक दूसरे से अलग हो जाते थे। गिल्ली-डंडा, कन्चे और लट्टू घुमाना बड़े लड़कों के और रस्सी कूदना, ककली और गिट्टियाँ खेलना बड़ी उम्र की बच्चियों के खेल होते थे।

बच्चियों को सबसे अच्छा खेल गुड़ियों से खेलना लगता था। ये गुड़ियाँ आज के ज़माने की गुड़ियों की तरह तो नहीं होती थीं लेकिन फिर भी उन्हें बड़े लाड-प्यार से रखा जाता था। ये गुड़ियाँ कपड़े या प्लास्टिक की बनी होती थीं। गुड़ियों के रंग बिरंगे कपड़े बच्चियाँ बड़े चाव से सिया करती थीं। गुड़ियों के साथ सबसे खूबसूरत तफ़रीह उनकी शादी के ज़रिए की जाती थी। गुड़ड़े-गुड़िया की शादी का एहतेमाम उस दौर में होने वाली हकीक़ी शादियों की तरह ही किया जाता था। शादी में मंगनी से लेकर वलीमे तक की सारी रसमें अदा की जाती थीं।

आज अगर हम नए खेलों और तफ़रीहों के साथ अपने बच्चों को अपनी पुरानी तहज़ीब और कल्वर भी बताते और सिखाते रहें तो हमारा बरसों पुराना कल्वर भी ज़िन्दा रह सकता है।





# पड़ोसी

■ सलमा नकवी

कुछ ही दिन पहले अपनी सर्विस के सिलसिले में मैंने शहर में किराए पर एक कमरा लेकर रहना शुरू किया था। नीचे मालिक मकान रहते थे जिनकी फैमिली में एक मियाँ-बीवी और दो बच्चे थे। लड़की की उम्र कोई पन्द्रह साल रही होगी और लड़का दस साल का होगा।

मियाँ दिन में काम पर चले जाते थे और बच्चे स्कूल। घर पर अकेली बचती थीं आमेना बेगम। घर के काम-काज खत्म भी नहीं होने पाते थे कि उनकी जिगरी दोस्त और सहेली जमीला आ धमकती थीं। दोनों में बातों का सिलसिला शुरू हो जाता जो शुरू भी पड़ोसियों की बुराई से होता था और खत्म भी।

उनकी बातें कुछ इस तरह की होती थीं: “पता है फुल्लों के बेटे ने आज अपनी बीवी को खूब पीटा, मुझे लगता है इस लड़की का कहीं कोई चक्कर ज़रूर चल रहा है वरना कोई अपनी औरत को बिला वजह थोड़ी पीटता है??!!” कभी कहतीं, “फुल्लों ने अपने बेटे

की शादी बहुत अरमानों से की थी मगर बहू उनको जूती की नोक पर रखती है, मियाँ को मुठ्ठी में कर रखा है।” कल ही की बात है बताने लगीं, “अकबर की बीवी तुम्हारे मुँह पर तो कितनी अपनाईयत की बातें करती है मगर कल मैंने अपने कानों से उसको तुम्हारी बुराई करते सुना है। कह रही थी कि तुम्हारे मियाँ शादी से पहले किसी और लड़की को चाहते थे, भला बताओ कोई ऐसी बातें खुलेआम करता है?” ये सुन कर आमेना बेगम भी गुस्से से लाल हो गयीं और अकबर साहब की बीवी की शादी से पहले की पता नहीं कौन-कौन सी बातें जमीला बेगम को सुना दीं। उनके बकौल अकबर साहब की बीवी के चार बच्चे होते हुए आज भी उनको इन पर शक था।

मैं अपने कमरे में बैठा सब कुछ सुन रहा था। आमेना बेगम ने बुर्का ओढ़ा और जमीला बेगम के साथ बाहर निकल गईं। फिर वापस आईं और डस्टबिन से कूड़ा-कचरा भी प्लास्टिक में भर कर साथ ले गयीं। घर से बाहर निकलते ही कचरा अपने पड़ोसी के घर के सामने डाल दिया और आगे बढ़ गयीं।

क़रीब दो घंटे बाद बच्चे भी घर आ गये। कुछ देर बाद आमेना बेगम भी थकी माँदी घर आ गईं और आते ही शुरू हो गयीं कि आज तो मैं अकबर साहब की बीवी को खूब सुनाकर आई हूँ। मैंने ज़रा भी लिहाज़ नहीं किया, मेरी गाली और कोसने तो एक हफ़्ते तक याद रहेंगे।

आमेना बेगम की बेटी नाहीद बहुत अच्छी और नेक लड़की थी। कभी किसी की बुराई नहीं करती थी और हमेशा कुछ न कुछ पढ़ती ही रहती थी। उसको मालुमात भी काफी थी और नमाज़ रोज़े की भी काफी पाबन्द थी।

लड़का ज़रग़ाम बिल्कुल उल्टा था, फिल्मों और खेलकूद का दीवाना। नमाज़ भी कभी-कभार ही पढ़ता था हालांकि अभी छोटा था मगर अपनी माँ के नक्शेक़दम पर ही नज़र आता था। नाहीद ने माँ से आज का माजरा सुनकर सर पर हाथ मारते हुए कहा, “मम्मा! आप भी हर वक़्त किसी न किसी से झगड़ा मोल ले लेती हैं, छोड़िये भी।”

“ऐ कैसी बेटी हो, कोई तुम्हारी माँ को बदनाम करता फिरे और तुम उसी की साइड ले रही हो।”

“मम्मा! मैं बस ये कह रही हूँ कि अकबर साहब की बीवी बड़ी नेक औरत हैं और सुनी सुनाई बातों पर आपको उनसे नहीं लड़ना चाहिए था। हमारे पड़ोसियों में मुझे तो सबसे अच्छी

वही लगती हैं। वैसे भी आपकी क़रीब सभी से लड़ाई रहती है, कभी पानी बहाने पर, कभी कूड़ा डालने पर, कभी रास्ते पर। सबसे मिलजुल कर रहना चाहिए।”

इस पर नाहीद को काफी फटकार पड़ी और आमेना बेगम का मुँह लटक गया मगर लड़की इताअत गुज़ार थी इसलिए माँ को फ़ौरन ही मना भी लिया।

इस वाकिए को अभी दो दिन भी नहीं गुज़रे थे। घर में कोई नहीं था। मैं भी ऑफ़िस में था। आमेना बेगम घर में अकेली थीं। तभी उनके सीने में बहुत तेज़ दर्द उठा और उनकी क़रीबी सहेली जमीला रोज़ की तरह आज भी आईं मगर आज आमेना बेगम की तबियत ख़राब थी इसलिए वो ज़्यादा लगाई बुझाई में उनका साथ नहीं दे पा रही थीं। इसलिए जमीला को मज़ा नहीं आ रहा था। वो उनको दर्द की हालत में छोड़कर ये कहकर चली गई कि मैं हॉंडी चूल्हे पर छोड़कर आई थी।

जमीला को गये कुछ ही मिनट हुए थे कि आमेना बेगम का दर्द बढ़ गया और बर्दाश्त से बाहर हो गया। तभी अकबर साहब की बीवी जिनसे दो दिन पहले आमेना बेगम की लड़ाई हुई थी घबराई हुई आ गयीं। आकर आमेना बेगम को सहारा दिया और बताया कि जमीला ने उनको बताया कि आपकी तबियत ख़राब है। इसीलिए मैं सब कुछ छोड़-छाड़कर आ गई मगर आमेना बेगम अपने हवासे में कब थीं। सीने का दर्द बहुत बढ़ गया था। अकबर साहब की बीवी ने (पता नहीं इनका नाम क्या था मोहल्ले में इसी नाम से मशहूर थीं) फ़ौरन अपने शौहर को फ़ोन किया। ये दोनों उनको हॉस्पिटल ले गये और बाद में पता चला कि आमेना बेगम को हार्ट अटैक हुआ था और डॉक्टर का कहना था कि अगर थोड़ी देर और हो जाती तो आमेना बेगम को बचाया नहीं जा सकता था।

आमेना बेगम के घर वाले अकबर साहब की बीवी के बहुत एहसानमन्द थे। अब तो खुद आमेना बेगम भी उनसे नज़रें नहीं मिला पा रही थीं।

आज उनको पड़ोसी की अहमियत मालूम हो गयी थी और वो अपने पिछले लड़ाई-झगड़े के लिए माफ़ी भी माँग चुकी थीं। ●



आम तौर पर ख्वातीन को ये शिकायत रहती है कि उनका बच्चा कुछ खाता नहीं, ज़बरदस्ती खिलाना पड़ता है, दिन बदिन कमज़ोर होता जा रहा है। समझ में नहीं आता कि क्या करें। पैरेंट्स ये समझते हैं कि वह बच्चे के हर अमल को जानते और समझते हैं हालांकि अक्सर ऐसा नहीं होता। बच्चा पैरेंट्स की सोच से बहुत पीछे होता है। पैरेंट्स को बच्चा बन कर उसके मामलों को समझने की कोशिश करना चाहिए।

अक्सर घरों में हर एक अपनी भूक, वक़्त और सहूलत के एतेबार से खाना खाता है, सब लोग इकट्ठे नहीं खाते। इस से बच्चे के अन्दर खाने का शौक पैदा नहीं हो पाता। इसके अलावा अगर डाइनिंग टेबिल या दस्तरख़ान पर इकट्ठा

भरपूर स्नैक्स खिलाएँ जैसे सैंडविच। बच्चों के पसन्दीदा स्नैक्स बेशुमार होते हैं जिसमें चिकन, मछली या गोश्त इस्तेमाल हो सकता है जिस से बच्चे को प्रोटीन और ताकत हासिल होती है। इसके अलावा दूध और दूध से बनी हुई चीज़ें भी फ़ाएदेमन्द साबित होती हैं क्योंकि दूध में कैल्शियम होता है जो न सिर्फ़ दाँतों और हड्डियों को मज़बूत करता है बल्कि यून भी सेहत के लिए बेहद ज़रूरी है। इसलिए ऐसे खानों और डिशेज़ को भी बच्चों की ख़ुराक का हिस्सा बना लें जिनमें आइरन भी शामिल हो जैसे हरी सब्ज़ियाँ, फ़लियाँ और सलाद वगैरा। विटामिन्ज़ भी बच्चों की सेहत के लिए बेहद ज़रूरी समझे जाते हैं। वैसे तो सारे ही विटामिन्ज़ सेहत के लिए फ़ाएदेमन्द हैं

चुका है इसलिए अब उसे और खाने की क्या ज़रूरत है? याद रखिए बच्चा सिर्फ़ भूका होने पर ही नहीं माँगता है बल्कि अगर वह खुद को अकेला महसूस करे या माँ की मुहब्बत हासिल करना चाहे तो किसी और तरीक़े से कामयाब न होने पर दूध माँगेगा क्योंकि वह जानता है कि इस वक़्त माँ उसको गोद में लेकर या पास लिटाकर दूध पिलायेगी। बच्चा वे वक़्त भूक सिर्फ़ उस वक़्त महसूस करेगा जब आपने ख़ुराक उसे काफी पहले दी हो और उसे वह सही तरीक़े से नहीं खा सका था या उस ख़ुराक में ज़रूरत भर ग़िज़ाइयत नहीं थी। इसके अलावा कोई मजेदार चीज़ देखकर या किसी मेहमान को देखकर भी उसमें भूक का एहसास पैदा हो सकता है। बच्चों के

## बच्चे खाना खाने से क्यों कतराते हैं?

खाना खाया जाए तो घर के सब लोग एक जगह जमा हो जाते हैं और माँ-बाप या बहन-भाई या दादी वगैरा बच्चे को प्यार से किसी न किसी तरह खाना खिला देते हैं।

आम तौर पर ऐसा होता है कि बच्चे खाना खाने से दूर भागते हैं या फिर बहुत कम खाते हैं। ऐसे में पैरेंट्स बच्चों को ज़बरदस्ती खाना खिलाने की कोशिश करते हैं जो बच्चों की सेहत के लिए बहुत नुक़सानदेह भी साबित हो सकता है। बच्चा ज़ेहनी तौर पर खाने के लिए तैयार नहीं होता, इसलिए उसका हाज़मा भी ठीक तरह से काम नहीं करता है। अब उसे जो ख़ुराक भी दी जाएगी उसका सेहत पर निगेटिव असर पड़ेगा।

अगर ऐसा आपके बच्चे के साथ होता है तो कोशिश करें कि बच्चों के लिए नित नई डिशें तैयार करें यानी वह एक या कुछ डिशेज़ से थक न जाए। खाना ऐसा हो जो मजेदार होने के साथ साथ ग़िज़ाइयत से भरपूर भी हो ताकि बच्चे को जिस मिक्कदार में ग़िज़ाइयत की ज़रूरत है वह उसे ज़रूर मिले। अगर बच्चा एक बार में ज़रूरत भर ग़िज़ा नहीं ले रहा है तो उसे हलके फुलके ग़िज़ाइयत से

मगर विटामिन सी ज्यादा ख़ास है। विटामिन सी संतरे में खूब होता है।

माँ को चाहिए कि वह खाने के बीच में बच्चे को कहानी या कोई और दिलचस्प बात सुनाती रहे जिससे बच्चा मजे ले लेकर खाए। छोटे बच्चों की ख़ुराक का शेड्यूल अक्सर माएँ बदलती नहीं हैं जैसे हफ़्ते भर बच्चे को दलिया खिलाती रहती हैं और बच्चा तंग आकर खाने से इनकार कर देता है। तब वह उसे ज़बरदस्ती खिलाती हैं बल्कि कुछ माएँ तो बच्चे का मुँह ज़बरदस्ती खोल के चम्मच उसके हलक़ में उंडेल देती हैं। बच्चा चीखता है मगर उन पर असर नहीं पड़ता। बच्चे के लिए रोज़ नहीं तो तीसरे दिन ख़ुराक ज़रूर बदल दीजिए।

माएँ बच्चे की ख़ुराक का वक़्त तय कर लेती हैं जो किसी हद तक सही भी है लेकिन बच्चा अगर बीच में बिस्कुट माँग ले या फ्रीडर पीना चाहे तो कोई हरज नहीं है क्योंकि बच्चे के जिस्म में जब गुलुकोज़ की कमी हो जाती है तो वह कुछ न कुछ माँगता है लेकिन माएँ इस बात को नहीं समझती। उनके ख़्याल में बच्चा पेट भर कर खा

साथ-साथ बड़े भी इससे अलग नहीं हैं।

जिन घरानों में माँ नौकरी करती है वहाँ अक्सर आया को बच्चे के लिए रख दिया जाता है। बच्चा माँ की मुहब्बत और प्यार भरा चेहरा अपने आस-पास नहीं देखता तो अकेलेपन का एहसास उसे घेर लेता है और बच्चे की भूक का स्विच आफ़ हो जाता है और वह खाना ही नहीं खाता या बहुत थोड़ा खाता है। आया उसे अपने लिए मुसीबत समझती है और झिड़क देती है जिस से बच्चा और बिगड़ जाता है और उसे खाने से नफ़रत हो जाती है।

बच्चों के कई नफ़िसयाती मसाएल जैसे ज़िद, चिड़चिड़ापन, फ़ालतू रोग, तोड़फोड़ करना वगैरा ख़ुराक की वजह से भी पैदा होते हैं। बच्चे की ख़ुराक अगर ग़िज़ाइयत से भरपूर नहीं है तो बच्चा बेचैन होकर रोएगा और चीज़ें इधर-उधर फेंकेगा। अगर बच्चा खाने के वक़्त फ़ालतू ज़िद करे तो बजाए डांटने के आप उसकी ज़िद की वजह मालूम करने की कोशिश कीजिए। हो सकता है कि वह आपके हाथ से खाना चाहता हो या डाइनिंग टेबिल के बजाए फर्श पर बैठकर खाना





चाहता हो या उसे कहीं दर्द हो मगर आपको बता न पा रहा हो या डाइनिंग टेबिल पर बैठे किसी शख्स से डर रहा हो या अजनबियत महसूस कर रहा हो।

बच्चों को खाना देते वक़्त कुछ बातों का ख़याल रखना बहुत ज़रूरी है। जब भी बच्चों को खाना दें तो वह बहुत ज़्यादा गर्म न हो। अगर खाने में सालन या शोरबा बहुत कम है तो इसका मतलब है कि बच्चे को ख़ूराक निगलने में मुश्किल होगी। इसलिए ऐसी डिशेज़ बनाने की कोशिश कीजिए जिनमें सालन का बैलेंस सही हो।

बच्चों की खाने पीने की आदत में बदलाव लाने में माँ का रोल सबसे ज़्यादा अहम होता है। कम खाना या बिल्कुल न खाना कोई बहुत ख़तरनाक बात नहीं है बल्कि एक्सपर्ट्स के मुताबिक़ ये बात इस चीज़ को बताती है कि बच्चा नारमल तरीक़े से बढ़ा हो रहा है और अपनी आज़ादी दिखाना चाहता है।

यह भी ज़रूरी नहीं है कि अगर बच्चा खाना नहीं खा रहा है तो आप सिर्फ़ उसे खिलाने की खातिर हमेशा बच्चे की पसन्दीदा डिशेज़ तैयार करें क्योंकि बचपन में जो आदतें पक़ी हो

जाएंगी वही आदतें बाद में भी बाक़ी रहेंगी जैसे अगर बच्चा सिर्फ़ मीठी चीज़ें खाना पसन्द करता है तो इसका मतलब यह नहीं है कि हमेशा मीठी चीज़ें बनाकर खिलाई जाएं। वैसे भी ज़्यादा मीठा खाना दाँतों के लिए नुक़सानदेह होता है।

अगर बच्चा सब्ज़ियों में सिर्फ़ मटर खाना पसन्द करता है तो इसके अलावा दूसरी सब्ज़ियाँ खिलाने की भी कोशिश कीजिए। अगर बच्चा खाना नहीं खाता है तो ज़बरदस्ती मत कीजिए और अगर खा लेता है तो उसकी तारीफ़ ज़रूर कीजिए। ऐसा करने से बच्चे में ये एहसास उजागर होगा कि मेरे पैरेंट्स खास कर माँ खुश होती है और न खाने पर नाराज़ होती है तो वह खुदबखुद खाने की तरफ़ बढ़ जाएगा। बस बच्चे के साथ ज़बरदस्ती कभी न कीजिए क्योंकि इससे बहुत नुक़सान होता है और बच्चा भी परेशान हो जाता है। साथ ही घर के सब लोगों को इकट्ठे बैठ कर खाना खाना चाहिए। खाना खाते वक़्त एक दूसरे पर चीख़ना-चिल्लाना या डांट-डपट करना भी बच्चे को खाने से नफ़रत दिलाता है। इसलिए इन बातों का ख़ास ख़याल रखना चाहिए। ●



एक दिन रसूलें इस्लाम<sup>™</sup> रोज़ की तरह अपने घर में बैठे हुये थे। आपके असहाब और चाहने वालों ने आपको इस तरह घेर रखा था जैसे अंगूठी के बीच में नगीना होता है।

इसी बीच एक बहुत ग़रीब मुसलमान भी इस नूतानी महफ़िल में आ पहुँचा और अपने लिये कोई ख़ाली जगह तलाश करने लगा क्योंकि इस्लाम में हर शख्स बराबर होता है और इस तरह की जगहों पर जहाँ ख़ाली जगह मिल जाये वही बैठ जाना चाहिए। यह बिल्कुल नहीं सोचना चाहिए कि यह जगह या वह जगह मेरी शानो-शौकत से मेल नहीं खाती है। बहरहाल उस ग़रीब मुसलमान ने चारों तरफ़ नज़र डाली तो उसे एक कोने में एक ख़ाली जगह दिखाई पड़ गई और वह ख़ामोशी के साथ वही बैठ गया। खुदा का करना यह हुआ कि उसके पास ही एक दौलतमन्द शख्स भी पहले से बैठा हुआ था। उस ग़रीब मुसलमान को अपने पास बैठा देखकर उस अमीर आदमी ने अपने कीमती कपड़े समेटे और एक तरफ़ हो गया।

रसूलें खुदा<sup>™</sup> बड़े ग़ौर से यह मन्ज़र देख रहे थे। दौलतमन्द अदमी का यह बर्ताव देखकर आपने उससे कहा, “वया तुम डर गये कि कहीं इसकी ग़रीबी का असर तुम पर न पड़ जाए?”

“नहीं, या रसूलल्लाह!”

“फिर तुम इस ग़रीब आदमी को अपने पास बैठते देखकर किनारे क्यों हो गये?”

“ऐ खुदा के रसूल! मुझ से ग़लती हो गई और मैं अपनी ग़लती मान रहा हूँ। अपने इस गुनाह का कफ़ारा भी अदा करने को तैयार हूँ। कफ़ारे के तौर पर अपनी जायदाद का आधा हिस्सा अपने इस ग़रीब मुसलमान भाई

# कहीं कपड़े न मैले हो जाएं

को देता हूँ।”

दौलतमन्द आदमी की बात सुनकर वह ग़रीब मुसलमान बीच ही में बोल पड़ा, “लेकिन मैं इस दौलत को लेने पर तैयार नहीं हूँ।”

सारे सहाबी एक साथ पूछने लगे, “आखिर क्यों?”

उसने जवाब दिया, “मुझे डर है कि कहीं इतनी दौलत देखकर मेरे अन्दर भी इतना गुरुर न पैदा हो जाए कि मैं भी अपने किसी ग़रीब मुसलमान भाई के साथ ऐसा ही बर्ताव करने लूँ जैसा अभी इस अमीर शख्स ने मेरे साथ किया है।





हमारे शरई मसाएल

## क्या वाकई तकलीद ज़रूरी है?



शायद कुछ लोगों के ज़ेहन में यह सवाल उठे कि क्या आज के इस मार्डन और साइंटिफिक ज़माने में भी तकलीद की ज़रूरत है जबकि रोज़ाना नई-नई चीज़ें सामने आ रही हैं और दुनिया इतनी तरक्की कर चुकी है।

क्या तकलीद, रिसर्च और तहकीक़ करने वालों के लिए रिसर्च के दरवाज़े बन्द नहीं करती?

क्या आंख बन्द करके दूसरों की बात को मानना कुरआन के खिलाफ़ नहीं है जबकि खुद कुरआन लोगों को पढ़ने, सोचने और रिसर्च करने के लिए कह रहा है?

इन सवालों के जवाब के लिए हम पहले तकलीद की किस्मों के बारे में बताएंगे।

**तकलीद चार तरह की हो सकती है:**

1- जाहिल, आलिम की तकलीद करे: जैसे अगर कोई किसी चीज़ को नहीं जानता है तो उसके जानने वाले के कहने पर चले जिस तरह बीमार अपने इलाज के लिए किसी माहिर डाक्टर के पास जाता है।

2- एक आलिम दूसरे आलिम की तकलीद करे: जैसे किसी चीज़ या फ़न के जानने वाले आपस में एक दूसरे के कहने पर अमल करें।

3- आलिम, जाहिल की तकलीद करे: जैसे कोई जानकार आदमी अपने पास जानकारी होते हुए भी अपनी आंख बन्द करके किसी जाहिल के पीछे चल पड़े।

4- एक जाहिल दूसरे जाहिल की तकलीद करे: जैसे एक न जानने वाला दूसरे न जानने वाले के कहने पर अमल करने लगे।

इन चार किस्मों से यह साबित हो जाता है कि सिर्फ़ पहली किस्म ही वह है जिसको अक्ल और लॉजिक सही मानती है। न सिर्फ़ यह कि आज के इस साइंटिफिक ज़माने में भी इसकी ज़रूरत है बल्कि इल्म को फैलाने में भी यह बहुत काम आएगी। बाकी तीन किस्मों को न अक्ल सही मानती है और न इस्लाम।

इसलिए हम जब भी “एहकाम में तकलीद” की बात करते हैं तो वहां हमारा मतलब यही होता है कि न जानने वाला किसी जानकार के कहने पर चले।

**मसअला-1:** उसूले दीन में कोई मुसलमान किसी की तकलीद नहीं कर सकता। उसूले दीन को खुद दलीलों के ज़रिए समझ कर उन पर यक़ीन पैदा करना चाहिए।

**मसअला-2:** शरई मसाएल यानी दीनी एहकाम में ज़ियादातर लोगों को

मुजतहिद की तकलीद करना चाहिए क्योंकि बहुत ही कम ऐसे लोग हैं जो शरई मसाएल में इजतिहाद कर सकें।

**तकलीफ़ और मुकल्लफ़**

इबादत के वाजिब होने के लिए दो चीज़ों का होना ज़रूरी है:

1- इन्सान, इस्लाम की नज़र में बालिग़ हो।

2- अक्ल रखता हो यानी पागल या दीवाना न हो।

जिसमें भी यह दो बातें पाई जाएं वह तकलीफ़ की हद तक पहुंच जाता है और उसको मुकल्लफ़ कहते हैं यानी उस पर वाजिब है कि खुदा के हुक्म और इस्लाम के क़ानून पर अमल करे।

**बालिग़ और उसकी पहचान**

बालिग़ उसको कहते हैं जो एक ख़ास उम्र तक पहुंच जाए। वैसे इन्सान सारी चीज़ों के लिए एक ही उम्र में बालिग़ नहीं होता है बल्कि हर काम के लिए अलग-अलग उम्र की ज़रूरत है। इसलिए इन्सान शरई मसाएल, सोशल मसाएल और पॉलिटिकल इशूज़ में एक ही उम्र में बालिग़ नहीं होता है। इसी तरह शादी और फाइनेन्शल जैसे इशूज़ में भी इन्सान अलग-अलग उम्रों में बालिग़ होता है। खुलासा, इन्सान हर काम के लिए एक ख़ास उम्र में बालिग़ होता है। इसलिए बालिग़ होने की कोई ख़ास उम्र नहीं कही जा सकती।

**मसअला-3:** शरई मसाएल में लड़कियों के बालिग़ होने की एक निशानी यह है कि चांद के महीनों से नौ साल पूरे हो जाएं और दसवां शुरू हो जाए।

**मसअला-4:** माहवारी के खून का आना भी बालिग़ होने की निशानी है।

**मसअला-5:** बदन के हिसाब से लम्बा-चौड़ा होने से लड़की बालिग़ नहीं होती है।

**मसअला-6:** लड़कियों की अक्ल, समझ और बदन लड़कों से तेज़ बढ़ते हैं। इसीलिए वह लड़कों से पहले बालिग़ होती हैं।

**मसअला-7:** अगर किसी लड़की को शक हो कि बालिग़ हुई कि नहीं तो उस पर वाजिब नहीं है कि इस बारे में तहकीक़ करे लेकिन अगर तहकीक़ कर सकती हो तो करे।

**मसअला-8:** नौ साल से पहले आने वाला खून माहवारी का खून नहीं होता। इसलिए नौ साल से पहले वाला खून बालिग़ होने की निशानी नहीं है, चाहे इस खून में माहवारी वाले खून की सारी क्वालिटीज़ क्यों न हों। ●



# बच्चों के अंगूठा चूसने से घबराईए मत

बच्चे की एक आम आदत अंगूठा चूसना है। आम तौर से बच्चे पैदा होने के तीन महीने बाद से अंगूठा चूसने लगते हैं और कुछ वक्त तक ये सिलसिला जारी रखते हैं। इस काम की फितरी और असली बुनियाद के बारे में कहा जा सकता है कि बच्चा अपनी उम्र के शुरूआती दिनों में दूध के ज़रिए अपना पेट भरता है और दूध चूस कर ही पीता है। उसे जब भी भूक लगती है और वक्त पर दूध नहीं मिल पाता है तो वह अंगूठा चूस कर ही अपनी भूक मिटाने की कोशिश करता है। इस बीच बार-बार ऐसा करने से उसे ये तजुर्बा होता है कि अंगूठा चूसने से भूक भी मिटती है और तकलीफ भी दूर होती है, साथ ही आराम भी मिलता है। बराबर अंगूठा चूसने से वह इसका आदी हो जाता है और जिसमें उसे मज़ा आने लगता है। इन दिनों में जब कि बच्चा अपने आस पास के लोगों को किसी हद तक पहचानने लगता है और वह बाहर की दुनिया को भी समझने लगता है, उसकी पूरी कोशिश ये होती है कि इस मजेदार काम यानी चूसने से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ाएदा उठाया जाए जिसके लिए उसके पास बेहतरीन और सबसे आसान चीज़ अंगूठा चूसना ही होता है। इसी वजह से वह अपना अंगूठा चूसता है और धीरे-धीरे इसका आदी हो जाता है और उसे जब भी मौक़ा मिलता है, हर तरह की परेशानी को दूर करने के लिए इस मजेदार काम में खुद को मशगूल कर लेता है।

बहुत से माँ-बाप अंगूठा चूसने को एक बुरी आदत समझते हैं। यहाँ यह बता देना ज़रूरी है



कि अगरचे दाँतों के कुछ डाक्टर इस आदत को नुकसानदेह समझते हैं और ये कहते हैं कि अंगूठा चूसने से दाँतों और मुँह की हालत बिगड़ जाती है लेकिन उनके मुक़ाबले में दाँतों के दूसरे बहुत से डाक्टरों और बच्चों के एक्सपर्ट्स बताते हैं कि अंगूठा चूसने से कोई मसला पेश नहीं आता।

एक एक्सपर्ट लिखते हैं, “बहुत से डाक्टर और बच्चों के माहेरीन के मुताबिक़ बुनियादी तौर पर अंगूठा चूसना कोई नुकसानदेह आदत नहीं है और आमतौर पर इस से बच्चे के मुँह में किसी तरह का कोई बदलाव नहीं आता। ये भी देखने में आया है कि दोबारा दाँत निकलने पर अगर पहले से कोई मुश्किल होती है तो वह ख़त्म हो जाती है। इसलिए इस से बच्चे को कोई नुकसान नहीं होता। हाँ, यह हो सकता है कि कभी ये आदत बच्चे की सेहत को नुकसान पहुँचा दे क्योंकि बच्चे की उंगलियाँ आमतौर पर गन्दी और मैली होती हैं और ऐसी उंगली चूसने से अकसर नुकसान का डर बना रहता है। ज़्यादातर माँ-बाप इस आदत को पसन्द नहीं करते और जब उनका बच्चा अंगूठा चूसता है तो उन्हें शर्म आती है।

बहरहाल ज़ाहिर तौर पर ये कोई ख़ास मसला नहीं है और बच्चा जब चार पाँच साल का हो जाता है तो माँ-बाप के ज़रिए या खुदबखुद ये आदत ख़त्म हो जाती है। हाँ, माँ-बाप को अगर ये आदत पसन्द नहीं है तो बेहतर है कि इसके शुरू होने से पहले ही इसको रोकने की कोशिश करें क्योंकि किसी आदत को पैदा होने से रोकना आदत को छुड़ाने के मुक़ाबले में आसान होता है।

जब देखें कि बच्चा अपनी उंगली चूसना चाहता है तो उसकी वजह जानने की कोशिश कीजिए। अगर उसका पेट नहीं भरा है तो उसे दूध पिलाइए। अगर उसे जल्दी भूक लग जाती हो



तो बीच बीच में उसे कोई सादा सी चीज़ जैसे बिस्कुट और फलों का रस दे सकती हैं। अगर इसकी वजह तनहाई का एहसास है या कोई और तकलीफ़ है तो उसकी तरफ़ ज़्यादा ध्यान देना चाहिए और उससे मुहब्बत का इज़हार करना चाहिए। अगर इन सब चीज़ों का ख़याल रख लिया जाए तो हो सकता है कि बच्चे में ऐसी आदत पैदा ही न हो लेकिन अगर आदत पैदा हो गई तो फिर उसका इलाज मुश्किल है। अगर उसे खेलने की मुनासिब चीज़ें दे दी जाएं या उसके साथ कोई खेलने वाला मिल जाए तो शायद धीरे-धीरे ये आदत छूट जाए। शायद इसका बेहतरीन इलाज उसे चुसनी दे देना हो। लेकिन इसमें ख़राबी ये है कि उसे चुसनी की आदत पड़ जाएगी। अगर ऐसे कामों के ज़रिए से इस आदत को रोक सकें तो क्या ही अच्छा, लेकिन अगर कामयाब न हों तो कहीं ऐसा न हो कि उस पर सख़्ती शुरू कर दी जाए जैसे उसके हाथ बाँध दिए जाएं, उसे मारा जाए, उसके साथ डाँट-डपट की जाए क्योंकि ऐसे काम जहाँ आमतौर पर बेफ़ाएदा होते हैं वहीं बच्चे की रूह और नफ़िसयात पर भी बुरा असर डालते हैं। अच्छा तो यही है कि सब्र कीजिए और किसी मुनासिब मौक़े का इन्तेज़ार कीजिए। ज़्यादा तर ये आदत चार या पाँच साल की उम्र में अपने आप ख़त्म हो जाती है। ●



# कुछ बहुत जरूरी बातें...

- 1- लड़के से पहले लड़की को गिफ्ट दीजिए।
- 2- बच्चे के साथ बच्चों की तरह धुल-मिल कर खेलिए।
- 3- बच्चों के रोने पर उनको न डांटिए, न मारिए।
- 4- अपने बच्चों को प्यार कीजिए क्योंकि हर प्यार के बदले खुदा आपके लिए जन्नत में एक घर तय कर देता है।
- 5- अपने बच्चे को सलाम कीजिए।
- 6- बच्चे के बचपने वाले कामों पर उसका मज़ाक मत उड़ाईए और उसके कामों को बेवकूफी मत बताईए।
- 7- ज्यादा रोक-टोक न कीजिए।
- 8- अपने बच्चे की शख्सियत को मानिए और उसको अहमियत दीजिए।
- 9- बच्चों से किए हुए वादे को पूरा कीजिए और कभी झूठा वादा मत कीजिए।
- 10- बच्चों को सिखाईए कि किसी के भी घर में यहां तक कि आपके कमरे में भी बगैर पूछे न आएंगे।
- 11- ध्यान रखिए कि बच्चों को नहलाते धुलाते वक़्त कोई दूसरा बच्चा उनको न देखे।
- 12- बच्चों की रान और सीने वगैरा से किसी को भी खेलने न दें।
- 13- बच्चों को अकेला मत छोड़िए और भाई-बहन को भी किसी अकेली जगह पर अकेला न रहने दीजिए।
- 14- 6 साल की बच्ची को नामेहरम अपनी गोद में न बिठाए और न प्यार करे।
- 15- लड़की का सीना और रानें खुली मत रखिए।
- 16- बच्चों को नमाज़ पढ़ना सिखाईए।
- 17- बच्चों की तौहीन मत कीजिए, सबके सामने डांटिए-मारिए मत और न उनके कामों को बेकार कहिए।
- 18- अपने बच्चों के लिए दुआ कीजिए।
- 19- बच्चों को प्यार से समझाईए और इस तरह रोक-टोक कीजिए कि उनको आप पर भरोसा रहे।
- 20- बच्चों का एहतेराम कीजिए, उनकी बातों को ग़ौर से सुनके नर्मी से जवाब दीजिए और उनकी राय को अहमियत दीजिए।
- 21- बच्चों में ईमान और दीनदारी पैदा कीजिए।
- 22- बच्चों की ख्वाहिशों का एहतेराम कीजिए।
- 23- बच्चों पर हुक्म मत चलाईए और न उनको ये एहसास होने दीजिए कि उनकी बात सुनी नहीं जाएगी।
- 24- बच्चों को सच बोलना सिखाईए और उनके सामने झूठ मत बोलिए और न उन्हें झूठ बोलने पर मजबूर कीजिए।
- 25- बच्चों को डरा धमका कर काम मत कराईए।
- 26- बच्चे को दुलार और प्यार कीजिए।
- 27- गुनाह की बुराई का एहसास और गुनाहगार से नफ़रत पैदा कराईए।



- 28- 6 साल की उम्र से ही बच्चों के बिस्तर अलग-अलग कर दीजिए, चाहे दोनों लड़के हों या दोनों लड़कियाँ।
- 29- जिस काम को बच्चे से करवाना चाहते हैं उसे खुद भी कीजिए और जिस काम को चाहते हैं कि आपका बच्चा न करे उसे खुद भी न कीजिए।
- 30- घर और बाहर के रवैय्ये अलग-अलग रखिए, बच्चे को घर में खेलने कूदने की आज़ादी दीजिए और बाहर उसे तमीज़ और अदब के साथ रहना सिखाइए।
- 31- आपके लिए बहुत ज़रूरी है कि बच्चे के ग़लत कामों को किसी हद तक नज़र अन्दाज़ करें। ग़लतियों पर उसको बहुत नमी से समझाएं, डांटने मारने से बचें, बच्चे को बुरा-भला कहना भी किसी तरह सही नहीं है।
- 32- बच्चे को समझाते वक़्त दूसरे बच्चों से उसका मुक़ाबला न करें।
- 33- कहानियाँ सुनाकर बच्चों में हक़ परस्ती, सच्चाई, ईमानदारी, गुनाह और बुराईयों से बचने का शौक पैदा कराइए।
- 34- बच्चों के एक्सपर्ट कहते हैं कि बचपन में बच्चे के शरीर होने का मतलब ये है कि वह बड़ा होकर ज़हीन होगा। इसलिए उसकी शरारतों पर उसे डांटते मत रहिए और हर वक़्त शैतान और शरीर कहकर उसे तकलीफ़ मत पहुँचाइए।
- 35- सात साल की उम्र में बच्चे से नमाज़ पढ़ने को कहिए और नौ साल से उसे रोज़ा रखवाइए, चाहे आधे दिन या उस से कम ही का हो। लेकिन इसमें भी इस तरह सख़्ती से बच्चे के साथ पेश मत आइए कि वह इबादत को अपने लिए मुसीबत समझने लगे।
- 36- अपने बच्चों को कुरआन पढ़ना ज़रूर सिखाइए।
- 37- बच्चों के सवालों के जवाब ज़रूर दीजिए, उन्हें झिड़किए मत।
- 38- मियाँ-बीवी बच्चों के सामने नोक-झोंक करने से बचें क्योंकि बच्चों के लिए माँ-बाप का आपस में लड़ना बहुत तकलीफ़देह होता है।
- 39- बच्चे मौत से डरते हैं ख़ास कर माँ-बाप की मौत से बहुत डर जाते हैं। इसलिए मौत के बारे में उनके सामने बातचीत मत कीजिए।
- 40- अपने बच्चों की सलाहियतों को परखिए और उसी हिसाब से उनकी मदद कीजिए। उनको वह बनाइए जो वह बनना चाहते हैं न कि जो आप बनाना चाहते हैं।
- 41- बच्चों की हर दुनियावी ख़ाहिश को पूरा मत किया कीजिए वरना वह हर चीज़ को अपने इख़्तियार में समझने लगेंगे लेकिन ये भी मत कीजिए कि उनकी किसी ख़्वाहिश पर तवज्जोह ही न दें।
- 42- बच्चा जितना बड़ा होता जाए उसे आज़ादी देती जाइए।
- 43- बच्चों से मुहब्बत ज़रूर कीजिए लेकिन ऐसी मुहब्बत मत कीजिए जिससे बच्चा ख़राब हो जाए।
- 44- बच्चे की परवरिश पर भरपूर तवज्जोह दीजिए क्योंकि आपका हर जुमला और हर अमल आपके बच्चे को बनाता या बिगाड़ता है। ●

## सिर्फ कहिए मत, करके भी दिखाइए!

बहुत से माँ-बाप ऐसे होते हैं जो बच्चों को सही रास्ता दिखाने के लिए सिर्फ़ ज़बान से काम लेते हैं। वह समझते हैं कि ज़बान ही एक ऐसा ज़रिया है जिस से बच्चे को समझा बुझाकर उससे अच्छे काम करवाए जा सकते हैं और बुरे कामों को करने से रोका जा सकता है। इसीलिए छोटे बच्चों को नासमझ कहकर छोड़ दिया जाता है और उनकी सही परवरिश की तरफ़ ध्यान नहीं जाता और जब बच्चा बड़ा हो जाता है तब माँ-बाप को उसकी परवरिश का ख़याल आता है, जबकि ये नज़रिया बिल्कुल ग़लत है। बच्चा अपनी पैदाइश के रोज़ ही से परवरिश के काबिल होता है। वह लम्हा-लम्हा परवरिश पाता है और माँ-बाप को पता हो या न हो, वह एक ख़ास मिज़ाज में ढलता चला जाता है। बच्चे का ज़ेहन पहले दिन ही से एक कैमरे की तरह सारी चीज़ों की फ़िल्म बनाने लगता है और उसी के मुताबिक़ वह परवरिश पाता है। पाँच-छः साल का बच्चा एक ख़ास फ़ार्म हासिल कर चुका होता है और जो कुछ उसे बनना होता है बन चुका होता है। अच्छाई या बुराई का आदी हो चुकता है। इसलिए बाद की परवरिश बहुत मुश्किल या फिर कम असर वाली होती है। बच्चा तो बस अपने माँ-बाप और इधर-उधर रहने वाले दूसरे लोगों के कामों, तौर-तरीकों, अन्दाज़ और कैरेक्टर को देखता है और उसी को अपनाने की कोशिश करता है। वह माँ-बाप को रेल मॉडल की नज़र से देखता है और उन्हीं की तरह ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीकों को अपने कामों की अच्छाई या बुराई का पैमाना बना लेता है और फिर उसी के मुताबिक़ अमल करता है। वह सिर्फ़ किरदार को देखता है, बातों और नसीहतों पर ध्यान नहीं देता। अगर माँ-बाप के कैरेक्टर और उनकी ज़बानी नसीहतों में फर्क हो तो वह कैरेक्टर को चुन लेता है। बेटी अपनी माँ को देखती है और उससे ज़िन्दगी का तरीका सीखती है, शौहर के साथ किस तरह पेश आना चाहिए, घरेलू रख-रखाव के क्या तरीके हैं, बच्चों की परवरिश किस तरह होती है, यह सब उसको अपनी माँ के ज़रिए ही सीखने को मिलता है और अपने बाप को देखकर वह मदों को पहचानती है।

बेटा अपने बाप को आइडियल समझता है और उसकी ज़िन्दगी से ही अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीका और बीवी बच्चों से सुलूक करना सीखता है और अपनी माँ को देखकर औरतों को पहचानता है और अपनी आइन्दा की ज़िन्दगी के लिए उसी को देखकर प्लानिंग करता है।

इसलिए पेरेंट्स के लिए ज़रूरी है कि सबसे पहले अपने अन्दर सुधार लाएं। अगर उनके तौर-तरीकों, आदतों, कैरेक्टर और अख़लाक़ में खराबी है तो उसको दूर करें। अच्छी बातें अपनाएं, नेक अख़लाक़ को चुनें और अपने कैरेक्टर को ऐसा बनाएं जैसा अपने बच्चों में पैदा करना चाहते हैं। खुलासा ये कि अपने आपको एक अच्छे और नेक इन्सान की सूरात में ढालें, इसके बाद अपनी औलाद की परवरिश की तरफ़ कदम बढ़ाएं। माँ-बाप को पहले सोचना चाहिए कि वह किस तरह का बच्चा समाज को देना चाहते हैं। अगर उन्हें ये पसन्द है कि उनका बच्चा खुशअख़लाक़, मेहरबान, दीनदार, शरीफ़, पढ़ा-लिखा, बहादुर, नेक और फ़र्ज़ शनास हो तो खुद उन्हें भी ऐसा ही होना चाहिए ताकि वह बच्चे के लिए आइडियल बन सकें। जिस माँ की ख़्वाहिश हो कि उसकी बेटी फ़र्ज़ शनास, खुशअख़लाक़, मेहरबान, समझदार, शौहर की वफ़ादार, तमीज़दार, हर तरह के हालात में गुज़र-बसर कर लेने वाली और बेहतरीन किरदार की मालिक हो तो उसे खुद अपनी बेटी के लिए आइडियल बनना होगा और उन अच्छाइयों को अपने अन्दर पैदा करना होगा। अगर माँ बंद-अख़लाक़, बेअदब, सुस्त, फूहड़, दूसरों से ज़्यादा उम्मीद बाँधने वाली और बहाने बाज़ हो तो वह सिर्फ़ नसीहतों से एक अच्छी बेटी परवान नहीं चढ़ा सकती।

■ मायगुल्लार इन्वारीय अमीनी



# क्या करें, बच्चा बहुत शरीर है

**सवाल-** मेरा बेटा चार साल का है। अक्सर वह मुझे और अपने पापा को सब के सामने मारने लगता है, क्या करें?

**जवाब-** इस उम्र के बच्चे का ऐसा रवैया कुछ वजहों से हो सकता है:-

(1) भूक: अगर बच्चे के खाने का वक्त निकल जाए और आप बातों में या किसी काम में लगी हों तो वह चिड़चिड़ा हो जाता है और इस तरह की हरकत करता है। इसलिए ख्याल रखें कि कैसी भी मसरूफियत हो बच्चे को खाना वक्त पर खिलाएं।

(2) थकन- अगर बच्चा दिन में बहुत खेलता है या स्कूल से आकर होमवर्क और ट्युशन के बाद बहुत थक जाता है तो भी इस तरह की हरकतें करने लगता है। लिहाजा ख्याल रखें कि वह ज़रूरत से ज्यादा न काम करे और न खेले।

(3) नींद आना- अगर आपके घर मेहमान आए हैं या आप किसी के घर या किसी फंक्शन में गई हुई हैं तो भी बच्चे को वक्त पर ही सुलाइए। ऐसा न करने से उसका रवैया खराब हो सकता है।

(4) बच्चे पर ध्यान न देना- अगर बच्चे को कुछ चाहिए तो उस पर ध्यान दीजिए। अगर उसकी डिमांड पर आपने ध्यान नहीं दिया और इस कान से सुन कर उस कान से निकाल दिया खासकर दूसरों की मौजूदगी में तो वह आप का ध्यान अपनी तरफ खींचने के लिए चीख-पुकार मचाएगा और हो

सकता है कि हाथ पैर भी चलाए। इसलिए अपनी बातों में उसकी बातों का जवाब भी देती रहें।

(5) बड़े और बुजुर्ग बच्चे को पकड़ कर भींच लेते हैं। ऐसा करने से बच्चे चिढ़ जाते हैं इसलिए खुद भी और सभी लोगों को भी इस काम से रोके क्योंकि ऐसा करने से बच्चा चिड़चिड़ा हो जाएगा।

**सवाल-** मैं अपने बच्चे की उसकी गलती पर पिटाई कर देती हूँ। कुछ लोगों का कहना है कि बच्चों को मारना नहीं चाहिए मगर बच्चा बगैर मार खाए मेरी बात मानता ही नहीं।

**जवाब-** हज़रत अली<sup>०</sup> ने फ़रमाया है कि अक़लमन्द यानी इन्सान को समझाया जाता है और जानवर मार के बगैर काबू में नहीं आता। मारपीट के बहुत बुरे साइड इफ़ेक्ट्स होते हैं जिनमें से एक को खुद आप लिख ही रही हैं। दूसरे कुछ नुकसानात नीचे बताए जा रहे हैं:

(1) इससे बच्चे की तौहीन होती है। जो बच्चा मार खाता है उसको दूसरों के सामने अपनी तौहीन महसूस होती है जिसके दो नुकसान होते हैं एक तो बच्चे का कान्फिडेंस ख़त्म होता है, दूसरे मारने वाले से उसके दिल में कुदूरत आती है।

(2) बच्चे में ज़ुरअत ख़त्म हो जाती है और दूसरे भी उस से जो चाहे मनवा सकते हैं। साथ ही आपका बच्चा किसी बात पर एतेराज़ की ताक़त भी गंवा देता है और दरहकीक़त काम्पलेक्स में

मुब्तला हो जाता है।

(3) मारने वाले के खिलाफ़ उसके दिल में मेल आ जाता है और वह खाना न खाकर, होमवर्क न करके, नमाज़ में कोताही करके और फिर तरह-तरह से आपकी मुख़ालेफ़त करके उसका बदला ले लेता है।

(4) कान्फिडेंस ख़त्म हो जाता है।

(5) उसके मिज़ाज में सख़्ती भी आ सकती है और आइन्दा वह भी अपने से कमज़ोर पर जुल्म करेगा और अपनी ताक़त के बल पर जिस से जो चाहेगा मनवाएगा। इसकी मिसाल आपको उसके छोटे भाई-बहनों के साथ बर्ताव में मिल जाएगी। वह उनके साथ भी वही सुलूक करेगा जो आप उसके साथ करती हैं। इसलिए मारपीट से बचिए मारपीट और टोका-टाकी आपके बच्चे को बिगाड़ ज़रूर सकती है मगर एक अच्छा इन्सान कभी नहीं बना सकती।

**सवाल-** मेरा बच्चा बहुत शैतान है, समझाने का उस पर असर ही नहीं होता, क्या करें?

**जवाब-** रसूले खुदा<sup>०</sup> ने फ़रमाया है कि बचपन की शैतानी और शरारत का मतलब ये है कि बड़ा होकर बच्चा ज़हीन होगा। दूसरी जगह फ़रमाया कि बचपन की शरारत बच्चों के लिए बहुत अच्छी है क्योंकि यही शरारत बड़े होकर उसके समझदार और अक़लमन्द होने की वजह बनती है।







डालें। नौजवानी के ज़माने में नींद गहरी होती है। अगर आप उसको आराम से उठाएंगी तो धीरे-धीरे उसकी आदत हो जाएगी। एक चीज़ और बहुत अहम है कि बच्चे को जगाने के लिए दूर से पुकार कर न उठाइये बल्कि उसके करीब जाकर मुहब्बत और मेहरबानी से उसको हिलाइए और उठाइए।

**सवाल- लड़के-लड़की एक दूसरे के साथ किस सिन तक पढ़ाई और खेल-कूद कर सकते हैं?**

**जवाब-** 6-7 की उम्र तक बच्चों के साथ रहने में कोई हर्ज नहीं है लेकिन इसके बाद ख़ास कर 12 से 18 साल की उम्र में लड़के-लड़कियों को आपस में घुलने मिलने न दें ख़ास कर किसी कमरे में या ऐसी जगह जहाँ आना जाना न हो अकेला न छोड़ें। सही है कि लड़का अभी बालिग नहीं हुआ है और लड़की की उम्र भी कम है मगर इस उम्र में बहकने के चांसों ज़्यादा होते हैं लेहाज़ा एहतियात बेहतर है।

(1) सब से अच्छा तरीका ये है कि खुद भी नामहरम से दूर रहें ताकि आपके बच्चे इस से सबक लें।

(2) किसी मुनासिब मौके पर नर्मी के साथ दीन के अहकाम के बारे में बच्चों को बताएं।

(3) मेहमानों के आने-जाने या रात में जब बड़े किसी मसले पर गुप्तगू कर रहे हों बच्चों से गाफ़िल न हो जाएं। कभी-कभी मेहमान आते हैं और उनके और आपके बच्चे एक साथ कहीं भी सो जाते हैं जो ख़तरनाक है। आपको इसका ध्यान रखना चाहिए कि ऐसा न हो बल्कि लड़के लड़कियाँ अलग-अलग सोएं।

(4) अगर सब साथ में हों तो उन पर ज़ाहिर किए बग़ैर उनका ध्यान रखिए।

**सवाल- मेरा १३ साल का लड़का मेरी कोई बात नहीं मानता, उसे किस तरह समझाया करूँ?**

**जवाब-** आपका बेटा बड़ा हो रहा है और अब खुद उसकी एक पर्सनालिटी है। इसलिए आपका बराबर रोकना-टोकना और समझाना उसको अपने बच्चे होने का एहसास दिलाता है। इसलिए वह अपनी बड़ाई साबित करने के लिए ऐसा करता है। आप उसको ज़्यादा न रोकें-टोकें इस से बच्चा ज़िद्दी हो जाएगा और न उसे

“

रसूले खुदा<sup>ﷺ</sup> ने फ़रमाया है कि बचपन की शैतानी और शरारत का मतलब ये है कि बड़ा होकर बच्चा ज़हीन होगा। एक दूसरी जगह फ़रमाया है कि बचपन की शरारत बच्चों के लिए बहुत अच्छी है क्योंकि यही शरारत बड़े होकर बच्चे के समझदार और अक़लमन्द होने की वजह बनती है।

”

बुराभला कहें क्योंकि ये भी नुक़सानदेह है बल्कि जो समझाना चाहती हैं उसे खुद भी करके दिखाइए और अगर रोकना या समझाना ज़रूरी हो तो कम से कम लफ़्ज़ों में कहें ताकि उसको अपने छोटे होने का एहसास न हो। सब से ख़ास बात ये है कि जब आप अपने बच्चे को समझा रही हों तो बहुत नर्मी से और तनहाई में समझाईए। सख़्त लहजे में और सबके सामने रोक-टोक से बचिए।

**सवाल- मेरी बच्ची अंधेरे से डरती है अपने कमरे में अकेले नहीं सो पाती?**

**जवाब-** एक्सपर्ट की राय ये है कि बच्चे 12 से 18 महीने की उम्र में पैरेन्ट्स से अलग अपने खुद के कमरे में रहें और अंधेरे में सोएं। ये पैरेन्ट्स की ज़िम्मेदारी

इसलिए बच्चे को ऐसे कामों के अलावा जिनमें नुक़सान पहुँचने का ख़तरा हो, हर काम के लिए आज़ाद छोड़ दें। आप के बच्चे के अन्दर एक छुपी हुई ताक़त है जिसका बाहर आना बहुत ज़रूरी है। अगर ये ताक़त और पावर बाहर न निकले तो आगे चलकर ख़तरनाक हो सकता है। बहुत सी शरारतें बच्चों की उम्र का तफ़ाज़ा होती हैं। अगर इसको ध्यान में रखें तो आपको बच्चों की शरारतों में मज़ा आने लगेगा। अगर दूसरों को तकलीफ़ न पहुँचे तो बच्चे को शोर मचाने दीजिए। अगर कोई ख़तरे की जगह न हो तो उसको दौड़ने भागने दीजिए कुछ ऊँचाई से कूदने दें, कुरसियों, मेज़ों, गद्दों पर लोटने-पोटने दें और हर वह चीज़ जो उसको सुकून पहुँचाती है उस से उसे न रोकें। ये आपके लिए भी और आपके बच्चे के लिए भी बहुत फ़ायदेमन्द है।

**सवाल-सुबह की नमाज़ के लिए बच्चों को जगाना मुश्किल होता है, क्या करूँ?**

**जवाब-** उनके सोने के सिस्टम को सही कीजिए। बच्चों को देर तक जागने न दें। इसके लिए ज़रूरी है कि दोपहर में भी कम सोएं। खाने पीने में ऐसी चीज़ों का इस्तेमाल कम करें जिनसे सुस्ती आती है जैसे मिठाई या वह चीज़ें जिनकी तबीअत ठंडी है।

सुबह बच्चों को जगाने के लिए एक दम से खड़ा न करें बल्कि जब खुद उठें तो उन्हें जगाएं और फिर वुजू वगैरा करें। उसके बाद फिर से उठाएं। अगर न उठें तो नमाज़ पढ़ लीजिए। नमाज़ के बाद फिर से उठाने की कोशिश करें। थोड़ी-थोड़ी देर पर जगाने से बच्चे आसानी से उठ जाते हैं। ये बात भी ज़रूरी है कि बच्चे के सर पर न बैठी रहें कि जब तक नमाज़ शुरू न कर दें वहाँ से न हटें और न ही उसके साथ सख़्ती से पेश आएँ कि उसे बे नमाज़ी और काफ़िर बना



है कि वह उसका इन्तेज़ाम करें। इस से उनके अन्दर डर नहीं पैदा होगा लेकिन हमारे यहाँ ज्वाइन्ट फैमिली होने की वजह से घर छोटा और लोग ज़्यादा होते हैं। जिसकी वजह से बच्चों को एक कमरा नहीं मिल पाता। जिस से उनके अन्दर कॉन्फिडेंस नहीं आ पाता है और दूसरी तरफ़ जिन्नात और भूतों के किस्से इतने ज़्यादा आम हैं कि बच्चों को अंधेरे में वही सब नज़र आता है जो दिन में सुनते हैं। अलहम्दुलिल्लाह आपकी बच्ची का कमरा अलग है तो ये आपके लिए आसान है कि उसका डर निकाल दें।

(1) बच्ची के कमरे को ख़ूबसूरत तस्वीरों, बेड, स्टडी टेबल वगैरा जैसी चीज़ों से सजा दें।

(2) बच्ची को टेडीबीयर या इस तरह का कोई खिलौना अपने साथ बिस्तर में ले जाने दें।

(3) जब बच्ची लेट जाए तो उसके सर और पेशानी पर हाथ फेरें और कहानी सुनाएं। कुछ बच्चों को पोयम पसन्द होती है। आपकी बच्ची जो भी पसन्द करे उसे सुनाएं।

(4) सोने का टाइम तय कर दें और बच्ची को दोपहर में कम से कम सोने दें ताकि रात में थक कर सो जाए। इस तरह आपकी बच्ची अगर कुछ दिन अपने कमरे में अकेली सो जाएगी तो अंधेरे से डरना बन्द कर देगी।

**सवाल- मेरी 3 साल की बच्ची है जो दूसरे बच्चों के खिलौनों को छीन लेती है, क्या करें?**

**जवाब-** 3 साल तक के बच्चे के लिए ये सब नेचरल है और 4

साल से कम के बच्चों में ऐसा आमतौर पर देखा जाता है, किसी में कम, किसी में ज़्यादा। इस उम्र के बच्चे समझते हैं कि दुनिया की सारी चीज़ों के बस वही मालिक हैं। इसलिए बिल्कुल परेशान न हों। आपकी बच्ची जिसके खिलौने छीनती है वह भी बच्चा ही है और नेचरली वह भी वही करेगा जो आपकी बच्ची करेगी। बस कोशिश यह कीजिए कि बच्चे का यह नेचर उसकी आदत न बन जाए।

यह आदत बढ़ती है तो इसकी यह वजहें हो सकती हैं:

(1) अपने बड़ों और हम उम्रों को देखकर: कभी-कभी घर के बड़ों (मम्मी-पापा, बहन-भाई) और अपने दूसरे साथियों को देखकर भी बच्चे ये सब सीखते हैं क्योंकि यह बड़े भी अपनी आम

ज़िन्दगी में कभी-कभी ऐसा ही करते हैं और उनका यह आपसी ग़लत बर्ताव बच्चों पर भी ग़लत असर डालता है। अगर आपके घर में भी ऐसा ही माहौल है तो इस माहौल को सुधारने की कोशिश कीजिए।

(2) उनके साथ उनके बड़े भी ऐसा ही करते हैं: कभी-कभी ऐसा भी होता है कि बच्चे के दोस्त या उसके बड़े भाई-बहन यहाँ तक कि मम्मी-पापा भी उससे इसी तरह ज़बरदस्ती चीज़ों को छीन लेते हैं और प्रैक्टिकली बच्चे को यह ग़लत बात सिखा

(ब) बच्चा हर चीज़ का मालिक नहीं है: अपनी बच्ची को यह सिखाने और बताने की कोशिश कीजिए कि वह अपने आसपास की हर चीज़ की मालिक नहीं है। उसके आसपास जो खिलौने और चीज़ें हैं उन सबका कोई न कोई मालिक है।

(स) ध्यान बटाना: यह तरीका एक ख़ास तरीका है जो दो साल से कम के बच्चों और किसी हद तक आपकी बच्ची के लिए भी कारगर हो सकता है। इसमें यह किया जाता है कि जो चीज़



रहे होते हैं। अगर ऐसा है तो इसको दूर कीजिए और इस माहौल को सही कीजिए।

(3) ज़रूरतें: अपने बच्चे के लिए जितना मुनासिब हो उस हद तक खिलौनों और उसकी ज़रूरत की चीज़ों का इन्तेज़ाम ज़रूर कीजिए।

### कुछ और मशवरे

(अ) ज़बरदस्ती करने से बचिए: अगर आपकी बच्ची दूसरे बच्चों से कोई चीज़ छीन रही है तो उस चीज़ को ज़बरदस्ती उससे वापस लेने की कोशिश बिल्कुल मत कीजिए क्योंकि इससे आपकी बच्ची और ज़्यादा परेशान हो जाएगी और उस चीज़ को नुक़सान भी पहुँच सकता है।

बच्चे से लेना है उसके लिए बच्चे का ध्यान बटा दिया जाता है। कोशिश कीजिए, ख़ासकर मेहमानों के बीच में बच्चे की पसन्दीदा चीज़ अपने साथ रखिए और जैसे ही आपकी बच्ची दूसरे के खिलौने छीनने की कोशिश करे फौरन उसकी पसन्दीदा चीज़ उसको दे दीजिए। बच्ची का ध्यान उस खिलौने से हट जाएगा। फिर चुपके से आप वह खिलौना उस बच्चे को वापस कर दीजिए। अगर ऐसा न हो तो फिर उसकी पसन्दीदा चीज़ उस बच्चे को दे दीजिए जिसका खिलौना वह छीन रही थी। यकीनी तौर पर आपकी बच्ची इस पर राज़ी नहीं होगी और उस खिलौने को वापस उस बच्चे को देकर अपना खिलौना उस से ले लेगी। ●





# महात्मा गाँधी

## और नेशनल यूनिटी

■ मुहम्मद असदुल्लाह

इन्सानी तारीख आज भी उन अजीम इन्सानों के कारनामों से जगमगा रही है जिन्होंने दूसरे इन्सानों की भलाई और तरक्की की खातिर अनथक खिदमतें की हैं और बेतहाशा कुर्बानियाँ दी हैं। ऐसी ही एक बड़ी शख्सियत मोहनदास करमचन्द गाँधी जी की है जिनकी खिदमतों, कुर्बानियों और कारनामों ने उन्हें बापू और महात्मा गाँधी जैसे नामों से मशहूर कर दिया था। आम आदमी के

जेहन में महात्मा गाँधी की तस्वीर एक ऐसे बे सरो-सामान दुरवेश की सी है जिसने अपने अहिंसा के नज़रिए की बुनियाद पर जंगे आज़ादी का बिगुल बजा दिया था और इस मुल्क में कदम जमा चुकी ब्रिटिश सरकार को हिन्दुस्तान छोड़ने पर मजबूर कर दिया था।

गाँधी जी की शख्सियत के इस इन्क्लाबी पहलु से हट कर अगर हम उनके खयालात और आइडियॉलोजी पर नज़र डालें तो उनके यहाँ हमें ज़िन्दगी के उसूल और एक मज़बूत स्कूल ऑफ़ थॉट नज़र आता है। महात्मा गाँधी एक काबिल लीडर, बेहतरीन इन्सान और बहुत बड़े थिंकर भी थे। वह फलसफ़ी तो नहीं थे लेकिन उन्होंने दुनिया के सामने ज़िन्दगी का एक ऐसा तरीका और मुश्किलों से टकराने के लिए ऐसा असरदार तरीका पेश किया जिसका असर और अन्जाम देखकर लोग हैरान रह गए।

**नॉन-वायलेंस**

गाँधी जी के नज़रियों में सबसे ख़ास 'अहिंसा' है जिसे उन्होंने ज़िन्दगी का एक क़ानून बना दिया था। हिंसा आज न सिर्फ़ नेशनल पैमाने पर बल्कि पूरी दुनिया की नज़र में एक भयानक मसला बन चुकी है। अलग-अलग क्लास, जातें, मुल्क और मज़हब के बीच मतभेदों ने पूरी दुनिया में हिंसा की लहर दौड़ा दी है और सारी दुनिया इस मसले का हल तलाश करने में लगी हुई है। गाँधी जी की तकरीरों को सुना जाए तो अन्दाज़ा होता है कि उन्होंने जात-पात, मज़हब, इलाके, रंग, नस्ल और अलग-अलग ज़बान बोलने वाले लोगों और समाजों के बीच एकता और दोस्ती पैदा करने की भरपूर कोशिश की थी। नेशनल युनिटी का नज़रिया उनकी फ़िक्क़ का वह बुनियादी पत्थर है जिस पर वह एक खुशहाल कौम की तामीर करना चाहते थे।

गाँधी जी के नेशनल युनिटी के नज़रिए की बुनियाद उस रिवायत पर खड़ी दिखती है जिसमें ये "पूरी कायनात खुदा का कुनबा है"। यही रिवायत हिन्दू मज़हब की किताबों में भी अलग-अलग लफ़्ज़ों के साथ आई है। गाँधी जी की इसी यूनीवर्सल सोच ने उन्हें रंग, नस्ल, जात-पात, बिरादरी और इलाकों से ऊपर उठकर सोचने पर मजबूर किया था। इसी इन्सानी दोस्ती का असर उनके खयालात पर पड़ा था। शायद इसीलिए उर्दू के मशहूर शायर मजाज़ लखनवी ने गाँधी जी के इन्तेक़ाल पर इन लफ़्ज़ों में ख़िराजे अकीदत पेश किया था:-

हिन्दू चला गया न, मुसलमाँ चला गया  
इन्साँ की जुस्तजू में एक इन्साँ चला गया।





नरजिस के लाल!

दुनिया आपके इन्तिज़ार में है